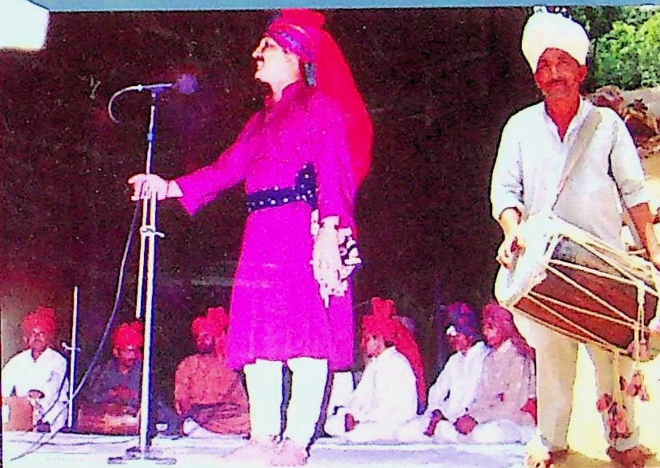
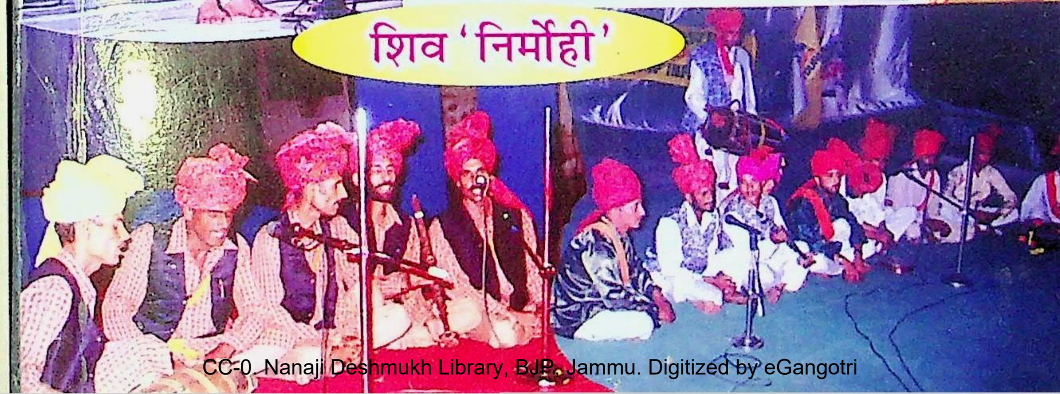


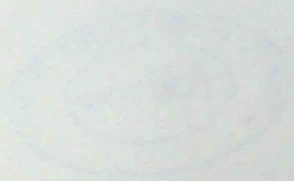

डुग्गर का लोक संगीत

शिव 'निर्मोही'



डुग्गर का लोक संगीत

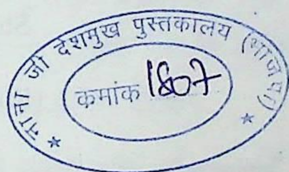




डुग्गर का लोक संगीत

लेखक

शिव 'निर्मोही'





हाइब्रो पब्लिकेशन्ज़

बाड़ी ब्राह्मणा, जम्मू

Duggar Ka Lok Sangeet

by

Shiv 'Nirmohi'

ISBN : 978-93-92612-68-8

Published by

Highbrow Publications

78/11, Near Pahlwan Food Mall

Bari Brahmana, Jammu

e-mail

highbrowpublications25@gmail.com

मिलने का पता

Shivalik Prakashan

Painthal

(Katra Vaishno Devi)

Books Printed

200 copies

Price

₹ 50

Publication Year

2022

Designed and Set by

Vinay Sharma

मेरा निवेदन

मेरा जन्म डुग्गर के एक पर्वतीय गाँव पैंथल (कटड़ा वैष्णो देवी) में हुआ। मैं बाल्यावस्था से ही अपने ही घर में अपनी दादी तथा परिवार की महिलाओं से प्रातःकाल से लेकर रात्रि तक लोकगीत गाते सुनता। वे बर्तन साफ करते समय, घर की सफाई करते समय, चर्खा कातते समय कोई न कोई लोक गीत गुनगुनाती रहती थीं। वे कभी-कभी ढोलकी की थाप पर भजन गाते हुए नाचती भी थीं। मैं भी उन का अनुसरण करता। मैं खेतों में जाता। वहाँ भी मैं गाँव के लोगों को खलियानों में काम करते समय किसी लोक धुन पर लोक गीत गाते सुनता तो मुझे अति सुख मिलता। ऐसे ही मैं चरागाहों में पशुचारकों से पशु चराते समय बांसुरी बजाते सुनता तो मुझे असीम आनन्द की प्राप्ति होती। हमारे घरों में जितने भी संस्कार सम्पन्न होते या जितने भी लोकोत्सव आयोजित होते उसमें गीत, संगीत और नृत्य का प्रदर्शन होता। मैं भी लोहड़ी पर्व पर हिरण नृत्य में भाग लेता तो मुझे अलौकिक आनन्द की प्राप्ति होती।

हमारे घरों में 'जोगी' आते। वे सारंगी बजाते और् लोकगाथाएँ सुनाते तो मैं उन से अपने प्रदेश के युद्धवीरों की गाथाएँ सुनकर रोमांचित हो उठता। इसी प्रकार जातर उत्सव पर मैं जोगियों को ढोल की थाप पर गाते और देवता के चेलों को जातर-नृत्य करते देखता तो मेरे भीतर भी तरंगें उभरतीं जो मुझे भी इन आयोजनों में भाग लेने के लिए उत्प्रेरित करतीं।

डुग्गर प्रदेश में डोगरी गोजरी, पहाड़ी, भद्रवाही, किश्तवाड़ी, सिराजी आदि भाषा और बोलियों का लोक संगीत बहुत ही समृद्ध रहा है। प्रत्येक उपभाषा या बोली के लोकसंगीत में कुछ विशिष्टताएँ भी हैं। मैंने अपनी

इस छोटी सी पुस्तक में उन सभी विशिष्टताओं से संगीत प्रेमियों को परिचित कराने का प्रयास मात्र किया है। मेरी इस पुस्तक में डुग्गर के लोक संगीत की केवल झलक मात्र है। मुझे आशा है कि देश के संगीतज्ञ तथा संगीत प्रेमी मेरे इस प्रयास को स्वीकार करते हुए मेरा मार्गदर्शन करेंगे।

–शिव निर्मोही



डुग्गर के
प्रसिद्ध लोकगायक
श्री गुलाम मुहम्मद 'डन्साली'
की स्मृति में समर्पित



विषय सूची

प्रथम अध्याय

लोक संगीत

लोक संगीत हृदय के उद्‌गारों का संगीतमय प्रस्फुटन है। लोक संगीत बच्चे के जन्म से आरम्भ होता है। बच्चे के रोने और हंसने से लोक संगीत का प्रादुर्भाव होता है। माँ की ममता से बच्चे की अभिव्यक्ति बदल जाती है। वह किलकारियाँ मारने लगता है। यह भी लोक संगीत का ही एक रूप है।

लोक संगीत लोक और संगीत इन दो शब्दों के संयोग से बना है। लोक का अर्थ है जनसाधारण और संगीत से तात्पर्य है-गायन, वादन और नृत्य का मिश्रित रूप। यह माना जा सकता है कि जो संगीत जन-साधारण द्वारा गाया जाता है वही लोक संगीत है। हम यह भी कह सकते हैं कि लोक संगीत खेतों, खलियानों, प्रकृति के आँचल में एवं भावुक मन की भावनाओं से पैदा होता है। इस संगीत को विकसित होने के लिए किसी व्याकरण अथवा प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती। लोक संगीत कृषकों का, श्रमिकों का तथा जनसाधारण का संगीत है। यह प्रकृति के खुले प्रागंण में अंगड़ाइयां लेता दिखाई देता है।

यह तो स्वयं प्रस्फुटित होने वाला संगीत है। वह सुरों की शुद्धता पर नहीं बल्कि भावों की शुद्धता पर बल देता है। भावों की शुद्धता कई बार सुरों की शुद्धता से भी अधिक प्रभावशाली प्रतीत होती है। वास्तव में लोक संगीत भावों का, आनन्द का प्रस्फुटन है।[1]

लोक संगीत मानवीय भावनाओं का सहजतम उद्‌गार है जिस का उद्देश्य है मानव के हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति एव लोक रंजन। जन मानस की सभी प्रकार की अभिव्यक्ति चाहे वह प्रसन्नता का अवसर हो अथवा विषाद का, कटु अनुभव अथवा जन आवेग हो, लोकगीतों के माध्यम से होती

है। यही लोकगीत, लोकवाद्य और लोक नृत्य के साथ मिलकर लोक संगीत को जन्म देते हैं।

लोक संगीत की परिभाषा

लोक संगीत को भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न शब्दों में पारिभाषिक करने का प्रयास तो किया है। किन्तु यह सर्वमान्य है कि लोक संगीत की उत्पति मान्व मन की अनुभूतियों को व्यक्त करने के उद्देश्य से हुई है।

फिर भी कुछ विद्वानों की परिभाषाएँ निम्न है :-

1. कुलगुरु टैगोर के अनुसार-'लोक संगीत' संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला है।
2. पंडित नेहरू के अनुसार-'लोक संगीत' से हमें उल्लास मिलता है, सांस्कृतिक वैभव देखने को मिलता है जो देश को एक सूत्र में बांधता है।
3. ओंकार नाथ ठाकुर के अनुसार-'लोक संगीत' के माध्यम से समस्त विश्व में आत्मीयता और एकता की स्थापना की जा सकती है।
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के अनुसार-हृदय की अनूभूतियाँ तरंगायित होकर जब प्रकृति के मध्य बहने लगती है तो लोक संगीत का जन्म होता है।
5. अरुण धर्माधिकारी के अनुसार लोक संगीत शास्त्रीय नियमों और बन्धनों से सर्वथा मुक्त है। लोक संगीत उस सुरसुरी के समान है जिस का लक्ष्य लोक कल्याण है।

लोक संगीत की विशेषताएँ

1. लोक संगीत एक मौखिक परम्परा है। इसे सीखने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं पड़ती। यह संगीत मानव मुख से स्वयं प्रस्फुटित होता है।

2. लोक संगीत लोक रंजन एवं जन साधारण की आन्तरिक भावनाओं का प्रतीक है।

3. लोक संगीत की भाषा सरस सरल और बोधगम्य होती है।

4. लोक संगीत सरल धुनों से आबद्ध होता है।

5. लोक संगीत मनोरंजन का एक ऐसा साधन है जिसमें किसी विशेष प्रान्त की भावनाएँ जुड़ी रहती हैं। यथा कश्मीरी लोक संगीत में कश्मीर क्षेत्र की भावनाएं डुग्गर के लोक संगीत में डुग्गर क्षेत्र की भावनाएँ और लद्दाखी लोक संगीत में लद्दाख क्षेत्र की भावनाएँ जुड़ी होती हैं।

6. लोक संगीत प्रान्तीय एकता का प्रतीक है।

7. लोक संगीत जनसाधारण का अपना संगीत है। इस पर किसी का भी आधिपत्य नहीं होता।

8. लोक संगीत सरल होता है उसे प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है।

9. लोक संगीत स्वच्छन्द संगीत है। यह प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है।

10. लोक संगीत का हमारे समाज और संस्कारों के साथ गहरा सम्बन्ध है।

11. लोक संगीत में भाव सौंदर्य के साथ-साथ काव्य सौंदर्य भी मिलता है।

12. स्वाभाविकता और सरलता लोक संगीत की प्रमुख विशेषता है।

13. भाषा लोक संगीत का एक प्रमुख अंग है। लोक भाषा लोक संगीत के लिए उपयुक्त है।

14. लय और ताल लोक संगीत के अनिवार्य अंग हैं।

15. लोक संगीत में कहरवा, दादरा, चांजर तथा रूपक इत्यादि कम मात्राओं तथा छोटी-छोटी तालों का ही अधिक प्रयोग किया जाता है।

16. लोक संगीत में भाव सौंदर्य के साथ-साथ काव्य सौंदर्य भी मिलता है।

17. लोक संगीत के प्रमुख तत्व स्वर, भाषा, लय तथा ताल हैं।

18. लोक संगीत मानवीय भावनाओं को प्रकट करने का एक माध्यम है।



सन्दर्भ :

1. *जम्मू प्रान्त का लोक संगीत-भारत भूषण*
2. *भारतीय लोक संगीत-लेख डॉ० शर्मिला टेलर*
3. *हरियाणा का लोक संगीत-रीता धनकर*
4. *हमारा साहित्य वर्ष 2008-09 में संकलित साक्षात्कार लोक संगीत विषय पर संगीत मर्मज्ञ पंडित वाचस्पति के साथ बातचीत-कपिल अनिरुद्ध*

द्वितीय अध्याय

लोक गायकी

माना जाता है कि गीत-संगीत का उद्‌भव दक्षिण भारत में हुआ। मध्य भारत में यह युवा हुआ। उत्तरी पहाड़ी क्षेत्र में पहुँचते-पहुँचते बूढ़ा भी हो गया। सम्भवत: यही कारण है पहाड़ी क्षेत्रों में यह गीत-संगीत अति मध्यम तथा ढिली चाल से चलता है। मध्य भारत में यथा पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशों में गीत-संगीत तेज, सुरीला, जोशीला तथा तीव्रगति से चलता है।

डुग्गर का अधिकांश क्षेत्र पहाड़ी है। डुग्गर लद्दाख, हिमाचल से लेकर अरुणाचल तक जितना भी पर्वतीय क्षेत्र है इस का गीत-संगीत लगभग परस्पर मिलता जुलता है। इस पूरे पहाड़ी क्षेत्र की लोक गायकी बड़ी सुरीली, लम्बी तान तथा सुर वाली है। यह शान्त तथा मध्यम सुर में चलती है। इस में बाँसुरी की तान की प्रधानता रहती है जो लोक गायकी में जादू जैसा प्रभाव पैदा कर देती है। इस लोक गायकी में ढोलकी, छैने, चिमटा, थाली, घड़ा, आदि मुख्य वाद्‌य यंत्र होते हैं।

जम्मू का मैदानी भाग जिस में कठुआ, हीरानगर, सांबा, रणवीर सिंह पुरा, सुचेतगढ़ आदि जो पंजाब के साथ जुड़ा हुआ है, लोक गायकी में पंजाब से प्रभावित लगता है। इस क्षेत्र का लोक संगीत जोशीला तथा अति तीव्र गति से चलता है। इन में सुर, लय, ताल, चलंत आदि भड़कीले होते हैं। इस लोक गायकी में तूंबी का अधिक प्रयोग होता है। इस के साथ-साथ ढोलकी, डोल, बाजे, छैने, चिमटा, घड़ा, सारंगी, किंग तथा इक तारा का भी प्रयोग होता है।

हीर-रांझा, सोहनी-महीबाल, सस्सी-पुन्नु आदि इस लोक गायकी के सर्वश्रेष्ठ नमूने हैं।

स्रोत

लोक गायकी का मूल स्रोत भाषा का विकास माना जाता है। भाषा के विकास के बाद मानव सभ्यता का विकास हुआ। भाषा और सभ्यता के विकास के साथ-साथ ग्रंथों की रचना हुई। इन्हीं ग्रंथों के ग्रंथकारों ने मनुष्य समाज को नये संस्कार दिए। इन संस्कारों को अलग-अलग नाम दिए गए। इन संस्कारों को सम्पन्न करते समय लोक-संगीत का प्रचलन हुआ। डुग्गर में मुख्य संस्कार, जन्म, विवाह और मृत्यु (अन्तिम संस्कार) थे। अतः इन्हीं संस्कारों से सम्बन्धित लोक गीत लिखें गए जिन्हें वधावा-घोड़ियाँ, सुहाग, सिटनियाँ आदि नाम दिया गया। मृत्यु संस्कार पर जो लोक गीत प्रचलित हुए उन्हें लोहानियाँ कहा गया। इन में शोक की भावना अधिक थी। प्रायः डुग्गर में राजा-महाराजा, दरबारी अधिकारियों, सेठों और शाहुकारों की मृत्यु पर लोहानियाँ गायन का प्रचलन बढ़ा। लुआनियों में गायक अलग सुर का प्रयोग करते हैं।

देवी-देवता भी हमारी श्रद्धा, भक्ति तथा पूजा का आधार रहें हैं। इन की स्तुति में जो गाया गया उसे भजन नाम दिया गया। किन्तु देवी की स्तुति में जो गीत गाये गए उन्हें 'भेंट' का नाम दिया गया।

देवी-देवता की आराधना ने कई पर्वों और त्योहारों को जन्म दिया। यथा रामनवमी, कृष्ण जन्माष्टमी, दुर्गा-अष्टमी आदि लोक समाज में इन त्योहारों को नृत्य और गायन से मनाने का प्रचलन आरम्भ हुआ। इस अवसर पर जो नृत्य के साथ-साथ गीत गाये जाने लगे उन्हें 'सद्द पाना' कहा जाने लगा। कई गीत सांस्कृतिक त्योहारों को सम्पन्न करते समय भी गाए जाने लगे जैसे लोहड़ी पर्व से सम्बन्धित लोक गीत, नवरात्रों से सम्बन्धित लोक गीत, ऋतु से सम्बन्धित लोक गीत आदि। सामाजिक शुभ अवसरों पर नृत्य गीतों का प्रचलन हुआ यथा गीतड़ू, कुड्ड आदि। इन में भी ढोल, ढोलकी, घड़ा, छैने, चिमटा, बंजली, बाँसुरी आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाने लगा। बारां माह भी लोक गायकी का एक रसीला अंग रहा। लोक गायकी की यह विधा भी अति रोचक, व्यंगयुक्त तथा मनभावनी है।

लोक गायकी के सूत्रधार

लोक गायकी के संरक्षण में निम्नलिखित पेशेवर गायकों का महत्त्व पूर्ण योगदान है :-

गारड़ी

माना जाता है कि गारड़ी 'गायक' का पर्याय वाची है। गारड़ी का काम घर-घर जाकर देव स्तुतियाँ तथा लोक देवताओं की प्रशस्तियां गा कर लोगों को सुनाना है। प्रायः गारड़ी अनुसूचित जाति से सम्बन्धित होते हैं।

सुरेन्द्रपाल गण्डलमाल का मत है कि गारड़ी शब्द सम्भव है गारड़ू से विकसित हुआ हो। गारड़ू का अर्थ है गारुड़ि मंत्र का ज्ञाता।

संत कबीर दास ने गारड़ू शब्द का प्रयोग झाड़-फूंक करने वाले व्यक्ति के रूप में किया है। कबीरदास ने गारड़ू को गुरु रूप में प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की है। सम्भव है कि कभी इन का पद गुरु के समान रहा हो।

डुग्गर के लोक समाज में 'गारड़ी' का विशेष काम 'जातर' महोत्सव में देवता की लोक गाथा का गायन करना होता है। वह शहीदों, कुलदेवियों की कारिकाएँ गाता है। वह ढोल की थाप पर 'दुआला' को नचाता भी है।

गारड़ी सफेद कमीज, पायजामा और साफा बांधता है गारड़ी प्रायः माँसाहारी होता है। उस के लिए सुरापान वर्जित नहीं है।

अनुसूचित जातियों में गारड़ी को बड़े मान और सम्मान के साथ देखा जाता है। लोक-समाज में इन की छवि एक लोक देवता के प्रतिनिधि के रूप में है।

गारड़ी का मुख्य व्यवसाय ढोल बजाना और गाना है।

जोगी

जोगी भी गारड़ी की भांति लोक गायक हैं। किन्तु इन्हें 'गारड़ी' से ऊंचा

स्थान प्राप्त है। गारड़ी अनूसूचित जाति से सम्बन्धित होता है किन्तु जोगी का समाजिक स्तर ऊँचा होता है।

डुग्गर में 'जोगी' हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी हैं। इन का काम घर-घर जाकर देवी-देवताओं, शहीदों और कुलदेवियों की गाथाएं सुनाना है। जोगी लोक-देवी-देवताओं के स्थानों में भी हाजरी भरते हैं। इन के पास एक लोक वाद्य यंत्र होता है जिसे 'सारंगी' कहते हैं। कहा जाता है कि इन का सम्बन्ध 'नाथ पंथ' से रहा है।

नाथ

इन का काम ढोल बजाना और देवताओं की स्तुति में कारिकाएं बोलना है। 'नाथ' प्राय: नाथ पंथ से सम्बन्धित रहे हैं और शिव मंदिरों के पुजारी भी हैं।

दरेस

'दरेस' माना जाता है कि दरवेश का अपभ्रंश रूप है। 'दरेस' जाति से मुसलमान हैं। इन का काम घर-घर जा कर लोगों को बारें (वीर रसात्मक लोक गाथाएँ) सुनाना होता है। ये राजाओं, महाराजाओं सेना नायकों की गाथाएँ अपने लोक वाद्य यंत्र 'किंग' या सारंग को बजाते हुए सुनाते हैं। ये उच्च कोटि के लोक गायक माने गए हैं।

सन् 1947 के बाद डुग्गर के अधिकांश दरेस पाकिस्तान चले गए हैं।

जंगम

इस जाति के लोग अपने को भगवान शिव का पुरोहित बताते हैं। इन के अनुसार मान तलाई में शिव-पार्वती का विवाह इन्होंनें ही सम्पन्न करवाया था।

शिव को अपना अराध्य मानने वाली इस जाति के पुरुष एक विशेष वेश-भूषा (धोती-कमीज पगड़ी और पगड़ी के ऊपर मोरपंख) में घर-घर घंटियों

को बजाते हुए शिव-विवाह से सम्बन्धित लोक गाथा सुनाते हैं। गृहस्थ इन्हें दान दक्षिणा देकर विदा करते हैं। इन के छोटे-छोटे दल होते हैं। शिवरात्रि महापर्व पर ये शिव गाथा लोगों को सुनाते हैं।

सोतरे

इन का एक नाम सुत्थड़ा भी है। ये सफेद वस्त्र पहनते हैं और सिर को एक विशेष टोपी या साफा से ढाँपते हैं। इनके हाथ में दो डंडे होते हैं। ये डंडा बजाते हुए अपने जजमानों को वंशावलियाँ सुनाते हैं। डंडे बजाते समय ये सुरताल का पूरा ध्यान रखते हैं।

गैन

इन का मुख्य केन्द्र डुग्गर का जिला रामवन है। गैन जाति का मुख्य व्यवसाय यजमानों के घरों में जा कर उन की पीढ़ियां गिनाना है। जो काम पहले चारण करते थे, डुग्गर में वही काम गैन करते हैं। ये युद्ध के लिए गमन करने वाली सेना को उत्साहित करने के लिए वीर रसात्मक गाथाएँ सुनाते थे।

भट कंजर

भट कंजर मुसलमान हैं। इक की वेटियाँ नाचने और गाने का काम करती हैं। वे अपनी कला से लोगों का मनोरंजन भी करती हैं। डुग्गर में इन की सब से बड़ी बस्ती अखनूर के निकट मीर-पुर सिद्धड़ में थी। मल्लिका-पुखराज इन की ही वेटी थी। सन 1947 में ये पाकिस्तान चले गए। अब इनके स्थान पर 'गुलेलनें' नाचने गाने का काम करती हैं।

रास धारिये

लोक गायकी परम्परा को आगे बढ़ाने में रासधारियों की भूमिका भी बहुत महत्त्वपूर्ण रही है। रसधारियों ने नृत्य और गायन परम्परा को एक साथ जीवित रखा। रास धारियों का मुख्य लक्ष्य गीत-संगीत एवं नृत्य से कृष्ण लीला का प्रस्तुतिकरण करके आजीविका कमाना भी था। वे कृष्ण लीला के अन्तर्गत

कृष्ण और गोपियों को आधार मान कर नाचते और गाते थे। इससे जन-समूह का मनोरंजन भी होता था।

रासधारियों की कई मंडलियां उतर-प्रदेश और पंजाब से भी इस क्षेत्र में आती थी। उन को देखकर डुग्गर के कई युवक रासधारिये बन गए। इन में मुख्य नाम हीरा नगर निवासी जगतराम का भी था। जगतराम ने डुग्गर के बाहर पंजाब और सिन्धु तक कई प्रदर्शन करके अपने प्रदेश का नाम रोशन किया।

जगरातिये

माता का जगराता करने वाले गायकों को जगरातिये नाम से भी अभिहित किया जाता है। डुग्गर प्रदेश आदि काल से ही शिव और शक्ति पूजा का केन्द्र रहा है। शक्ति पूजा के अन्तर्गत रात्रि के समय एक धार्मिक समारोह आयोजित किया जाता है जिसे जगराता नाम से जाना जाता है। जगराता में देवी-प्रतिमा अथवा मूर्ति के सन्मुख जगरातिये पूरी-पूरी-रात माता की भेटें गाते हैं। भेटों में माता की स्तुति की जाती है।

भेंट गायन भी एक कला है। इस में एक मुख्य गायक होता है और उसके सहयोगी गायन में उसे सहयोग देते हैं।

जगराता में ढोलकी, चिमटा, छैनें आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग भी किया जाता है।



तृतीय अध्याय

लोक वाद्य यंत्र

लोक संगीत में लोक वाद्यों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इन के बिना लोक संगीत अधूरा है। डुग्गर के प्रसिद्ध लोक वाद्य निम्न हैं :-

1. ढोल

डुग्गर का यह लोकप्रिय वाद्य है। इस के बिना डुग्गर में कोई भी उत्सव फीका लगता है। पहाड़ी क्षेत्र में ढोल को 'ढौस' भी कहा जाता है। लोक परम्परा के अनुसार ढोल के बाईस ताल होते हैं। अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग तालों का प्रयोग होता है।

2. ढोलकी

ढोलकी का आकार ढोल से छोटा होता है। ढोल प्राय: गले में ढाल कर ही बजाया जाता है। डुग्गर की महिलाएँ ढोलकी को धरती पर रख कर दोनों हाथों से बजाती हैं। एक महिला ढोलकी बजाती है तो दूसरी रोड़ा बजाती है। रोड़ा एक छोटा पत्थर होता है जो ढोलकी के बाहरी भाग में बजाया जाता है।

3. बांसुरी (बौंसरी)

यह जम्मू का लोकप्रिय वाद्य है। प्राय: पहाड़ों में चरवाहे इस का प्रयोग पशु चराते हुए भी करते हैं। इसे बांस से भी बनाया जा सकता है। कुड्ड नृत्य में बाँसुरी का प्रयोग अपरिहार्य है। पहाड़ों में बाँसुरी का आकार छोटा होता है। इस में जो छेद होते हैं उन्हें उंगलियों से खोला या बंद किया जाता है।

4. किंग

इस वाद्य यंत्र में एक ही तार होती है। अत: इसे 'इकतारा' कहा जाता है। इस का प्रयोग गारड़ी प्राय: कारिका गायन में करते हैं। इसे पवित्र माना जाता है।

5. सारंगी (सारंगा)

इस वाद्य में तार होते हैं। चार तार मुख कहलाते हैं शेष सात तारों को तरब कहा जाता है। इस का एक नाम सारंगा भी है। यह गज से बजाया जाता है। गज के एक ओर घुंघरु बन्धे होते हैं। इसे बजाते समय घुंघरुओं की ध्वनि भी प्रतिध्वनित होती है।

प्राय: देरस और जोगी बारां (वीर गाथा) गाते समय इस का प्रयोग करते हैं।

6. तुर्ही

यह शहनाई के समान होती है। इस को बजाने का तरीका भी शहनाई जैसा ही है। किन्तु इस में स्वरों का विस्तार सीमित होता है।

डुग्गर में इस का एक और नाम 'तुतड़ी' है। इस का प्रयोग शुभ अवसरों पर किया जाता है।

7. नरसिंहा

यह ताम्बा का बना होता है। कुड्ड नृत्य तथा देव स्थानों में इस का प्रयोग किया जाता है। इस का एक नाम 'रणसिंहा' भी है। युद्ध प्रारम्भ करते समय इसे बजाने का प्रचलन प्राचीन काल से था।

8. नगाड़ा

डुग्गर में इस वाद्य यंत्र के कई नाम हैं, यथा नगाड़ा, नक्कारा तथा नगारा आदि। प्राचीन समय में इस वाद्य यंत्र का प्रयोग युद्ध के समय या राजा की उद्घोषणा के समय किया जाता था। डोगरी लोक नृत्यों और मंदिरों में पूजा के समय भी इस का प्रयोग किया जाता है।

9. कैंसियां

इस का आकार छोटे मंजीरे की भाँति होता है। कुड्ड नृत्य में इस का प्रयोग होता है। कीर्तन करते समय भी कैंसियां बजाने का प्रचलन रहा है।

10. डंडारस

दो डंडों को बजा कर नृत्य करते समय इन से ध्वनि पैदा की जाती है। डुग्गर में फुम्मनियाँ नाच में डंडारस का प्रयोग होता है।

11. घड़ा

डुग्गर में घड़ा बजाने की परम्परा बहुत ही प्राचीन है। मिट्टी के घड़े का मुँह बंद करके हाथ की उँगलियों से इसे बजाया जाता है।

12. थाली-घड़ा

घड़े पर थाली रखकर 'जातर' नृत्य में इसे बजाया जाता है। इस संगीत के प्रभाव से माना जाता है कि मनोरोगी को लाभ पहुँचाता है।

13. कैहल

विवाहादि शुभ संस्कारों को सम्पन्न करते समय कैहल वाद्य यंत्र का प्रयोग प्राय: 'नाई' जाति के लोग करते हैं। यह कांसे की धातु से निर्मित की जाती है। इस का प्रथम भाग पतला और दूसरा भाग खुला या मोटा होता है। नाई जब कैह्ल में फूंक भरता है तो उससे जो स्वर उभरते हैं वे दूर-दूर तक फैल जाते हैं। इस से पूरे गाँव को उत्सव की सूचना मिल जाती है।

14. नफीर

नफीर कैह्ल का ही एक रूप है। कैह्ल लम्बी होती है और नफीर छोटी होती है। इस का प्रयोग आनन्दोत्सव पर किया जाता है।

15. शंख

इस का प्रयोग मंदिरों-घरों में पूजा-अर्चना करते समय किया जाता है।

16. नगोजे

ये बांसुरी की ही भाँति होते हैं। इन की संख्या दो होती है। बाँसुरी को टेढ़ा करके बजाया जाता है जब कि नगोजों को मुँह में सीधे रख कर बजाया जाता है। नगोजों से 'सुर' एक साथ निकलता है।

17. डफला

डुग्गर के पहाड़ी क्षेत्र में आनन्दोत्सव पर डफले बजाने की परम्परा रही है। यह ताल देने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। डफला की एक ओर जानवर की खाल वैसे ही लगी होती है जैसे ढोल पर चढ़ी होती है। यह लकड़ी की छोटी-छोटी सोटियों से बजाया जाता है।

18. चिमटा

डोगरी के धार्मिक गीतों में चिमटा का प्रयोग भी किया जाता है। प्राय: भेंट गाते समय, लोक नाच नाचते समय चिमटा भी बजाया जाता है।

19. खड़ताल

भक्ति गीतों के गायन के समय खड़ताल भी बजाई जाती है।

20. डमरु

डमरु ढोल का ही लघु रूप है। इसे हाथ में पकड़ कर बजाया जाता है। इस के दोनों सिरों में जानवर की खाल चढ़ाई जाती है।

21. घंटियां

भक्ति गीत गाते समय घंटियां बजाने का प्रचलन भी डुग्गर में है।

22. छैने

नृत्य गीतों में छैने बजाने की परम्परा पाडर में हैं।

23. चंग

यह किश्तवाड़ी वाद्य यंत्र है। इस का प्रयोग भाट नाचते और गाते हुए करते हैं।

सन्दर्भ :-

1. जम्मू प्रान्त का लोक संगीत :-भारत भूषण
2. डुग्गर का लोक संगीत : सुरेन्द्र पाल गंडलगाल (डुग्गर दा सांस्कृतिक इतिहास)
3. डुग्गर प्रदेश दे लोक-वाद्य यंत्र :- ब्रहस्वरूप सच्चर

24. रबाव

यह भी किश्वताड़ी वाद्य यंत्र है। इस का प्रयोग 'भाट' जाति के लोग करते हैं।

25. सुरनाई

यह भी किश्तवाड़ी वाद्य यंत्र है। इसे सारंगी की भाँति बजाया जाता है।

तार युक्त वाद्य यंत्र

भारतीय संगीत में तार युक्त वाद्य यंत्रों को तीन भागों में विभाजित किया गया है और वे हैं :

1. तार वाले वाद्य यंत्र (Stringed Instruments)
2. फूक वाले यंत्र (Wind Instruments)
3. ताल वाले यंत्र (Parcussion Instruments)

तार वाले वाद्य यंत्र (Stringed Instruments)

ये वे यंत्र हैं जिन के ऊपर तारें लगी होती हैं। इन तारों को छेड़ कर संगीत पैदा किया जाता है। भारतीय संगीत की भाषा में इन्हें तत् तथा वितत् वाद्य-यंत्र कहा जाता है जब कि पाश्चात्य संगीत में इन्हें Stringed Instruments कहा जाता है। इन के अन्तर्गत सितार, सरोद, वीणा, गीटार मैंडोलिन आदि की परिगणना की जाती है।

फूक वाले वाद्य यंत्र (Wind Instruments)

फूक वाले वाद्य यंत्र वे हैं जिन्हें फूक मार कर सुर पैदा किया जाता है। भारतीय संगीत की भाषा में इन्हें 'सुषिर वाद्य यंत्र' और पाश्चात्य संगीत में 'Wind Instruments' कहा जाता है।

इन संगीत यंत्रों में बांसुरी, शहनाई कलार नट आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

ताल वाले वाद्य यंत्र

ये वे यंत्र हैं जिन्हें संगीत में ताल देने के लिए प्रयोग किया जाता है। भारतीय संगीत की भाषा में इन्हें अवनद्ध वाद्य यंत्र और पाश्चात्य संगीत में इन्हें Percussion Instruments कहा जाता है। इन वाद्य यंत्रों में तबला, मृदंग, पखावज इत्यादि हैं।

डुग्गर का लोक संगीत और वाद्य यंत्र

डुग्गर के लोक संगीत का प्रतिपाद्य विषय है : (1) वीर रस तथा भक्ति रस। डुग्गर में युद्ध वीरों की गाथाएं गाने और देवी-देवताओं की कारिकाएं गाने का प्रचलन रहा है। इस के अतिरिक्त श्रृंगार रस की छाप भी इस क्षेत्र के लोक संगीत में मिलती है। अत: इस प्रदेश में सभी प्रकार के वाद्य यंत्र मिलते हैं।

तार युक्त जो वाद्य यंत्र डुग्गर में मिलते हैं उन में निम्न प्रमुख हैं :

किंग

इस यंत्र के विषय में लोक श्रुति है कि इस का विकास भगवान् शिव के आदेश पर 'नाभा' नामक ऋषि ने भगवान विश्वकर्मा से करवाया।

जब भगवान् रामचन्द्र जी चौदह वर्ष का वनवास काटकर अयोध्या वापस आए तब उन के राजतिलक के शुभ अवसर पर इस वाद्य यंत्र का प्रयोग किया गया। इस वाद्य यंत्र का सबसे प्रथम प्रयोग नाभा ऋषि ने किया था, अत: उन का नाम भी इस यंत्र के साथ जुड़ गया।

किंग के आठ भाग होते हैं जिन के नाम लोक-परम्परा के अनुसार निम्न हैं :

(1) नाल (2) कद्दू (एक) (3) कद्दू-दो (4) कदीं (5) मीरुआ (6) मरोड़ी (7) सर (8) तार

इन की बनावट इस प्रकार है :

1. नाल : यह लकड़ी का बना एक गोल डंडा जैसा है जिसकी मोटाई

4 सेंटी मीटर तथा लम्बाई 70 से 80 से.मी. तक होती है। यह बीच में खोखला होता है।

2. कद्दू-एक : यह गोलाकार में होता है। देखने में कद्दू जैसा लगता है। सितार तथा वीणा में भी ये कद्दू जैसे गोलाकार होता है जिन्हें तुम्बे कहा जाता है।

3. कद्दू-दो : यह भी पहले कद्दू आकार जैसा होता है ये दोनों कद्दू नाल के दोनों हिस्सों से इस प्रकार जुड़े होते हैं कि नाल के दोनों कद्दुओं के खोखले हिस्से का सम्बन्ध परस्पर बना रहता है। ये तीनों भाग किंग के महत्त्वपूर्ण भाग हैं। ये इस वाद्य यंत्र को असली स्वरूप देते हैं। इन्हीं के कारण इस वाद्य यंत्र में कम्पन पैदा होता है जिसे संगीत की भाषा में मोड तथा वैज्ञानिक भाषा में 'Violration of Sound' कहा जाता है।

4. करी : यह लकड़ी का एक छोटा-सा टुकड़ा होता है जिसे नाल के ऊपर करी की ओर जोड़ा जाता है। इस का एक भाग कद्दू की ओर होता है।

5. मीरुआ : यह लकड़ी का एक गोल टुकड़ा होता है जिसे नाल के ऊपर करी की ओर जोड़ा जाता है तथा इस के ऊपर से तार गुजारी जाती है। भारतीय संगीत में इसे 'ज्वारी' कहा जाता है। यह एक ऐसा हिस्सा है जो वाद्य के तार को स्थिर रखता है। इसी के कारण वाद्य यंत्र से सही आवाज़ निकलती है।

6. मरोड़ी : यह लकड़ी की बनी एक चाबी जैसी होती है जिसे नाल के ऊपर सुराख करके इस ढंग से जोड़ा जाता है कि आवश्यकतानुसार इसे इधर-उप्पर घुमाया जा सके। भारतीय संगीत में इसे 'खूंटी' कहते हैं।

इन छह भागों में दोनों कद्दू नाल के एक भाग से जुड़े होते हैं। इसे नाल का निचला भाग माना जाता है। इस के ऊपरी भाग को करी, मीरुआ तथा मरोड़ी से इस प्रकार जोड़ा जाता है कि तीन भाग एक ही पंक्ति में दिखाई देने लगते हैं तथा मीरुआ घुमाने में कोई कठिनाई नहीं होती।

8. सर : यह नर्म लोहे की एक पतली तार होती है जिसे दोनों सिरों को 'मरोड़ी' तथा 'करी' के साथ बांध दिया जाता है। इस से तार सही ढंग से जुड़ जाती है। इसे छूने से मधुर सुर सुनाई देते हैं।

इस यंत्र को बजाते समय कलाकार इसे दोनों हाथों से पकड़ कर कद्‌दू वाले भाग के नीचे रखता है। इस के पश्चात् अपने दायें हाथ की उंगली से तार को हिलाता है तथा बायें हाथ की चार उंगलियों से 'तार' की 'सरै' को क्रम से दबाता है जिस से अलग-अलग सुरों की आवाज़ निकलती है। इन सुरों की चाल पर गायक भक्ति रस से संजोये गीत गाता है। इस वाद्‌य यंत्र की विशेषता यह है कि इस के सुरों की चाल तथा गीत के सुरों की चाल परस्पर मेल खाती है जिससे लोकगीत को एक नया ही रंग मिलता है। इस से चारों ओर भक्ति रस फैल जाता है। यह वाद्‌य डुग्गर के भक्ति रस के लोक गीतों के लिए बहुत ही उपयुक्त माना जाता है।

सारंगा

डुग्गर में इस वाद्‌य यंत्र का एक नाम 'नीरी' भी है। यह वाद्‌य यंत्र सारंगी प्रकार का ही होता है। जनश्रुति है कि 'सारंगी' का अविष्कार 'रावण' के शासन काल में हुआ। सारंगी वीर रस से भरे गीतों के लिए ही बजाई जाती थी। सारंगा का आकार सारंगी जैसा ही होता है अन्तर केवल सुरों के विस्तार में है। सारंगी के सुरों का पर्याप्त विस्तार किया जा सकता है किन्तु सारंगा का विस्तार सीमित होता है। ध्वनि दोनों की एक जैसी है। सारंगा की आवाज़ इतनी मीठी होती है कि यह हृदय पर प्रभाव छोड़ देती है। डुग्गर में केवल मात्र यही एक ऐसा यंत्र है जिस से कंपन पैदा किया जा सकता है। इस यंत्र के हिस्से इस प्रकार हैं :

(1) लकड़ी का फ्रेम (2) मैदान (3) पेच (4) मरोड़ी (5) मरोड़ी (6) मरोड़ी 7-13 छोटी मरोड़िया 14-16 मोटी तारें (17) मीरुआ (18) पतली तारें (19) कमान की भांति पतली छड़ी (20) घुंघरू (21) घोड़े के बाल।

1. लकड़ी का फ्रेम : इसे लकड़ी को काट कर बड़े सुन्दर ढंग से तैयार

किया जाता है। इस का नीचे का भाग गोलाई में होता है। इस का ऊपरी भाग आधा गोलाई में होता है। जो नीचे का भाग होता है। वह खाली होता है।

2. मैदान (Ground) खोखले हिस्से के ऊपर मृत पशु की खाल मढ़ी जाती है।

3. पेच : छोटे-छोटे दस पेच फ्रेम के निचले भाग में लगे होते हैं। इन के साथ तारें बांधी जाती हैं।

4-6. मरोड़ियें : तीन चाबी की भाँति लक़ड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े फ्रेम के ऊपर लगाये जाते हैं। इन को इधर-उधर घुमाया जा सकता है। इन को खूंटियां (Binding Skews) भी कहा जा सकता है।

7-13. मरोड़ियां (छोटी) : सात चाबी की भाँति लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े फ्रेम के ऊपर काटकर मरोड़ी के निचले भाग में लगे होते हैं। इन को छोटी खुंटियों या 'Binding Screw' भी कहा जाता है।

14-16. मोटी तारें : तीन मोटी तारें जो पशुओं की अंतड़ियों को सुखा कर बनाई जाती हैं, एक सिरे से बड़ी मरोड़ियों (खूंटियों) से बाँध दी जाती हैं इन का दूसरा सिरा पेच के साथ बांधा जाता है।

17. मीरुआ : मैदान के ऊपर एक लकड़ी का टुकड़ा रखा जाता है जिस के ऊपर से सभी तारें गुजारी जाती हैं। इसे ज्वारी या Bridge भी कहते हैं।

18. पतली तारें : नर्म लोहे की बनी सात पतली तारें एक ओर से मरोड़ी (खूंटी) से बांधी जाती हैं तथा दूसरी ओर से पेच के साथ बांध दी जाती हैं। इन सात तारों के संगीत की भाषा में 'तरब' कहा जाता है।

बाद्य के पहले 18 भाग मिलकर इस वाद्य यंत्र का एक हिस्सा बनते हैं। इस के अतिरिक्त इस का एक और हिस्सा होता है जिसे गज कहा जाता है। इस के तीन भाग होतें हैं जो इस प्रकार हैं :

19. कमान की भाँति पतली छड़ी : यह लकड़ी की एक छोटी छड़ी

होती है। जिस का आकार कमान जैसा होता है। इस की लम्बाई लगभग 8 से.मी. होती है। यह गज़ का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

20. घुंघरु : कमान के एक ओर घुंघरु बांधे जाते हैं।

21. घोड़े के बाल : घोड़े के लम्बे बालों की एक रस्सी कमान के दोनों भागों में बांध दी जाती है।

इस वाद्य यंत्र को बनाते समय गायक गुलाई-वाला भाग नीचे रखता है तथा खूंटियों (मरोड़ी) वाला भाग ऊपर की ओर उठाता है। वह गज़ के अपने दायें हाथ में एक ओर जहाँ घुघरू लगे होते हैं पकड़ कर मोटी तारों के ऊपर घोड़े के बालों पर फेरता है। इस से वाद्य यंत्र से एक सुरीली आवाज़ निकलती है। कंचन पैदा करने के लिए गज के साथ-साथ बायें हाथ की उंगलियों को तार के ऊपरी भाग में फेरने से जो सुरीली अवाज़ निकलती है तथा घुंघरुओं के छन-छन बजने से यह आवाज़ उसी में मिल जाती है। इस प्रकार से जो सुर पैदा होता है उसे सुनने में बड़ा ही आनन्द आता है। यह वाद्य यंत्र डुग्गर में जोगी गायक 'बारां' गाते समय प्रयोग में लाते हैं। 'बारां' वीर रस के गीत हैं जिन में सांरगा प्रधान वाद्य यंत्र है।

चंग

इसे डुग्गर में 'छंग' भी कहा जाता है। इस वाद्य यंत्र का आकार बहुत ही छोटा होता है। इसे जेब में भी रखा जा सकता है। डुग्गर के पहाड़ी क्षेत्र में इस का प्रयोग होता है।

चंग छह सैंटी मीटर के आकार का एक चाबी की भांति लोहे के फ्रेम जैसा लगता है। इस के ऊपर लोहे की पतली पतरी लगी होती है। फ्रेम को दान्त से दबा कर पतरी को उंगलियों से छेड़ा जाता है जिस से स्वर पैदा होते हैं। इस वाद्य यंत्र का प्रयोग गीत गाते और नाचते समय किया जाता है।

संदर्भ : शीराज़ा डोगरी अंक 112 वर्ष दिसम्बर 1990 में प्रकाशित ब्रह्म सवरूप सच्चर का लेख-डुग्गर दे तारें आले वाद्य यंत्र।
अनुवाद : 'शिव निर्मोही'

वाद्य यंत्र

डफले

बिम्हाग क्षेत्र के अतिरिक्त पहाड़ी क्षेत्र में भी यह एक लोकप्रिय वाद्य यंत्र रहा है। विवाह शादियों में इसका प्राय: प्रयोग किया जाता था। इस में चार वाद्य यंत्र होते थे जिन का विवरण निम्न है :-

डफला = एक

डफला = दो

तासा = एक

डग्गा = एक

डफला एक और डफला दो की आकृति एक ही जैसी होती है। यह ढोल जैसा होता है। इस के एक सिरे में भैंस का चमड़ा जड़ा जाता है। दूसरे हिस्से को भी छोटी-छोटी चमड़े की टाकियाँ लगाई जाती है। इन्हें रस्सियों से भी बांधा जाता है। इसे लकड़ी के एक विशेष डंडे से बजाया जाता है।

तासा

यह भी गोल आकार में छोटे ढोल जैसा ही होता है। इसे गले में लटका कर बजाया जाता है। इस के लिए बांस की दो तिलियों का प्रयोग होता है।

डग्गा

यह ढोल के आकार का होता है। इसे भी लकड़ी के डंडे से बजाया जाता है।



चतुर्थ अध्याय

लोक ताल

गायन, वादन तथा नृत्य संगीत के तीन अंग माने जाते हैं किन्तु ताल के बिना ये निष्प्राण हैं। ताल लय की अभिव्यक्ति की एक क्रिया है। लय एक नैसर्गिक प्रक्रिया है तथा समस्त प्रकृति लयबद्ध है। लय एक गति है जो अनादि और अनन्त है। हृदय की गति तथा नाड़ी का चलन इस तत्व का उत्कृष्ट उदाहरण है।

संगीत विश्व के किसी भी भाग का हो, ताल के बिना वह अधूरा है। ताल वह शक्ति है जो बच्चे-बूढ़े तथा नौजवान को ताली बजाने, नाचने या गाने के लिए विवश कर देती है। संसार के अन्य क्षेत्रों की भाँति डुग्गर का संगीत भी ताल बद्ध है। डुग्गर के तालों की वादन शैली अपने आप में पूर्ण तथा अनूठी है।

डुग्गर का मुख्य ताल वाद्य-ढोल

ढोल के मुख्य ताल निम्न हैं :-

बधाई ताल :- बच्चे के जन्म, विवाहोत्सव पर महिलाएँ ढोलकी पर जो ताल बजाती है उसे 'बधाई ताल' के नाम से अभिहित किया जाता है।

घर नन्द जी दे बज्जन बधाइयां गीत इसी ताल के अन्तर्गत आता है।

दक्खन भौनी ताल :-इस ताल का चलन बिल्कुल नाग की चाल जैसा लगता है। प्राय: नाग देवताओं की कारिकाएं गाते समय गारड़ी, जोगी तथा भराई आदि लोक गायक इसी ताल का प्रयोग करते हैं। इस ताल में देवी-देवताओं का गुणगान किया जाता है।

जातर ताल

लोक देवताओं के सम्मान में गारड़ी जब ढोल पर जातर ताल बजाता है और कारिका का गायन करता है तब देवता के चेला के शरीर में एक कंपन जैसा होता है। वह जोर-जोर से सिर हिलाता है और हाथ में पकड़े झुंडे को पीठ पर मारता है। इस कम्पन को पौन (पवन) नाम से अभिहित किया जाता है। समझा जाता है कि देवता के चेला के शरीर में देवता की छाया का प्रवेश हो चुका है। गारड़ी चेले की स्थिति को भाँप लेता है। वह स्थिति के अनुरूप कभी धीमे तो कभी द्रूत गति से ढोल बजाता है।

डयोढ ताल :- गारड़ी जब अति द्रुत गति से ढोल बजाता है तो उसे डयोढ़ ताल के नाम से अभिहित किया जाता है। प्राय : चेले के सिर हिलने की क्रिया को तीव्र गति देने के लिए इस ताल का प्रयोग किया जाता है।

टी० आर० मगोत्रा के शब्दों में –'चौदह मात्राओं' का 'जातर ताल' - जत, दीपचंदी जां चांचर ताल सम्भवत: इसी ताल से बने हैं।

धमाल ताल

पीरों-फकीरों की दरगाहों में जोगी या गारड़ी धमाल ताल में ढोल बजाते हैं। जैसे पीर-फकीर साधु और संत सरल स्वभाव के होते हैं, वैसा ही सरल चलन इस ताल का भी है। एक या दो ढोलिए मिल कर इस ताल का प्रदर्शन करते हैं।

कहरवा ताल

इसे घुमाली ताल भी कहा जा सकता है। इस ताल का प्रयोग वीरगाथाओं के गायन के समय किया जाता है।

इस गायन में चकारा या छोटी सारंगी का प्रयोग गायक करते हैं। कई गायक हाथों में घुंघरु बांध लेते हैं। डोगरी के प्रसिद्ध लोक गायक गुलाम मुहम्मद तथा उसके साथी ऐसा ही करते हैं।

लुड्डी ताल

डुग्गर की पहाड़ी क्षेत्रों में बसे गद्दी लोग नाचते समय लुड्डी ताल का प्रयोग करते हैं। वे नाचते समय नृत्य गीत भी गाते हैं, यथा :-

रुपणू-पुहाल घरे ईला हो
कालका जो छतर चढ़ाली हो।

तमाचा ताल

इस ताल का प्रयोग नृत्य गीतों में किया जाता है। नर्तक ढोल की ताल पर नाचते है और गाते हैं :-

चम्बे दीआ धारा पौण फुहारां
उडणू तां भिज्ज गिआ सारा
लाडो दा चित्त लगदा चम्बे दिया धारा॥

चंचल ताल

पहाड़ों में गुज्जर, वकरवाल, पहाड़िये प्रायः 'चन्न गीत' इसी राग में गाते हैं, यथा :-

चन्न म्हाड़ा चढ़ेआ उप्पर रयासिया।
थोड़ा-थोड़ा मंदा चन्ना मती ऐ दोआसिया॥
मिलन कियां होग मेरी जान ओ।।
मिलना जरूर मेरी जान ओ।

फुम्मनियाँ ताल

यह एक नृत्य प्रधान ताल है। प्रायः नर्तक पीरों, फकीरों, सिद्धों संतों की दरगाहों और समाधि अथवा देहरे-देहरियों में नाचते समय इस ताल का प्रयोग करते हैं। यह ताल एक या एक से अधिक ढोलों पर भी सुनाया जा सकता है।

डंडारस ताल

गुजरात के गरवा ताल का ही यह एक रूप लगता है। इस में भी नर्तक

दो-दो डंडे हाथों में पकड़ कर बड़ी फुर्ती से बजाते हुए नाचते हैं। यह नृत्य पहले धीमी गति से प्रारम्भ होता है और बाद में इस में तीव्रता लाई जाती है।

छिंज ताल

डुग्गर में प्रत्येक गाँव में समय-समय पर मल्ल युद्धों अथवा कुश्तियों का आयोजन होता है। इस अवसर पर एक या एक से अधिक ढोलों का उपयोग होता है। ढोलिये छिंज में जिस ताल का प्रयोग करते हैं उसे ही छिंज ताल कहते हैं।

इस में मल्ल युद्ध से पहले जो ताल बजाया जाता है उस से निम्न पद्यांश प्रतिध्वनित होता है :-

आओ पंचो बह्वो पंचो साढ़े पद्धर छिंज ए,
लत भज्जै बां बज्जे, साढ़े जुम्मैं नेइयो ओ।

जब मल्ल युद्ध प्रारम्भ होता है तो पहलवानों में जोश पैदा करने के लिए ढोल बड़ी तीव्रता से बजाया जाता है। अन्त में पहलवान के जीतने पर उल्लास व्यक्त करने के लिए ताल में मधुरता भरी जाती है।

भांगड़ा ताल

बैसाखी, विवाह तथा अन्य आनन्दोत्सव पर ढोलियों के जिस ताल पर नर्तक थिरकते हैं, उसे भांगड़ा ताल कहा जाता है। इस ताल का प्रयोग प्रायः डुग्गर के मैदानी नगरों में किया जाता है। मेलों और उत्सवों के अवसर पर भी नर्तक भांगड़ा ताल पर नाचते हैं :-

ढोलरु ताल

इसे रितड़ियाँ नाम से भी अभिहित किया जाता है। ढोलरु ऋतु सम्बन्धी ताल है। जोगी, दरेस और गारड़ी चेत मास में ढोलकी की थाप पर ऋतु सम्बन्धी गीत घर-घर जा कर सुनाते हैं। यथा :-

पैह्ला नां लैना राम दा
जिन्नै सारी दुनिया बसाई ओ
दूआ नां लैना माई-बाप दा
जिन्ने दस्सेआ संसार ओ।
चढ़ेआ चेतर बसाख ओ,
सदा हुन्दिया धर्मा जय हो।

ढड्ड ताल

डुग्गर प्रदेश में जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो उसके मरणोपरान्त परिवार के लोग ढोलिए को बुलाते हैं। ढोलिया घर की छत पर चढ़कर ढड्ड ताल में ढोल बजाता है। इस से पूरे गाँव को सूचना मिल जाती है कि जिस घर के छत पर ढड्ड बज रही है वहाँ किसी की मृत्यु हो गई है। ढड्ड का ढोल सुन कर सारा गाँव एकत्रित हो जाता है।

ढड्ड प्रायः बर्जुग की मृत्यु पर बजाई जाती है। बजुर्ग की मृत्यु का समाचार सुनते ही उसके समधि नाचते-गाते आते हैं, वे घर के लोगों पर रंग फैंकते हैं और नाचते हैं। इसे पहले बुरा नहीं माना जाता था। किंतु अब यह रंग फैंकने वाली प्रथा तो बंद है किन्तु शव यात्रा में ढड्ड बजाने का प्रचलन अब भी है।

शव यात्रा में सब से आगे एक या दो ढोलिए चलते हैं। वे ढड्ड बजाते हैं। इस से शोक और करुणा की स्वर ध्वनियां उभरती हैं।

शव को जब अन्तेष्टि पर रखा जाता है तब भी कहीं-कहीं ढड्ड बजाने की प्रथा है। कहीं-कहीं कपाल क्रिया पर भी ढ़ड्ड बजाई जाती है।

किन्तु अब बजुर्गों को बाजा-गाजा के साथ श्मशान घाट पहुंचाया जाता हैं।



सन्दर्भ :- शीराज़ा डोगरी अंक 139
लेख :- डुग्गर के लोक-ताल लेखक : टी. आर. मगोत्रा 'सागर'
मूल लेख : डोगरी में भावानुवाद- लेखक

पंचम अध्याय

लोक धुनें (राग)

डोगरी लोकगीतों की स्वर माधुरी पर गम्भीरता से विचार करने पर शास्त्रीय संगीत परम्परा के अनेक मूल स्रोत इन में सहजता से ढूंढे जा सकते हैं। अधिकांश लोक-धुनें-राग भूपाली, दुर्गा नारायणी, पहाड़ी, आसा, मालकौष, वृन्दावनी सारंग, तिलक-कामोद आदि रागों की स्वरवलियों पर आधारित हैं। भक्ति गीतों के अन्तर्गत गाए जाने वाले गीतों में बहुतायत से राग आसा का प्रयोग पाया जाता है। डुग्गर की अनेक वीर गाथाएँ दुर्गा राग पर आधारित हैं। इन्हें गाते समय गायक दुर्गा राग के स्वरों में ही राग आसा-माँड का आभास दे जाते हैं। इसी प्रकार डुग्गर की वारों और प्रणय गाथाओं में कही पहाड़ी, दुर्गा आसा, माँड, तिलक कामोद और मल्हार का आभास होता है तो कहीं देस, सारंग और दुर्गा की स्बरावालि में ही आसा-मांड की स्वर लहरी उभर उठती हैं।

डुग्गर प्रदेश में पंजाब और राजस्थान के कई निवासी बसे हैं। उन की लोक धुनें भी डुग्गर की लोक धुनों में घुल-मिल गई हैं। यही कारण है कि हमें डोगरी लोक गीतों में पंजाब के माहिया और राजस्थान के मांड की झलक भी मिलती है।

डोगरा जाति के लोग सेना में भर्ती होकर जब सीमावर्ती क्षेत्रों में चले जाते हैं तो महिलाएं 'द्रुए' नामक गीत गाती है। ये भावपूर्ण गीत दुर्गा और मांड के स्वरों में निर्बद्ध होते हैं

इसी प्रकार नृत्य संगीत मुख्यतः दादरा, कहरवा, रूपक, दीप जंदी, चंचल इत्यादि तालों में बंधा हुआ माना जाता है।

सन्दर्भ :-हिमाचल प्रदेश व जम्मू के लोक संगीत में राग आसा मांड : डॉ० मनोरमा शर्मा

जम्मू प्रान्त का लोक संगीत पुस्तक के लेखक भारत भूषण के अनुसार डोगरी लोक संगीत में ताल कहरवा, ताल खेमटा, ताल चांचर का प्रयोग भी हुआ है।

राग दुर्गा

राग दुर्गा पर आधारित एक गीत (हरन)
हरना हरना जंगल चरना सिङ तेरे सलाइयां ओ
सिङै तेरे पर के किश लिखेया, तितर ते मरगाइयां ओ
जिन्दियां हरियां हरियां लुग्गना उन्दियां चिट्ठियां लाइयां ओ।
जिन्दियां हरियां हरियां लुग्गना भरी बन्दूका ताइयां ओ
हरन वचैरा मारी लैता मासे पतियाँ पाइयां ओ
हरनी बचैरी रोदन करदी हाये सिरे देया साइयां ओ
तितर शितर उड्डी गे ते उड्डी गेइयां मरगाइयां ओ।

तथा

धारें धूरां पेइयां कंडिया पेया बरसाला
असें तुक्की ठाकेया हा जे
इक्कले नीं जी जायां धारा
गद्दियें दे छोकरे बुरे
इक्कले गी पौन्दे मारा
घर मेरे सामनै जिन्दे
हेठ कंडेरी नाला
ओ तेरा केह लगदा
कालिये कमीचे आला
ओ मेरा देर लगदा
बड्डे भाइये दा साला
सज्जने गी खुशियां होइयां
बैरियें गी पेई गेआ जाला।

गन्धार स्वर

कपड़े धोआं कन्ने रोआं कुंजुआ
मुहाँ बोल जबानी दा
छाती कन्नै छाती नेईं मलाया कुंजुआ
मेरे टुट्टी जन्दे बीड़े ओ
बीड़े दा बसोस नीं कर चैंचलो
चम्बै मिलदे बथेरे ओ
अद्धी-अद्धी राती मत औन्दा कुंजुआ
बैरी भरियां बन्दूका ओ
अद्धी-अद्धी राती असैं औना चैंचलो
केह् करना ई लोकां ओ
ओ मेरिये जिन्दे केह् करना ई लोकां ओ

चांचर

नेईं कर गोरिये मैलियां अक्खियां
कल परदेसियें टुरी वो जाना
जिन्दे टुरी बो जाना
शाहूकार करदे शहूकारियां
आशकी मानुयै मंगी वो खाना
जिन्दे मंगी वो खाना
खाई लैना लाई लैना हस्सी ऐ बोलना
इक्क बारी गलै कन्ने लाई बो लेना
जिन्दे लाई वो लेना॥

खेमरा

नालै-नालै जंदा मिक्की लक्कड़ी ढुआंदा
ते लोकें गी गलांदा ठेकेदार बेलियां

सन्दर्भ :-

1. जम्मू प्रान्त का लोक संगीत-भारत भूषण

दगेवाज बेलियां
धोखेबाज बेलिया
जितनी ऐ जिमी मेरे देरे दी ऐ जिमी
ऐमै जिमी दा गलान्धा हेसेदार बेलिया
दगेवाज बेलिया
धोखेवाज बेलिआ
खाने गी नी दिन्दा मड़ा लाने गी नीं दिन्दा
लोकें ने गलान्दा मेरी नार बेलिया
दगेवाज बेलिया
धोखेबाज बेलिया॥

कहरवा

फ्हाड़े देसै बस्सेया नीं जन्दा
फ्हाड़ै नीं जायो कोई
आओ भैनो बेई जाओ छन्दा
तुसेईं सनानियां रोई॥
मक्क दा ढोडू मड़ो खाने गी दिन्दे
सबजी गी करदे नां भाई नां
फ्हाड़ै देसै कट्टेया नहीं जन्दा
फ्हाड़ै नीं जाओ कोई॥
सुत्थन ते कुरता माए लाने गी दिन्दे
चपली गी करदे नां भाई नां
फ्हाड़ै देसै कट्टेया नीं जन्दा
फ्हाड़ै नी जायो कोई॥
(राग तिलक कामोद की झलक)

सन्दर्भ :-

1. जम्मू प्रान्त का लोक संगीत–भारत भूषण

राग माँड

डॉ. मनोरमा शर्मा (हिमाचल प्रदेश) के शब्दों में डोगरी-पहाड़ी लोक गीतों में अधिकांश लोक धुनें-'राग-भूपाली, दुर्गा, नारायणी, पहाड़ी, आसा, माल कौंष, वृन्दावनी सांरग, तिलक-कामोद आदि रागों की स्वरावलियों पर आधारित हैं। भक्तिगीतों के अन्तर्गत गाए जाने वाले गीतों में बहुतायत से राग आसा का प्रयोग किया जाता है।

प्रात: काल में 'भ्यागड़ा' नाम से जो भक्ति गीत गाए जाते हैं इन में राग माँड और आसा का आभास होता है, यथा

ठाकुर तुम शरणाई आयो
उतर गयो मेरे मन का संशय
जब तेरा दर्शन पायो।

राग आसा

डॉ. मनोरमा शर्मा के शब्दों में मीरदास चौहान की बार में राग आसा का आभास मिलता है। यथा -

आपूं राजे हुक्म कराया, अभय ब्रह्मने गी फरमाया
धन्न ब्रह्मा ने तेया जम्मदी माई
छोड़ेया घोड़ा रण च जाई
खड़ा मिंया नाथ जाओ नाहीं
दाहे गीर खड़ोते आई
नाथ मियाँ पैरे पांदा जाई
(वार मीरदास चौहान)

डॉ. मनोरमा के अनुसार डोगरी की अधिकांस् कारकों और वारों में राग आसा की झलक मिलती है।



षष्टम अध्याय

डुग्गर के नृत्य गीत

नृत्य तथा गीत का चोली दामन का साथ है। आदि मानव की लोक नृत्य तथा लोक गीत मुख्य अभिव्यक्तियाँ रही हैं। गीत, संगीत और नृत्य यह तीनों लोक मानस की पूरक अभिव्यक्ति रही है। यहां भी कहीं खुशी की बात होती हैं वहीं नाच गाना आरम्भ हो जाता है।

डुग्गर क्षेत्र के लोगों में भी नाचने और गाने के प्रति विशेष प्रवृत्ति रही है। संस्कारों के अवसर पर, पर्व और त्योहारों पर मेलों में भी नृत्य गीतों का आयोजन होता है। डुग्गर के प्रसिद्ध नृत्य गीत निम्न है :-

कुड्ड

यह डुग्गर के पर्वतीय क्षेत्र का प्रिय नृत्य गीत है। यह एक सामूहिक नृत्य है और प्रायः रात्रि के समय वृत्ताकार में नाचा जाता है। पुरुष और नारियाँ इस में भाग लेते हैं। इस में लोक वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग होता है। कुड्ड में जो नृत्य गीत गाए जाते हैं उस का एक उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

झक्का-मझक्का-झकालू
काली धारी ए दोहड़ बोनुं
झक्क-मझक्क-झाकलू
गोड़ा खाने री शादरा लगी
गंडी नेई डब्बल टकालू आदि।

जागरना

यह विशुद्ध महिलाओं का नृत्य गीत है। वारात को विदा करने के बाद नारियाँ वर के घर रात्रि के समय कुछ झुक कर हाथ की उंगलियों से चुटकियाँ

बजाते हुए नाचती और गाती हैं। इस अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं, उस का एक उदाहरण निम्न हैं :-

मेरी बाईं च नौ-नौ चुड़िया वे,
दिनें झुंड ते रातीं गल्लां गूढ़िया वे।

घूरेईं

यह भी विशुद्ध महिलाओं का नृत्य गीत है। इस का प्रचलन डुग्गर के भद्रवाह आँचल में हैं। यह गीत नृत्य विशेष अवसरों पर यथा विवाह, पर्व त्योहार आदि के अवसर पर आयोजित किया जाता है। इस नृत्य के साथ जो गीत गाए जाते हैं, उस का एक रूप इस प्रकार है :-

हसां दी खेलां दी गई तू धिए
रोहड़ी की आई ओं ?
खूए गेइ अंब पानी भरणे
जुटड़ी गमाई हो।

खड़जाठ (नृत्य गीत)

यह पाडर क्षेत्र का लोकप्रिय नृत्य गीत है। इस में पुरुष और महिलाएँ दोनों इकट्ठे या अलग-अलग गोल दायरे में नाचते हैं। इस में ढौंस (बड़ा ढोला) बाँसुरी आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग होता है। नर्तक पाडरी वेश-भूषा में नाचते और गाते हैं :-

यथा :-

नया आया गोरनर साहबा ओ
हत जौड़ी बुने अठत्याला हो।

सच्चे

यह पाडर की भोट प्रजाति का नृत्य गीत है। इस में नव विवाहिता वर-वधु तथा परिवार के लोग सम्मिलित होते हैं। नृत्य में सुरनां वीणां तथा दम्मन

(एक प्रकार का ढोल) का प्रयोग होता है। नर्तक छंग का नाचते समय खुला प्रयोग करते है।

शौन :

यह भोटों का लोकप्रिय नृत्य गीत है।

जबरु

यह भी भोटों का प्रिय नृत्य गीत है।

मूंकर

यह लोक नाच अब लुप्त स्थिति में है।

मन्झ लोरा

किश्तवाड़ में नृत्य गीतों की एक अलग परम्परा रही है जिसे 'मन्झ लोरा' नाम से अभिहित किया जाता है। मन्झ लोरा के नृत्य गीतों में वेदना, कसक और पीड़ा भी होती है। प्राय: श्रमिक वर्ग इन गीतों से मन का संताप हल्का करता है।

जागरु

भाद्रो अमावस्या के पश्चात् किश्तवाड़ के गाँव-गाँव में जागरु लोकोत्सवों का आयोजन होता है जिस में गायक पूरी-पूरी रात नाचते और गाते हैं।

मान्जि

यह श्रम परिहरण सम्बन्धी नृत्य गीत है, जिसे किश्तवाड़ के किसान सामूहिक रूप से गाते हैं, यथा :-

युल रलि, मेलि त करो असि कार
अय सेन्थि थु रेवन पान वाजि प्यार

(आओ, हम सब मिलकर कार्य करें, इस से प्यार और आपसी भाई चारा बढ़ता है)

प्हाड़ी नृत्य गीत (बिम्हागी)

बिम्हाग क्षेत्र में कई नृत्य गीत मिलते हैं जिन में मुख्य श्रम परिहरण से सम्बन्धित हैं। यथा :-

मक्के दी दिया गोडिया
सो बे सोइया
फुल्लें दियां डोडिया
सो बे सोइया
मक्क गेइयां फुल्ली
सो बे सोइया
मक्का लेइयां बड्डी
सो बे सोइया
नाज दे ऐ मंड्डी
सो बे सोइया

भांगड़ा

यह मूलतः पंजाब का नृत्य गीत है किन्तु डुग्गर प्रदेश में भी इस का प्रचलन हैं। वैसाखी पर्व, विवाहोत्सव, लोकोत्सव पर भांगड़ा नृत्य आयोजित किया जाता है। इस में 'ढोल' का विशेष प्रयोग होता है। नर्तक ढोल के ताल पर विभिन्न मुद्राएँ बना कर नाचते हैं। ढोल के नर तथा मादा पुड़ो के बीच से डगों के बोल इस प्रकार सुनाई देते हैं :-

धिनक ना धिन... धिनक ना धिन
धगन, धगन धा (नर)
तिन, तिन, तिन...ता
धिन, धिन... ताको धिन (मादा)

लुआनी

भांगड़ा नाचते समय लुआनी भी लगाई जाती है। यथा :-

सुन्दर फुल्ल गलाब्बै दा
पई सुन्दर फुल्ल गलाब्बै दा
पेई दरसन पाना राजे दा।

बोलियाँ

भांगड़ा नाचते समय नर्तकों में जोश भरने के लिए जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें बोलियां कहा जाता है, यथा :-

द्रैक फुल्लै, दरकानू फुल्लै
दो फुल्ल फुल्ली काया ओ मेला बरै दिने दा।

ढेक्कू :- यह पहाड़ी क्षेत्र का नृत्य गीत है। इस का आयोजन लोकोत्सव पर किया जाता है। यह घेरे में नाचा जाता है। इस में झुक कर चुटकियों और ताड़ियों का प्रयोग करते हुए जो गीत गाए जाते हैं, उन में एक का रूप इस प्रकार है :-

'ढेक्कू पुड़ नच्चतम दूई जने हो-हो'

इस में डोल के ताल को केह्‌रा, दोह्‌रा तथा त्रेह्‌रा कहा जाता है।

फुम्मनी

यह नाच प्रायः गुग्गा नवमीं के दिन लोक देवता के सम्मान में नाचा जाता है। इस नाच में नर्तक अपने हाथ की उंगलियों के अग्र भागों को इस प्रकार खोलता है मानो बंद कली खिल उठी हो।

यह परम्परित नाच है। देवता के चेले (पचैले) इस का आयोजन देवता को प्रसन्न करने के लिए करते हैं। इस नाच में नर्तक घुंधरु बाँध कर नाचते है और मुँह से सी-सी, हो-हो की ध्वनियाँ निकालते हैं।

कीह्‌कली

यह डुग्गर की लड़कियों का नाच है। दो लड़कियाँ अपने एक-एक हाथ को जोर से पकड़ कर कीह्‌कली डालते समय गाती हैं :-

किक्कली कलीलदी, पग्ग मेरे वीर दी।
दुपट्टा भरजाई दा फेटे मुँह जोआई दा...।

तम्हच्चड़ा

यह महिलाओं का नाच है। वरातगमन के बाद इस का आयोजन रात्रि के समय होता है। इस में नृत्य, गायन और बादन होता है।

छज्जा नृत्य

इस नाच का आयोजन लोहड़ी पर्व पर डुग्गर के नगरों में होता है। लड़के छज्जा नचाते हुए गाते और नृत्य करते हैं।

हिरण नृत्य

यह एक प्रकार का स्वांग नृत्य है। इस में एक लड़का हिरण का मुखौटा पहन कर पशु के रूप में नाचता है। कुछ लड़के सखियों के रूप में और एक साधु के रूप में नाचते और गाते हैं :-

हरणा हरणा छाल्ली दे
सुतें गी बज्झाली दे
हरण आया हन्साली दा
देओ टुप्पा दाली दा।

डुग्गर के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. सत्यपाल श्रीवत्स ने लोक नृत्यों को तीन वर्गों में रखा है और वे है :-

1. पर्वतीय प्रदेश के लोक नाच

(1) ढेकू नाच (2) डांगी नाच (3) गद्दी नाच (4) सुहार लोक नाच (5) गोजरी लोक नाच

2. मध्य वर्ती प्रदेश के लोक नाच

(1) चौकी लोक नाच (2) कुम्मनी लोक नाच (3) कीकली नोक नाच (4) धमचड़ा लोक नाच (5) छन्ना लोक नाच

3. निम्न प्रदेश के लोक नाच

(1) भांगड़ा (2) गिद्दा (3) आँचलिक लोक नाच

(1) पाडर के लोक नाच

(1) राक्स खेल (2) वुछेन (3) खड़जात (4) सच्चे आदि।

(2) किश्तवाड़ के लोक नाच

(1) भांड खेल (2) चलन्त (चलन्त), मंझ लोला आदि।

(3) पंचैरी के लोक नाच

(1) कुड्ड नाच (2) गगैहल (3) जातर आदि।

(4) विलावर के लोक नाच

(1) हरण (2) गुगैहल (3) ढेकु नाच (4) फुम्मनी (5) भांगड़ा आदि।



सप्तम अध्याय

डोगरी लोक गीत

अशिक्षित ग्रामीण लोगों में प्रचलित गीतों को ही प्रायः लोक गीत कहा जाता है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि गाँवों के लोगों में प्रचलित, गाँवों के लोगों द्वारा सृजित गाँवों के लोगों के लिए रचित गीत ही लोक गीत कहलाते हैं।

परिभाषा

डॉ० सत्येन्द्र के अनुसार- 'वह गीत जो लोक मानस की अभिव्यक्ति हो, अथवा जिस में लोक मानस भास भी हो लोकगीत के अन्तर्गत आएगा।'

मोहन कृष्ण धर का कहना है-'लोकगीत रस से परिपूर्ण बोल हैं। डॉ० तेज नारायण लाल के अनुसार-लोकगीत हमारे जीवन विकास का इतिहास है। डॉ० चिन्तामणि उपाध्याय के शब्दों में लोक गीत मनुष्य की प्रकृत भावना की अभिव्यक्ति से जन्मा आदिम वातावरण में पला है और काल की गहराईयों से उठकर प्रौढ़ता को प्राप्त हुआ है। सन्त राम अनिल का कथन है-'लोक गीत अशिक्षित ग्रामीण जनता के भावुक और संवेदनशील हृदय के वे स्वाभाविक उद्गार हैं, जो संगीत की बलवती धारा के रूप में प्रवाहित हो उठते हैं। संगीत इन में प्राण-प्रतिष्ठा करता है, इसलिए कहा जाता है कि हृदय के उद्रेक से युक्त कलापूर्ण संगीत ही लोक गीत हैं।'

उपरोक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने के बाद तीन बातें स्पष्ट हो जाती है और वे हैं :-

1. लोक गीत लोक समाज में प्रचलित गीत हैं।

2. इन गीतों का सृजन लोक कवि करता है।

3. ये गीत लोक-विषयक होते हैं।

उत्पति

लोक गीतों की उत्पति के विषय में लगभग सभी विद्वान इस बात पर एक मत हैं कि ये गीत अशिक्षित समाज की सम्पत्ति हैं जो धरोहर के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त हुए हैं। यह श्रुति परम्परा से जीवन्त रहे हैं। इन का अस्तित्व वर्ण माला के जन्म से भी पूर्व था।

परम्परा

लोक गीत आदिम मानव हृदय के गीत हैं। भारत में लोग गीतों की परम्परा बहुत पुरानी है। लोक गीत वैदिक मंत्रों के उत्तराधिकारी कहे जाते हैं। लोक गीतों के उदाहरण ऋग्वेद, मैत्रायणी संहिता, गृह सूत्र आदि में देखें जा सकते हैं।

वाल्मीकि रामायण तथा श्री मद् भागवत में क्रमशः राम और कृष्ण के जन्म के समय नारियों द्वारा गीत गाए जाने का उल्लेख मिलता है। संस्कृत के कवियों और नाटककारों ने अपने ग्रंथों में लोक गीत गाने का उल्लेख किया है। तुलसीदास ने भी जानकी के विवाह के अवसर पर नारियों द्वारा गीत गाये जाने का उल्लेख किया है।

डुग्गर में भी लोक गीतों की परम्परा भारत के अन्य प्रान्तों की भाँति बहुत प्राचीन है।

महत्त्व

लोक गीत हमारी आदि संस्कृति तथा सभ्यता के अवशेष हैं। इन में युगीन परिस्थितियाँ प्रतिविम्बित होती हैं। समाज के प्रत्येक पक्ष का इन में सजीव चित्रण होता है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में-'लोक गीतों का महत्त्व मोहन-जोदड़ो से भी कहीं अधिक है। मोहन जोदड़ो सरीखे भग्न स्तूप ग्राम गीतों के भाष्य का काम दे सकते हैं।

विशेषताएँ

लोकगीत मौखिक परम्परा की संचित निधि हैं। ये अपौरुषेय हैं। इन में छन्द का आग्रह नहीं होता। संगीत लोक गीत का बेजोड़ अंग है। इस में नाम अथवा यश की लालसा नहीं होती। लोग गीत बनते और बिगड़ते भी हैं। इन की भाषा लोक बोली होती है। लोक गीत लोक संस्कृति का दर्पण होते हैं।

डोगरी लोक गीतों में डुग्गर की लोक संस्कृति प्रतिबिम्बित है। ये गीत डुग्गर प्रदेश के निवासियों के उद्गार हैं और लोक समाज की हार्दिक भावनाओं के सच्चे प्रतीक हैं। इनमें सरसता, सरलता तथा स्वच्छन्दता है।

लोक गीतों का वर्गीकरण

लोक गीतों की सीमा अनन्त है। अतः इन्हें वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकृत करना कठिन है। फिर भी विद्वानों ने इस दिशा में काम किया है। मुख्य रूप से विद्वानों ने लोक गीतों को दो वर्गों में रखा है :- विषय वस्तु और गायन शैली।

रामनरेश त्रिपाठी ने लोक गीतों को 11 वर्गों में विभाजित किया है और वे हैं :-

1. संस्कार सम्बन्धी गीत 2. चक्की तथा चरखे के गीत 3. धर्मगीत 4. ऋतु सम्बन्धी गीत 5. खेती सम्बन्धी गीत 6. भीख माँगने वालों के गीत 7. जाति गीत 8. वीर गाथा गीत 9. मेले सम्बन्धी गीत 10. कथा गीत और अनुभव के गीत।

श्याम परमार ने लोक गीतों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है :-

1. जातियों की दृष्टि से 2. संस्कार तथा प्रथाओं की दृष्टि से 3. कार्य तथा सम्बन्ध की दृष्टि से 4. धार्मिक विश्वासों की दृष्टि से 5. रस सृष्टि की दृष्टि से।

लोक गीतों का वर्गीकरण

लोक परम्परा ने डोगरी लोग गीतों के कई भेद किए हैं, जो इस प्रकार हैं :-

1. बिहाइयां	2. घोड़ियां	3. सुहाग
4. लोरियां	5. छिंजां	6. रितड़ियां
7. ढोलक	8. गुग्गना	9. थाल
10. किक्कली	11. वत सद्द	12. आरती
13. भेंटां	14. विशन पदे	15. गुजरी
16. भाख	17. सुहाड़ी	18. चिरानी
19. गरलोढ़ी	20. टप्पे	21. त्रोटक
22. झंझोटियाँ	23. पक्खड़	24. सीझु
25. नास्हेड़ी	26. सारुत	27. लोरी
28. ओबड़ी आदि।		

बिहाइयाँ

ये मांगलिक गीत हैं। बिहाइयां का शब्दार्थ है-बधाई।

डुग्गर में ये गीत पुत्र जन्म के पूर्व रीतां संस्कार और पुत्रोत्पति के बाद महिलाएँ सामूहिक रूप से गाती है।

इस लोक गीत का एक उदाहण इस प्रकार है :-

गौरी दे आंगन फुल्ल जे खिड़ेया
खिडेया असल गुलाब,
गोदा हरिया होइयाँ
भाभो ननदै गल्लां लाइयां
बेइयै करन हिसाब
गोदा हरिया होइयां

पुत्र जन्म पर जो गीत गाये जाते हैं उन्हें बधावा भी कहते हैं। इस का एक रूप इस प्रकार है :-

बधावा

ए हरेया नीं माए हरेया नी भैनो-

हरेया ते फुल्ल सुहामा ए।
ए जिस ध्याड़ै स्हाड़ा हरिहर जम्मेआं
सोइयो ध्याड़ा भागें भरेया ऐ।

घोड़ियां

विवाह पर वर पक्ष की महिलाएँ जो गीत गाती हैं। उन्हें घोड़ियाँ कहते हैं। तिलक प्रथा से लेकर विवाह के अन्त तक घोड़ियां गाई जाती हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

वे स्हाड़ा वीर घोड़ी पर चड़ेया,
भैनें बाहीं इच कड़ेया
वीरा मुखों बोलदे क्यों नेई।

तथा

बरधो-बरधो जान्नी बरधी चली।
बलगो-बलगो वावल औन देओ।
बावल आवै जान्नी अजब बनै।
तांये रुस्से, मेरे हरि चन्दै दे।
वै मनायो, जान्नी कन्ने चले (वरात की विदाई)

सुहाग

कन्या के विवाह से सम्बन्धित गीतों को 'सुहाग' कहा जाता है। कन्या का शगुन वर पक्ष के घर भेजने के साथ ही सुहाग गायन का क्रम प्रारम्भ

हो जाता है। यह क्रम कन्या की विदाई तक चलता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

वेटी चन्दन दै ओह्लै-ओह्लै क्यों खड़ी?
मैं तां खड़ी आं वावल जी दे पास
बावल वर लोड़िये
वेटी केया जेया वर लोड़िये,
चन्न बिच्च काहन, कन्हेया वर लोड़िये।

सिटनियां

वारात खाना खाने के लिए जैसे ही कन्या के गृह में प्रवेश करती है, महिलाएँ वर को सम्बोधित करते हुए जो गीत गाती हैं। उन्हें सिटनियाँ कहते हैं, यथा :-

खोलो बरा सूही, बरा सूही
बरा सूही बिच दाना
खोलो बरा सूई।
लाड़े दा बब्ब काना
खोलो बरा सूई

विदाई गीत

विदाई गीत अश्रुपूर्ण गीत हैं। दुल्हन की सहेलियाँ रुँधे गले से विदाई गीत गाती हैं। यथा :-

साम्भियै रख्यां माए गुड्डियां पटोले
फिरि नेईं रोयां माए भित्तैं दे ओहलै
में परदेसन होई।
मां मेरिये में परदेसन होई।

पल्ला

मृतक के शोक में विह्वल महिलाएँ चादर से अपना मुंह ढाप कर पल्ला डालते हुए निम्न गीत बोलती है :-

चन्दन रुक्ख बढ़ाओ जी, लम्मी पैड बनाओ जी...आदि।

डोगरी लोक गीतों का उपरोक्त वर्गीकरण शैलीगत है। विषय की दृष्टि से लोक गीतों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है :-

संस्कार गीत

जीवन को संस्कृत बनाने के लिए हिन्दू समाज में जो विधान किए जाते हैं, उन्हें संस्कार कहा जाता है। हिन्दुओं में 16 संस्कार सम्पन्न किए जाते हैं। किन्तु डुग्गर में मुख्य संस्कार निम्न हैं :-

रीतां

बालक के जन्म से पूर्व 8वें या 9वें मास में रीतां संस्कार सम्पन्न किया जाता है। इस अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं उन्हें बिहाइयां कहा जाता है।

बिहाइयां गर्भवती को पीड़े पर बैठाने के बाद घर तथा पड़ोस की महिलाएँ गाती हैं।

विशनपते

भक्ति-भावना से ओत-प्रोत गीत विशनपते कहलाते हैं। इन में उपदेशात्मकता का पुट भी होता है, यथा :-

उठ जाग सवेरे निं जिन्दड़िये,
सुन संता दी वाणी।
इत सत संग करी ले नि जिन्दड़िये
मौज बत्थेरी मारी।

मसाद्दे

मसाद्दे लोक अनुष्ठान गसैंतन के आयोजन पर किसी मेघ जाति के पुरोहित द्वारा गाए जाते हैं। इन में परिवार, पशुधन तथा उत्तम फसल की कामना की जाती है। इस का एक अंश इस प्रकार है :-

उच्चे पहाड़ रोह्नी मात, रौह्नी मंदर पाई
पर्वत धारें वेसनी माता, बसनी पंजाब जाई,
खल्ल देस दा चढ़ी सैंत औंदे जन्दे सीस नुआई,
भुक्खें गी माता रुट्टी दिन्दी, कोढ़, कुश्ट चुकाई।

बत संद्द

इन गीतों को पैंथा भी कहते हैं। किसी मंगल कार्य को आरम्भ करते समय जो लोक गीत गाये जाते हैं। उन्हें बत संद्द कहते हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

पैंत्था माल्ली ते कैंत खड़ोता मेरे ज़ालमा
पैंत्था जे अर्ज़ा लान्नियाँ, पैंत्था ते प्हाड़ा बालिये
पैंत्था जे लाटा रानिये, पैंत्था...

गुजरी

कृष्ण तथा गोपियों के प्रेम से सम्बन्धित लोक गीतों को गुजरी कहते हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

गढ़ मथरै दा ढल्ली गजरोटी
कानैं मुरली बजाई जी
खोल्ली टल्ले नौह्ना लगी ओ
कानैं छाप चुराई जी...।

भेटां

देवियों की स्तुति में जो गीत गाए जाते हैं, उन्हें भेंटा कहते हैं, यथा :-

जम्मू दिया ढक्किया वैष्णो बसदी,
कांगड़ै बसदी ज्वाला
ओ भगता माता देआ।

आरती

देवी-देवताओं की स्तुति में जो लोकगीत गाये जाते हैं उन्हें आरती कहती हैं, यथा :-

जै गणेश जै गणेश
जै गणेश देवा
माता तेरी पारबती
पिता महादेवा।

रितड़ियाँ

बसन्त ऋतु के आरम्भ होते ही गारड़ी घर-घर जाकर ढोल की थाप पर जो गीत गाते हैं, उन्हें रितड़ियाँ कहते हैं। यथा :-

फुल्लें पर भोरें पाया फेरा
कलियें पर भोरें पाया फेरा
सुनाकी आई रितड़ी

ढोलरु

चेती गीतों का नाम ढोलरु है। चैत मास की संक्रांति की प्रातः को डोम जाति के गायक घर-घर जाकर 'ढोलरु' गाते हैं।

छींजा

छींजा केवल महिलाओं का गीत है। चैत मास के दूसरे पखवाड़े के आरम्भ होते ही महिलाएँ रात्रि के समक्ष छींजा गीत गाती हैं। इस में प्रवासी प्रियतम को याद किया जाता है। उदाहरण प्रस्तुत है :-

मने देआ मैह्‌रमा
घरें फेरा पायां
मन मेरा कलपांदेआ
रुतां बांदियां आईयां

डोलो

यह रोपनी गीत है। आषाढ़ मास में पानी से सने खेतों में पौधों को रोपते समय महिलाएँ और पुरुष सामूहिक रूप से डोलो गाते हैं। उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

रामा करें बेले जूआ ड़लाबे खार निस्से नां आदि।

सोहाड़ी

यह डुग्गर प्रदेश का निराई गीत है। पुरुष और महिलाएँ धान और मक्का की निराई करते समय इन गीतों को गाते हैं।

एक उदाहरण देखिए :-

सोहाड़ी लाइए सोहाड़ी लाइए, सोभला सोहिया, सो भला सोहिया
शूरे उडारे लम्मू घासे, सो भला सोहिया सोभला सोहियाँ।

किरती गीत

निराई तथा रोपनी से सम्बन्धित एक और रूप डुग्गर में उपलब्ध है जिसे किरती गीत के नाम से अभिहित किया जाता है। इस गीत का एक रूप इस प्रकार है :-

मक्के दी गोडियासे...ऊ...आ
दम्में दी गोडियासे...ऊ...आ

निहासड़ी

लकड़ी के लम्बे-लम्बे शहतीरों को ढोते समय निहासड़ी गीत गाये जाते

हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

भाभी रुश्शोरी भोली हा...हो...हा।
भाभी कियां बो मनानी हा...हो...हा...।

गरलोड़ी

मकानों की छत पर मिट्टी बिछाते (लादी) समय गरलोड़ी लोकगीत गाने का प्रचलन रहा है। इस का एक रूप इस प्रकार है :-

पुज्ज जो आन...हेई सा
शावा शेरा...हेई सा
जिगरा तेरा...हेई सा
शावा पट्ठे...हेई सा...आदि

गेयता के आधार पर डोगरी लोक गीत

गेयता के आधार पर हमें डोगरी लोक गीतों के निम्न रूप मिलते हैं :-

भाख

भाख शब्द संस्कृत के 'भाष' शब्द का विकृत रूप है जिसका अर्थ हैं :- बोलना। इसी अर्थ में यह तैतरीय ब्राह्मण, महाभारत तथा अशोक के शिला लेखों में प्रयुक्त हुआ है। जर्मन भाषा में भाख का प्रयोग 'गीत' के रूप में होता है। डोगरी में भी इस का प्रयोग इसी अर्थ में होता है।

प्रो० शक्ति शर्मा के शब्दों में- 'भाख एक ऐसी गायन पद्धति है जिस की मुख्य प्रवृत्ति आनन्दात्मक है तथा यह आनन्द मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा हुआ है।'

भाख प्रायः लम्बे सुर वाला एक समूह गीत है। इस के गायन की पद्धति भी अलग है। गायक मंडली के गायक एक स्थान पर इकट्ठे होकर पांव के भार बैठ कर या खड़े-खड़े एक हाथ कान पर रखकर और दूसरा हवा में लहराते हुए सुर छेड़ते हैं। गायक मंडली का मुखिया अपने साथियों के सुरों

को आधार मान कर अपने सुरों में उतार चढ़ाव करता है। गाते-गाते जब छन्दों का अभाव हो जाता है तब गायक मंडली अपनी कंठ ध्वनि के तार नहीं टूटने देते हैं। वे आ आ ऽऽऽ, ई, ऽऽ की ध्वनि का प्रयोग कर के सुरों को चरम सीमा तक पहुँचा देते हैं। भाख का इतना सम्बन्ध शब्दों से नहीं जितना भावों तथा गति से है।

लोक वार्ता विद् डोगरी भाख के निम्न रूप मानते हैं :-

1. छोटी भाख :- इस में सुरों की खींच तान अनावश्यक रूप से नहीं की जाती। इस का एक रूप इस प्रकार है :-

त्रिम्भु कड़ै पतन बेड़ा सुरानी आं,
इनें झीड़ियें दे बिना लंग्घ जाए रांझा।
हसदा खेड्डदा लंग्घ जाए रांझा,
बौंह्दा खड़ोन्दा लंग्घ जाए रांझा।

2. मध्यम भाख :- इस का गायन करते समय मध्यम सुरों का प्रयोग किया जाता है, यथा :-

सुक्खनां करनियां सरीनियां पान्नियां
लिखी-लिखी चिट्ठियां पान्नियां तां कोरे कागदै
भारी सुट्टियां तां तेरे वायदै।

3. लम्मी भाख :- इस में सुरों की खींच तान रहती है, यथा :-

अद्धिया राती, भर प्राते
सुतिया नाजो सुखना पौंदा
ते लानी सांझ भली।
ते लानी कियां करी मिकी शरम औन्दी ऐ।

सुनीता भड़वाल के अनुसार भाख वैदिक काल से भी पहले डुग्गर में प्रचलन में थी, अतः इसे डुग्गर की एक विशेष उपलब्धि माना जा सकता है।

यह एक विरासत के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परम्परा में प्रचलन में रही है। इस विधा में किसी साज की आवश्यकता नहीं होती है। शास्त्रीय संगीत के कई राग भाख में भी मिलते हैं। यथा दुर्गा, भूपाली, शिवरंजनी आदि। भाख में अलग-अलग सुरों का जिस ढंग से उतार चढ़ाव किया जाता है, वह विश्व भर में संगीत की शैलियों में बहुत ही कम है।

भाख में जन-जीवन का चित्रण बहुत ही सजीव मिलता है। इसमें खान-पीन, वेश-भूषा, रीति-रिवाज, देवी-देवता, अन्ध विश्वास, मेले, पर्व और त्योहार सभी से सम्बन्धित संकेत समाहित होते हैं। इनमें धर्म और अध्यात्म से लेकर दर्शन और इतिहास की भी झलक मिलती है। यथा :-

अंगरेज़े जुल्म कमाया
जि'नें हिन्दो पाक बनाया
लड़ी-लड़ी मरदे वीर
ओ रब्ब रैह्म करै
कोठिया कुल्ले फूकी टकाए
जंगल जाइयै दिन बताए
जिन्ने मौरी दे पुत्तर मरी गे
सीने लगदे तीर
ओ रब्ब रैह्म करै।

भाखें क्षेत्र तथा घराना की दृष्टि से भी गाई जाती हैं। पहाड़ों में इनकी गति मध्यम, सीधी और सरल होती है। इनमें मुरकियां भी कम होती हैं। इन में अलाप या तान भी कम होती है किन्तु 'सुआई' बहुत ही बढ़िया होती है। इस प्रकार की भाखें लाटी-धूना में गाई जाती हैं। चनैह्नी तथा मानतलाई में प्रचलित 'गोरी' की परिगणना भी इसी के अन्तर्गत की जा सकती है। डुग्गर के पहाड़ी क्षेत्र में लम्बी भाख का प्रचलन बहुत ही कम है। कंडी क्षेत्र में भाखों को तेज लय के साथ गाया जाता है।

भाख में यह अन्तर भी होता है कि इनमें अन्तरा नहीं होता है केवल

लम्बी भाख में रचना शैली आज़ाद होती है और इसके गाने का तरीका भी आज़ाद होता है–इसमें मूल स्वर के साथ संयुक्त स्वर आ कर मिल जाते हैं, सुर सम नहीं होता है तथा अरोही अवरोही अहम होता है। भाख में टेक, काफिया, रदीफ तथा छन्द में भी छूट होती है। इसमें बैह्र को भी कोई महत्त्व नहीं दिया जाता।

डुग्गर की 'भाख' एक अनमोल खजाना है और इन्हें लोक-कला की श्रेष्ठ श्रेणी में रखा जा सकता है।

डोगरी भाख

डोगरी के प्रख्यात लोकवार्ता विद् देश बन्धु डोगरा नूतन के शब्दों में भाख –'किसानों के गीत गाने की ऐसी विधा है जिसे कम से कम चार गायक अथवा गायिकाएं गा सकती हैं। प्राय: छ: गायकों की टोली ही ठीक बैठती है। भाख की अगुवाई करने वाला गायक गीत को आरम्भ करता है। दूसरा गायक (भाखू) भाख को आरोपित करता है, तीसरा साई अथवा सुआई देता है। जिस प्रकार शास्त्रीय संगीत में इक तारा अपना ही स्वर देता है, इसी प्रकार साई अथवा सुआई देने वाला गायक अपने गले से विचित्र, बारीक सी सुर निकाल कर अलाप सा देता रहता है। बाकी के गायक साथ निभातें हैं जिसे भरथी (भरती) करना कहते हैं। यह शब्दावली तो भाख की है। जिस का अर्थ भाव यह है कि अगुवा गायक जब भाख का आरोहन करता है तो भरथी करने वाले गायक भी उस के साथ-साथ चलते हैं और एक स्थान पर भाख को छोड़ कर अगुवा गायक विश्राम कर लेता है जब कि शेष गायक भाख छेड़े रहते हैं। भाख का आरोहन दो स्वर आगे एक स्वर पीछे के नियम पर होता है और इस प्रकार चक्कर काटते-काटते (मरोड़ी देकर अथवा धुमा फिरा कर) भाख शिखर पर जा पहुँचती है और इस प्रकार इस का आरोहन, अवरोहन होता है। कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि एक ही सुर में गा रहे हैं किन्तु कई बार अलग-अलग स्वर फूट रहे होते हैं। इस प्रकार हार्मोनी (Harmony) तथा मैलाडी (Melody) का मिश्रित रूप भाख है।

भाख डोगरी संगीत की अपनी शास्त्रीय विधा है। जो कि बड़ी जाटिल है। इस का हिन्दोस्तानी संगीत से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह स्वर प्रधान है और शब्द कम प्रयोग होते हैं, जिस से स्वर बड़ा लम्बा खिंचता है। कई बार गीत की पहली पंक्ति पर भाख चढ़ती है, कई बार दूसरी पर और कई बार अन्त में। एक गायक गीत के कुछ बोल आरम्भ करता है तो अन्य गायक स्वर थाम लेते हैं। कई बार चार पाँच-पंक्तियाँ एक साथ बोलने के पश्चात् भाख चढ़ती है। साई अथवा सुआई देन वाला गायक अपने गले में एक विचित्र सा कम्पन पैदा करता हुआ एक पृथक स्वर का आभास देता है। भाखु गायक की साई अथवा सुआई में इतनी लचक होती है इतनी किसी वाद्य यंत्र में नहीं होती। प्रत्येक गीत की भाख लगाने का ढंग अलग-अलग होता है। हर गायक को पूरा ज्ञान होता है कि उसे कहाँ से भाख को उठाना है और कहाँ पर इसे छोड़ना है अथवा विश्राम देना है।

भाख के गीत भी पृथक होते हैं। सभी गीतों पर भाख नहीं चढ़ती।

भौगोलिकता के स्वभाव पर भाख के भिन्न-भिन्न भेद हो जाते हैं। नूतन जी के अनुसार स्वर के आधार पर भाख के मुख्य तीन भेद हैं -

1. इकहरी भाख इस में कोई घुमाव-फिराव नहीं होता। एक-एक शब्द पहचाना जा सकता है। इस का प्रचलन नगरों नगरोटों के घोड़ी-सुहाग गीतों में अब भी विद्यमान है।

धुमावदार भाख (फेरमां भाख)

यह शिवालिक तथा हिमालय के देहातों तक ही सीमित हैं। इस में कई घुमाव-फिराव होते हैं।

त्रोड़क : इस में वे भाखें आती हैं जो गीत की आधी पंक्ति से ही भाख चढ़ना आरम्भ हो जाती है। और अवरोह के उपरान्त तुरन्त शेष पंक्ति के शब्दान्त से आरोहित हो जाती है। इस का आरोहन रुक-रुक कर टूट-टूट कर होता है किन्तु इस में विश्राम नहीं होता और टोली के हर गायक के भाख

चढ़ाना और भरथी भरना पड़ता है क्योंकि इस में घुमाव-फिराव अधिक मात्रा में होते हैं। किन्तु त्रोड़क में भाख इतनी लम्बी अवधि की नहीं होती।

लोकवार्ता विद् देश बन्धु डोगरा नूतन के अनुसार डुग्गर क्षेत्र में प्रत्येक भाख का अपना एक पृथक क्षेत्र होता है। कहीं पर दरिया की सीमा है। कहीं पर पर्वत अथवा पहाड़ी श्रृंखला की सीमा है। जिस प्रकार डुग्गर में भान्त-भान्त की बोलियाँ अपने नाम के साथ बोली जाती हैं, ऐसी ही भाखों का स्वभाव है। चम्बे आली, कांगड़ी और नूरपुरी भाखों की भाँति, डुग्गर में भी भाखों के कई उपरूप हैं, यथा: सुमरती भाख (सुमरता) की भाखा पंगास्ती भाख (पंगास्ता की भाख) बूहली भाख (बूहला की भाख) बन्दरालती भाख (रामनगर की भाख) मल्लड़ भाख (घोरड़ी की भाख) मरठैह्ली भाखर (मरोठी की भाख) डिग्गी भाख (बिम्हाग की भाख) जम्मू आली भाख (जम्मू की भाख) जन्द्राही भाख (जन्द्राह की भाख) द्रोहड़ी भाख (द्रूड़ की भाख) चपाली भाख (चपाल की भाख) तथा लङैही भाख (अखनूर) की भाख आदि।

ढोलरु

लोकवार्ता विद सौरभ के शब्दों में-जम्मू के ऊपर वाले भूभाग क्षेत्र में और हिमाचल के निचले इलाकों कांगड़ा ऊना, विलासपुर, हमीरपुर, चम्बा आदि में लोक सम्पदा की एक विशेष धरोहर गीतिकाओं के रूप में प्रचालित है जिसे ढोलरु की संज्ञा से जाना जाता है। वस्तुत: ये गीत ढोलरु नामक छोटे ढोल की ताल और लय पर गाये जाते हैं शायद इस लिए इन्हें ढोलरु की संज्ञा से जाना जाता है। विलासपुर के इलाके में ढोलकू के साथ-साथ शहनाई भी प्रयोग होती है।

ढोलरु ऋतुपरक गीत माने गए हैं और इन का गायन प्रथम चैत से शुरु होता है। इन्हें तीन स्तरों में रखा जा सकता है। प्रथम स्तर पर गाये जाने वाले गीतों को 'पहला नां' कहा जाता है। प्रथम चैत से लेकर आधे माह तक ये गीत गाये जात हैं। नव वर्ष के शुभ दिन का नाम लोग ढोलरुओं से सुनाना पसंद करते हैं। ऐसा अति शुभ और कल्याणकारी माना जाता है।

दूसरे प्रकार के ढोलरु बलिदान गाथाओं पर रचे गए यथा - अहला की कूह्ल, कलोहे दी बां तथा धोवन आदि। तीसरे प्रकार के ढोलरू प्रेय प्रसंगों और रल्लियों के मेले के साथ जुड़े हैं - यथा रांझू, फुलमू, गंगी आदि।

एक शोध के अनुसार अभी तक 25 ढोलरू संकलित किए है।

ढोलरु गाने वाले अधिकतर टोकरियाँ बुनने वाले होते हैं। ये अपने आप को शिव भक्त मानते हैं। शिव विवाह के समय इन के पूर्वजों ने मंगलगान गाये थे। शिव जी और पार्वती इन के गीत सुनकर अति प्रसन्न हुए और इन्हें आशीर्वाद दिया कि वर्ष के प्रथम मास में समाज इन्हें सम्मान की दृष्टि से देखेगा।

'ढोलरु' सौरभ जी के अनुसार यद्‌यपि लोक गीतिकाओं के तौर पर गाए जाते हैं पर इन का आधार गायकी विशेष है जिस में अनेक रागों को पकड़ा जा सकता है। पहाड़ी राग के अतिरिक्त राग सांरग, भैरवी, कहरवा आदि इन गीतिकाओं में प्रयोग होते हैं-

ढोलरु मात्र लोक गीत नहीं अपितु लोकमानस की विरासत हैं।

डुग्गर में भी चेती गीतों को ढोलरु नाम से अभिहित किया जाता है। डोम जाति के गायक घर-घर जा कर प्रत्येक घर में जाकर बसन्त आगमन की सूचना ढोलरु गीतों से देते हैं।

कई लोकवार्ता विद् रितड़ियाँ और ढोलरु को एक ही लोकगायकी की विधा मानते हैं। इन संगीतमय गीतों के कुछेक उदाहरण देखिए -

आई बसन्ती ब्हार, करीरां पौंगरियां
गले चंगीड़े हार ते मुण्डै बौंगड़ियां।

तथा-

फुल्लें पर भौरें पाया फेरा,
कलियें पर भौरें पाया घेरा,
सुनाकी आई रितड़ी

तथा

ए राम पैह्ला ते फुल्ल नाज जी दा
दूजा निम्मोहारी
हींद चलै घर अपनै
आई रित सोहे दी ब्हार।
रितु ते फिरी-फिरी आइया रामां,
मोआ निं फिरेआ कोई।
भादो म्हीनै कृष्ण माहराज जरम लेआ,
फौंगन म्हीनै सांतबनी
जियो फौगना।

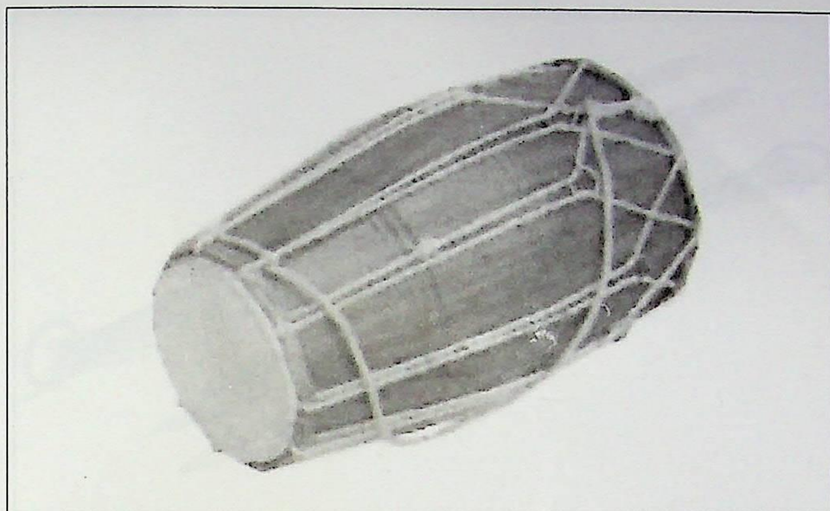
चैतर म्हीनै नारान नै व्याह् कीता,
सीता दा जरम ते दुनिया दा धर्म,
जियो फौगना।

लक्ख तारा राम दै जम्मै लाया,
चन्ने-सूरजे मुख टपलेगे,
लक्ख जोधा, राम दी जान्नी चली।
अंदर दुनियां पेई गबारी।
चन्नन कट्टी राजे जनकै,
चन्नन वेद ऐ लाई।
बैठे ब्रह्मा ते निशनो आई,
बज्जन कैह्लां गैह्रियां आई।

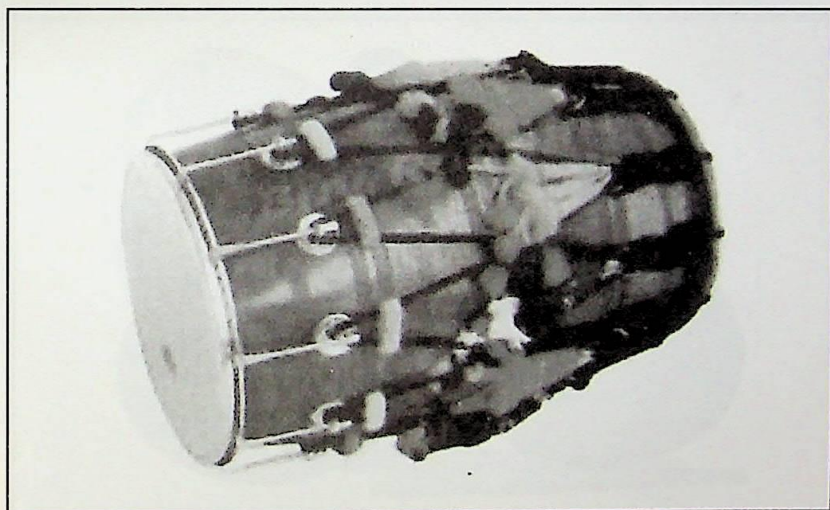
रितड़ियाँ (ढोलरु)

पैह्ले तां नां लैना राम दा,
जिन्नै सारी दुनिया बसाई ओ
जिन्नै दस्सेआ संसार ओ।

लोकवाद्य



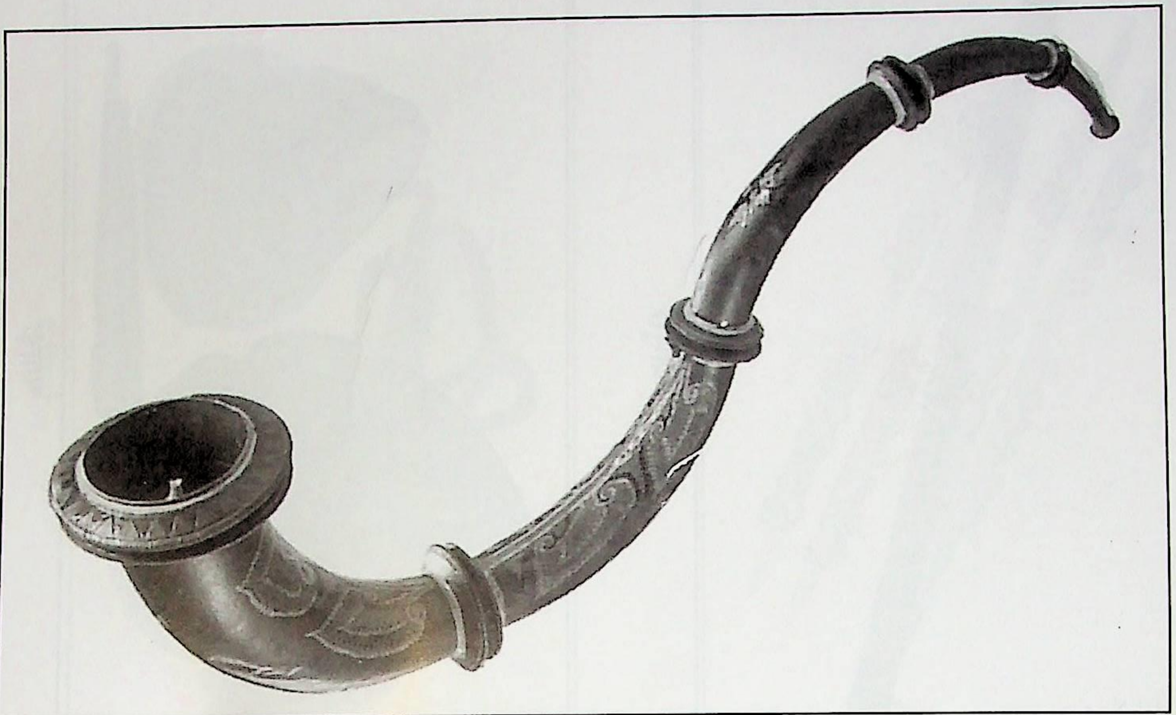
ढोलक



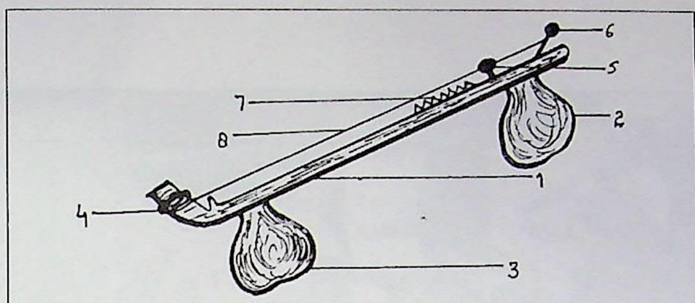
ढोल

साभार : जम्मू प्रान्त का लोक संगीत – डॉ० भारत भूषण

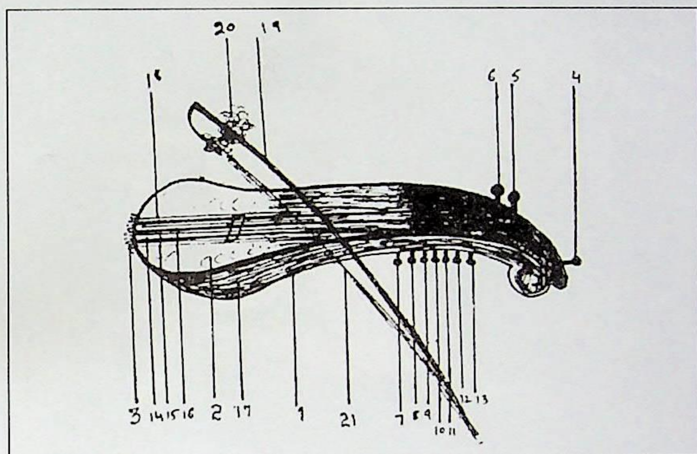
लोकवाद्य



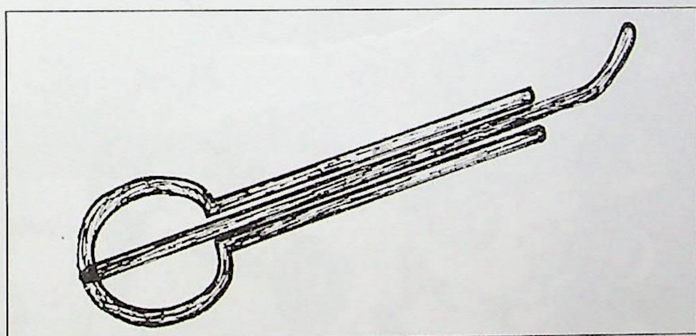
नरसिंहा



किंग



सारंगा



चंग

सन्दर्भ : शीराजा डोगरी अंक 112 वर्ष दिसम्बर 1990 में प्रकाशित वाद्य यंत्र

संकलन कर्ता : ब्रह्मस्वरूप सल्लर



पाडर के लोक गायक



लोकवाद्य



नरसिंहा

चढ़ेआ चेतर-बसाख ओ।
सदा हुन्दियां धर्मा जया हो।
बज्जेआ ढोलरु, आया बेरहीन दीन
बज्जेआ, ढोलरु असें बी औना ऐ,
ए दिन ब'रे हीन औगे।....

गीतड़ू

'गीतड़ू' प्रकाश प्रेमी के शब्दों में 'डोगरी लोक गीतों की सब से समृद्ध और विशाल क्षेत्र में फैली विधा है। राजौरी से लेकर सुदूर हिमाचल तक गीतड़ू गाए जाते हैं और उनके ताल पर नृत्य होता है। इन गीतों में संगीत, छन्द और विषयों की विविधता है।

'ग़ीतड़ू' में संगीत के लिए मुख्य साज़ ढोलक होता है। इस के अतिरिक्त चिमटा, बांसुरी, थाली, किंग आदि वाद्य यंत्र भी प्रयोग में लाए जाते हैं। एक गायक टोली में दस से बारह तक गायक होते हैं। औरतें भी टोली में सम्मिलित होती हैं। नृत्य से पूर्व टोली दो भागों में बंट जाती है। गीत का आरम्भ प्राय: नर्तक करता है। गीत साधारणतया छोटे होते हैं। जो प्राय: पाँच-छ: वाक्यों पर आधारित होते हैं जिन्हें टप्पे कहते हैं। एक-एक टप्पे को कई-कई बार दोहराया जाता है। जब नर्तक का पाँव रुकने थमने लगता है। दूसरे शब्दों में गीत के पद की आवृति के कारण वोरियत सी पैदा होने लगती है तो नर्तक रुककर आगे का टप्पा आरम्भ करता है जिसे दोनों दल बारी-बारी गाते हैं।

गाथा गीत का भी नृत्य में प्रयोग होता है प्राय: ये सभी गीत चलन्त होते हैं, यथा-

मैहलें शोर पेआ लुट्टेआ कड़छ पतीला
मैहलें चोर पेआ, लुट्टेआ पलंग रंगीला॥

नर्तक के पाँव और संगीत के बोल में पूरा ताल मेल रहता है। यदि गीत

धीमी तर्ज पर आधारित हो तो नर्तक के पाँव में भी नृत्य के समय धीमापन आ जाता है। ऐसा प्राय: इस प्रकार के गीतों में देखा जा सकता है।

हत्थ फड़ी दन्दली दरारी हे
बुरे हुन्दे गाड़ जंगलाती है।
कप्पी लैना चीड़े दा चोटू हे
छिक्की लैना तेरा मड़ी फोटू हे।

अथवा

पतनै दा ढलै बनजारा हो
सिरे पर चूड़ियै दा खारा हो।
भाइया तेरा चूड़ियाँ चढ़ान्दा हो।
भावो तेरा हत्थ बड़ा भारा हो।

गीतड़ू में छन्दों की विविधता के दर्शन भी होते हैं। इनमें छोटे और बड़े दोनों प्रकार के छन्द मिलते हैं। यथा -

रामबन पुल बनेआ, पेहलै थी छड़ी सेतर।
शिड़का हुण बनियाँ, पैह्लै था छड़ा लेतर।
रामबन पुल बनेआ, बनेआ बाझ गगरिया
मेरी तेरी प्रीत लग्गियै लग्गियै बाझ खारिया

तथा -

मेरे उट्ठी कलेजै पीड़ हुन मैं नेई बचदी
तौल करो, तौल करो
हून मैं नेई बचदी
देओ माहिये गी तार
खबर करो, खबर करो
खबर करो मेरे माहिये गी
जिस लामां लेइयां चार

प्रकाश प्रेमी के शोध के अनुसार इन गीतों के श्रृंगार, वीर, करुण, हास्य और वात्सल्य रस तथा भक्तिभावना की झलक भी मिलती है। यथा -

1. अंगियै दा बीड़ा खोड़ हुस्सड़ै मर गेइयां
   बुड्ढड़ै दा पीछा छोड़ हुस्सड़ै मर गईयां - श्रृंगार रस

2. नेईं छड्डनी कश्मीर भौएं लक्ख जतन करो।
   जुद्दै इच लड़दे वीर भौएं लक्ख जतन करो। - वीररस

3. बड्ढो निं जंगल जाड़ लोको अकल करो।
   राखे बढ़दे बाढ़ लोको अकल करो -हास्यरस

4. धारा पर ठनकी घुंघराला हे आया मेरा रुपनु भुआला हे।
   अट्ठ बकरी ते सट्ठ भेडां हे इय्यै मेरे रुपनू दी खेडां हे। -वारसल्य

5. गाइयां कौन चरान्दा हो प्रभु वन में
   मक्खन कौन चुरान्दा हो प्रभु वन में -भक्ति भावना।

विषय

प्रकाश प्रेमी जी के अनुसार गीतड़ू विभिन्न विषयों पर आधारित हैं। इन में प्रकृति, समाज, रीति-रिवाज देश भक्ति, व्यवसाय आदि हर विषय पर गीतड़ू मिलते हैं। इन गीतों में लोक-विश्वास का पुट भी मिलता है और उपदेशात्मकता का स्वर भी मुखारित है। डोगरी में ऋतु सम्बन्धी गीतड़ू भी पर्याप्त संख्या में उपलब्ध है। अधिकांश गीतड़ू प्रेम सम्बन्धों को लेकर रचे गए हैं। इन गीतों में डुग्गर की लोक संस्कृति प्रतिबिम्बित है।

झंझोटी

वे छोटे-छोटे गीत जो भिन्न-भिन्न सुर तथा तान से गाये जाते हैं। उन्हें झंझोटी कहते हैं। ये विरह मिलन, ऋतु-पर्व तथा कृषि कर्म सम्बन्धी गीत हैं, यथा :-

रुपणु पुहाल घरे ईला हो,
कालका जो छतर चढ़ाली हो।

रुपणु पुहाल घरे ईला हो
सिव जी जो देली नवाला हो।

टप्पे

पंजाबी टप्पों की भाँति डोगरी टप्पों में भी चुलबुलापन होता है। यथा :-

कोठे चार पान्नियां-बिच्च तीर नेई ऐ,
राजा चंगा भला कन्ने हीर नेई ऐ।

टप्पे प्राय : विवाह उत्सव पर ढोलक पर गाये जाते हैं, ये महिलाओं के गीत हैं।

चन्न

लोक गीत चन्न का आधार भी संगीत ही है। इस गीत का आरम्भ 'चन्न' शब्द से होता है। इन गीतों में सरसता और मधुरता होती है। गायक इस पहले मध्यम स्वर में और फिर धीरे-धीरे ऊँचे स्वर से उठाता है। इस का विषय 'प्रणय' होता है। यथा :-

चन्न म्हाड़ा चढ़ेआ लग्गा पारै किंगरी
चन्ना गी बो प्यार देना नत्थ करियै खिंगरी
मुक्कना बसोस मेरी जान बो।
मिलना जरुर मेरी जान बो।

बारह मासे

वियोग पक्ष को सशक्त करने के लिए बारह मासे गाने का प्रचलन डुग्गर में प्राचीन समय से है। इन गीतों में प्रिय विरह से पीड़ित गायिका के भावों को अभिव्यक्ति मिलती है। यथा :-

---

साभार :
हमारा-साहित्य 2003 (लोक संस्कृति विशेषांक) में प्रकाशित प्रकाश प्रेमी का शोध लेख-डुग्गर के नृत्य गीत-गीतड़ू एक सर्वेक्षण

बसाख बीतेया जेठ चढ़ेया, आई ऐ सोए दी ब्हार,
नेईं आया तेरा सुख-सनेहड़ा, ते नेईं आया चिट्ठी काट।

वेल

व्यवसायिक गायक विवाह आदि पर जो गीत गाते हैं, उन्हें ईनाम मिलता है। ईनाम पाने पर गायक विशेष सुरों में शब्दों को उछालते हुए धन्यवाद प्रकट करने के लिए जो गीत गाते हैं, उसे 'वेल' कहते हैं। यथा :-

वेल-वेल-वेल
थोआड़ी बधी रवै बेल
तुसे रुपइया दिता ऐ।

बलौनी

देवी-देवता का आह्वान करने के लिए जोगी ढोलक पर तीव्र स्वरों में जो गीत गाता है, उसे बलौनी कहते हैं यथा :-

जल जलै च कमल फुल्ल
कमल फुल्ल पर बजल सिल
बजल सिर पर धौल
धौल पर धरती
धरती पर मात लोक...आदि।

कारक

संस्कृत शब्द कारिका का अपभ्रंश रूप डोगरी में कारक है। देवी-देवताओं, लोक देवताओं की गाथाओं को डोगरी में कारक नाम से अभिहित किया जाता है। वैसे कारिका बहु अर्थ बोधक शब्द है और एक रागिनी विशेष का नाम भी है। डोगरी में भी कारक एक विशेष लोक राग में गाई जाती है- कारक में देवी देवताओं की स्तुति के अतिरिक्त अमर शहीद आत्माओं का यशोगान सरस एवं ओज पूर्ण शब्दावली में होता है।

डोगरी कारक की अपने कुछेक विशेषताएँ हैं जो निम्न हैं :-

1. डोगरी कारक विशेष पदों में सृजित एक गेय गाथा है। इसके अन्तिम पद का अन्तिम शब्द 'ई' स्वर से जुड़ा होता है।

2. कारक का नायक प्रायः दैवी पुरुष, शहीद, साधु-संत या महापुरुष होता है।

3. देवता का स्थान भी निश्चित होता है। गारड़ी जा जोगी देवस्थान पर निश्चित तिथि को कारक गायन करता है।

4. कारक से पूर्व बुलौनी राग गाया जाता है। इस में देवता का आह्वान किया जाता है।

5. कारक का अन्त करुण या शान्त रस में होता है।

6. इस में श्रृंगाररस का पूर्ण अभाव होता है।

7. इस में मंगल चरण नहीं होता है।

8. इस में अति मानवीय घटनाओं का समावेश होता है।

9. इस में उपदेश की हल्की सी झलक मिलती है।

10. कारक में अमर या बलिदानी आत्मा को कुल देवता या ग्राम देवता के रूप में मान्यता दी जाती है।

11. ये प्रांयः स्तुति रूप में गाथा शैली में प्रस्तुत की जाती हैं।

12. कारक गायन के समय सम्बन्धित देवता के चेला को एक अलौकिक शक्ति का अनुभव होता है।

13. कारक गायन में जोगी किंग वाद्य यंत्र का तथा गारड़ी ढोल का प्रयोग करते हैं।

14. कारकें प्राय: क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित होती हैं किन्तु कभी-कभी इन का क्षेत्र भौगोलिक सीमाओं को पार भी कर जाता है।

बार

प्रो० नीलाम्बर देव शर्मा के मतानुसार - 'वीरों से सम्बन्धित गाथाओं को 'बार' कहते हैं। इन सें वीर पुरुषों, राजपूतों, योद्धाओं की शूरवीरता के कारनामें पद्य-गाथा के रूप में मिलते हैं। कभी-कभी बारां देश-प्रेम और प्यार से भी सम्बन्धित होती है।

डॉ० लक्ष्मी नारायण मिश्र ने भी प्रो० नीलाम्बरदेव के मत का समर्थन करते हुए लिखा है :-बारां हिन्दी के वीर शब्द का विकृत रूप है। जिस का अर्थ शूरवीर अथवा पराक्रमी है। चूंकि इन गाथाओं का विषय पराक्रम एवं साहस से सम्बन्धित है। अत: ये बारां अथवा पराक्रम सम्बन्धी गाथाएँ कहलाती हैं। डॉ० ओम प्रकाश गुप्त के अनुसार-बारें वीरों से सम्बन्धित गाथाएँ हैं। डॉ० अशोक जेरथ वार को वीर रस प्रधान रचना मानते हैं।

डोगरी 'बार' प्राय: 'दरेस' जाति के फकीर गाते हैं। दरेस उर्दू शब्द दरवेश का विकृत रूप है। ये लोग मुसलमान हैं और एक विशेष वाद्य यंत्र का प्रयोग करते हैं जिसे लोक भाषा में 'तुम्बा' कहते हैं।

लोक गाथा

प्रबन्धात्मक गीतों के लिए डोगरी में दो विधाएँ प्रचलन में थी (1) कारक और 'बार' किन्तु शेष प्रदेशों में इन के लिए एक ही विधा है जैसे पंजाब में 'बारां' के अन्तर्गत सभी गाथाएँ समाहित हैं।

संस्कृत साहित्य में 'गाथा' शब्द का प्रयोग हुआ है। यथा गांथा-सप्तशती आदि। प्रो० रामनाथ शास्त्री के सुझाव पर अब डोगरी में कारक और बार के लिए 'लोक गाथा' का प्रयोग होने लगा है।

'डुग्गर का लोक साहित्य' पुस्तक में विषय वस्तु के आधार पर लोक गाथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है :-

1. देवगाथाएँ (कारकें)

2. ऐतिहासिक गाथाएँ (बारें)

3. योगपरक गाथाएँ (कारकें)

4. प्रणय गाथाएँ (बारें)

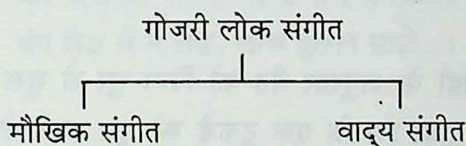


अष्टम अध्याय

गोजरी लोक संगीत

गोजरी डुग्गर की जनजाति गुज्जरों की भाषा है। वैसे तो गुज़र भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में बसे हुए हैं। इन में कई हिन्दू कई मुसलमान और कई जैन हैं। किन्तु डुग्गर में जो गुज्जर रहते हैं वे प्राय: सभी मुसलमान हैं। इस्लाम में गीत-संगीत नृत्य आदि को प्रोत्साहन नहीं दिया जाता, अत: डुग्गर के गुज्जर भी गोजरी लोक संगीत की कई विधाओं को भूल भी गए हैं। फिर भी इन की कुछेक परम्पराएँ अभी भी जीवित हैं जिन का परिपालन इस जन जाति के लोग आज भी कर रहे हैं।

गोजरी के प्रख्यात विद्वान जावेद राही ने गोजरी लोक संगीत को दो भागों में विभाजित किया है :-



मौखिक संगीत

जावेद राही के शब्दों में-गुर्जर कौम के लोक संगीत के विकास की गाथा बड़ी रंगीन व दिलचस्प है। यहाँ यह संगीत एक ओर अरबी और ईरानी लोक संगीत से प्रभावित लगता है। वहीं दूसरी ओर इस का वाद्य संगीत भारत के पुराने देशी संगीत से प्रभावित लगता है। पुराने समय में मध्य एशिया के गोजरी संगीत में भारत के गुर्जरों के संगीत की झलक साफ झलकती है।

किन्तु यह भी सत्य है कि इस्लाम के प्रभाव के कारण इस संगीत को कुछ नुकसान भी सहना पड़ा। इस रवायती संगीत में ह्रास तब हुआ

जब इस में केवल सूफीयाना संगीत शेष रहा और कला की दूसरी विधा नृत्य इत्यादि उपेक्षित हो गई क्योंकि वे इस्लाम के नियमों के अनुरूप न थी। यही कारण था कि गुर्जर कौम का रुझान धीरे-धीरे मौखिक संगीत की ओर हो गया। इनके संगीत का तकरीबन अस्सी प्रतिशत भाग मौखिक संगीत है।

गोजरी लोक संगीत की कुछ विशेष विधायें जो अधिक प्रचलित हैं इस प्रकार हैं :-

बैंत

यह गोजरी लोक संगीत की एक अनूठी विधा है। बैंत मौखिक लोक संगीत की वह विधा है जो आम तौर पर बिना किसी वाद्य यंत्र की संगत के ही गाया जाता है। इस में प्रेम, व्यवहार, समाज सुधार तथा धर्म-आदि का पुट होता है। कहीं-कहीं इस में दार्शनिकता भी झलकती है।

बैंत को अकेला गायक भी गा सकता है और गायकों का जोड़ा भी गाता है।

जावेद राही के अनुसार बैत को निम्न सुर से शुरू करके उच्च सुर में गाया जाता है तथा इस के एक टुकड़े को पूरा करने के लिए निरन्तर चार सांस जितना समय लगाना पड़ता है जबकि बारामाह और 'सी हरफी' गाने में आठ सांसों की जरूरत होती है। इस में सुर बहुत ऊँचे होने के कारण आम तौर पर गायक अपने कानों में उंगली डाल लेता है। यथा :-

आते वेसाख चिड़ी हर डाली बोले,
आइओ अम्मां अम्बु चिड़ी वतन ना चलां
वतन तिना प्यारो चिड़ी अल्लाह मिला दे
आते बेसाख चिड़ी हर डाली बोले,
आइओ भांभी भाइओ वतन न चलां...।

(वेसाख)

कैंची

दरशी गा बना बिचा दिल मेरो जाने
गइयो मेरो मुन्शी अल्ला नबी जाने
लगी कैंची दिला गी बो दिल डाढो तंग वे
गोली मारो राखिया गी चलां तेरे संग बे,
दरशी गा बना बिच ठंडी-ठंडी छां
गइयो मेरो मुन्शी अल्ला को ना
लगी कैंची दिला गी...आदि।

बन जारो

लौंग ले दे चन्ना तू गली फिरे बनजारो।
लौंग लेनो थो जरूर मैहगो बेचे सन्यारो।
लौंग लाऊँ जे न लाऊँ लौंग मारे लश्कारो।
बंग ले दे चन्ना तूं गली फिरे बनजारो।
बंग लेनी थी जरूर, मैंहगी बेचे बनजारो।
बंग लैङ जे न लैंङ, लोक दुश्मन साढ़ो...।

सपाई

अपनो देस बचानो सिपाइआ
डर-डर के मर जानो
डर-डर के मर जानो
अपनो देस वचानो सिपाइआ
डर-डर के मर जानो
सब ते उच्ची शैल प्हाड़ी
रस्सो पकड़ चढ़ जानो
रस्सो पकड़ चढ़ जानो
अपने देस वचानो सिपाइआ
डर-डर के मर जानो...

माहिया

गोजरी गीतों में माहिया गाने की कम से कम छः धुनें हैं। इस विधा में मौखिक तथा वाद्य दोनों पहलू प्रधान है।

माहिया जावेद राही के शब्दों में 'गोजरी' लोक संगीत का एक महत्वपूर्ण अंग है जो नस्लों से चला आ रहा है। इसे गाने का एक खास अंदाज है। टप्पा, फोला, निं गुलाब किया, दो पतर चिट्टी चादर बगैरा इस की खास किस्में हैं। इस में गाने के साथ-साथ वाद्य यंत्रों का भी स्थान रहता है। माहिया गाने में बाँसुरी अलगोज़ा, जोड़ी, ढोलक, ढोल और सारंगी इत्यादि लोक साज बजाये जाते हैं।

उदाहरण :-

बागां बिच आ माहिया कंधो शीशो हुं देऊगी
कुंडो चीर कड़ा माहिया।
बागा बिच आ मक्खिये, हूँ परदेस चलुं
मेरो प्यार छुपा रक्खिये।...आई।

बोल्ली

यह श्रम परिहरण सम्बन्धी गीत हैं जो कठिन परिश्रम करते समय गाए जाते हैं। आम तौर पर ये समूह में काम करते हुए गाए जाते हैं, यथा :-

1. छेको लाओ इलल्लाह जी
   जोर बधाओ इलल्लाह जी

2. हर दम बोलो या नबी
   बड़ी बन्ने ला नबी।

बार

बार में बहादुर लोक नायकों की दास्तान जावेद राही के शब्दों में संगीत के साथ गाई जाती है। 'बार' में प्रेम प्रसंग, युद्ध में बहादुरी के किस्से इत्यादि

कई विषय होते हैं जिन्हें शौक से सुना जाता है स्थानीय लोक गायक विवाह शादी उत्सवों पर 'बारें' लोगों को सुनाते हैं।

बार पीरीजिन या मीरासी गाते हैं। इस में सारंगी का प्रयोग होता है।

गोजरी की प्रसिद्ध बार-नूरा, ताज़ा, जंगबाज, बरसिया, मिंया ढोलन, शोपैया बगैरा भी है। ये एक ही धुन में गाई जाती है।

लोक गीत

गोजरी में लोकगीतों की भी कई विधाएँ हैं किन्तु ये गीत जावेद राही के शब्दों में संगीत की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। इन गीतों में उल्लेखनीय हैं :-

1. बाबुल
2. डोली
3. पन्नी
4. भानू
5. सुहाग
6. बीड़िया
7. घड़ोली
8. खर्री तार
9. जंज
10. सुरमो
11. पंझरी
12. लाला
13. कैंली
14. बनजारा आदि।

डोली

लोक गीत डोली का एक दृष्टान्त निम्न है :-

मेरी डोली के कोय हत्थ न लाइयो डोली मी ना आप गैलिये।
मेरी स्हेली लावे सुरमो दुक्खां दी काय गल्ल करियो
मेरी डोली के काय हत्थ न लाइयो, डोली मीना आप गैलिये
तिना विदा करे तेरी अम्मा दुक्खा दी काय गल्ल करिये।
मेरी डोली के काय हत्थ न लाइयो, डोली भीना आप गैलिये,
तिना विदा करे तेरी भाभी दुक्खां दी काय गल्ल करिये।
मेरी डोली के काय हत्थ न लाइयो, डोली मीना आप गैलिये।

लोक वाद्य यंत्र

गोजरी लोक संगीत में निम्न वाद्य यंत्रों का उपयोग किया जाता है :-

बिसिली

जावेद राही के शब्दों में 'बिसिली गोजरी लोक संगीत का एक विशेष वाद्य यंत्र है। यह तिकोनी आकृति का होता है। यह साज़ अन्दर से खोखला होता है। इसे मुँह में रख कर बजाने वाली नली के इलावा दोनों किनारों पर सुराख होते हैं जिसे वादक मुंह की नली से सांस के द्वारा बजाता है तथा उसकी उंगलियां किनारों के सुराखों पर धुन निकालने में सहायक होती हैं। मिट्टी के बने इस वाद्य यंत्र को आग में पका कर तैयार किया जाता है। इस लोक साज से कई प्रकार की लोक धुनें निकाली जाती हैं। इस साज की धुन बाँसुरी से मिलती जुलती है।

अलगोज़ा

गुर्जर समाज में अलगोज़ा एक अन्य साज़ है। मुंह के भाग को छोड़

सन्दर्भ : हमारा साहित्य 2015 गुज्जर विशेषांक
लेख :- गुर्जरों का रिवायती संगीत-जावेद राही अनुवाद अज़रा चौधरी

कर यह लगभग बाँसुरी के आकार का होता है। यह पहाड़ी बाँस को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट कर बनाया जाता है तथा इस पर लोक धुनें बजाई जाती हैं।

अन्य साज़

1. बांसुरी
2. जोड़ी
3. ढोलक
4. ढोल
5. सारंगी इत्यादि।

इस के अतिरिक्त पत्तों को लपेट कर तथा नली का आकार दे कर भी उन्हें बजाया जाता है।

गुज्जर उंगलियों को मुंह में डालकर और जीभ को दोहरी करके तरह-तरह की अवाज़े निकालने में भी माहिर हैं।



सन्दर्भ :- हमारा साहित्य 2015, गुज्जर विशेषांक

नवम् अध्याय

पहाड़ी लोक संगीत

डुग्गर के राजौरी-पुंछ जनपदों की भाषा 'पहाड़ी' है। इसे चिभाली, पुठोहारी, पुंछी आदि नामों से भी अभिहित किया जाता है। इस में सम्बन्ध कारक की विभक्तियाँ डोगरी से भिन्न पुठोहारी के समान ना, ने, नी हैं। उच्चारण में मूर्धन्य 'ल्ह' का इस में अभाव है 'मूर्धन्य ण' का प्रयोग मनमाने ढंग से किया जाता है। इस में 'य' ध्वनि डोगरी के समान 'ज' में उच्चारित होती है। इस में ओंकारान्त को उकारान्त में परिवर्तित करने की प्रवृत्ति मिलती है इस में बलहीन स्वरों का लोप होता है। चिभाली का ध्वनि तंत्र लहंदा से कुछ-कुछ मिलता जुलता है। यथा 'ए' ध्वनि ऐ में बदलती है। यथा 'नौकरे' का पहाड़ी रूप नौकरै है।

लोक संगीत

पहाड़ी का लोक संगीत हमें दो विधाओं में उपलब्ध है। एक को हम लोकगीत और दूसरे को लोक वाद्य यंत्र कह सकते हैं। पहाड़ी संगीत में हमें लोकगीतों के कई रूप मिलते हैं जिन में निम्न उल्लेखनीय हैं :-

चन्न

यह पहाड़ी का सर्वाधिक लोक प्रिय लोकगीत है। इस गीत में 'लय' है अतः इसे गा कर बोला जाता है। गोजरी की भाँति चन्न का गायन अकेला ही गायक पहले सुर को धीमें से और बाद में उच्च सुरों से गाता है। कई गायक चन्न गायन में कानों पर एक हाथ भी रखते है। चन्न गीत मधुरता बिखेरता है। अतः इसे बहुत ही पसंद किया जाता है। इस में प्रायः वाद्य यंत्रों का प्रयोग नहीं होता उदाहरण :-

चन्न माढ़ा भाले-भाले कम्पनी में दस्ते
धियां परदेसना नीं, कुन दस्सै रस्ते।
चन्ना इक मारनी, मुड़ी गायां मंगली
चन्ना नी निशानी, छाप माढ़ी औंगली।
चन्ना चन्न चढ़ेया नी, आड़ियें दे ओहले,
कप्पी छोड़ो डालियाँ ते चन्न बांदे बोलै। आदि

टप्पा

टप्पा गायन का प्रचलन पंजाबी, डोगरी, गोजरी की भाँति पहाड़ी में भी है। टप्पा में कसक, पीड़ा और वेदना भी झलकती है। इसे प्राय: एक ही गायक लम्बे सुर में गाता है। उदाहरण :-

बागें नै बिच बुल बुल बोलै, कस्सियें दे बिच लाली,
कट्टी कलेजा दाखल कीता, रेह् गया पिंजरा खाली,
बागें दै बिच बुलबुल बोलै, कस्सियें नै बिच पड़िया,
भाइयें बाज निं भैना सोवन, थम्में बाज निं कड़ियां,
बागें दै बिच बुलबुल बोलै, कस्सियें नै बिच पानी,
झुल्ली ब्हा बछोड़े आली, उड्डी गेई रेत नमानी
बाग साढ़े दै बिच बुलबुल बोलै, कस्सियें रुलकन पानी,
रली मिली कस्सियें रौला पाया, रुढ़ी गेई रेत नमानी,
बिचा रेतू दै छल्ला लब्बा, सोहनू नीं ओ नशानी।

डोली

पहाड़ी और गोजरी में 'डोली' लोक गीत बहुत ही लोकप्रिय है। वेटी की विदाई, ससुराल में बहू का स्वागत इस का मुख्य विषय होता है। इन गीतों में विछुड़न और आनन्द का मिश्रित भाव रहता है। उदाहरण :-

पार नक्के तो डोली आई है,
इस डोली बिच माड़ी महर आई है,

डोली उस्सिदा बीरां चाई है,
पार नक्के तो डोली आई है।
सारे आक्खन मुच बस व्याई है
बिच डोली दे ब्होटी आई है।

कैंची

कैंची विरह गीत है। कैंची काटने वाली वस्तु है और यह पहाड़ी गीतों में एक प्रतीक बन गई है। प्रेमी और प्रेमिका जो एक दूसरे की जुदाई में तड़प रहे हैं, यह कैंची उनके दिलों को तार-तार कर देती है। यथा :-

लगी कैंची दिला दी दिल डाढां तंग
जुल मोड़ेआ सज्जना अल्ला तेरे संग
लगी कैंची दिला दी।

ढोलना

यह भी एक विरह गीत है। यह ज्यादातर सावन मास की चाँदनी रातों में सामूहिक रूप से गाया जाता है। इस के बोल लम्बे-लम्बें सुरों में गाये जाते हैं। पुरुष और महिलाएँ पशुचारण करते इसे अलग-अलग धुनों में गाते हैं। उदाहरण :-

मियां ढोलना कड्डनियाँ रेशमी रुमाल वे
असें तुसें बिछड़ियां होई गए कई साल वे।

श्रम गीत

कड़ा परिश्रम करते समय थकान दूर करने के लिए पहाड़ी में जो लोक गीत गाए जाते हैं उस का एक उदाहरण द्रष्टव्य है :-

अल्ला बेली-इलल्लाह जी
चक्को गेली-इलल्लाह जी
इक्को हेली-इलल्लाह जी

लाओ छंडाऽ-इलल्लाह जी
छक्को तंदांऽ इलल्लाह जी
टप्पो कंधा इलल्लाह जी
जोर लगा के इलल्लाह जी
जान ठरहा के इलल्लाह जी
हत्थ बधाऽ के इलल्लाह जी

संस्कार गीत

पहाड़ी में बच्चे के जन्म से लेकर जीवन के अन्त तक के गीत उपलब्ध हैं जिन्हें संस्कार सम्पन्न करते महिलाएँ सामूहिक रूप से गाती हैं, यथा :-

पुत्र जन्म

लाला दूध पई मदानी, पुतर जम्मेयां माऊ ना नी
लाला आया असां मन्नता मन रही न्या
रब्बे मनाया सदेड़े ले रइयां...।

मंगनी

लाले नी नीती मैं शगन मगानियाँ
शगनां दे बेलै कश्मीर-घुमाई...।

घोड़ी

घोड़ी जे घोड़ी लाला किस मंगाइ
किस सौदागर मूल पाइआं

मेहन्दी

ए मेहन्दी मुच सोहनी मेहन्दी
जो लक्ख धोइये मोल न लैंदी...।

विविध लोक गीत

ढोल

यह एक प्रकार का विरह गीत है, जो जंगलों में पशुचारक गाते हैं, यथा :-

तेरी जेबा बिच ढोला गंदला
दिन दस गेऊ पूरे पन्दरां
में मुदतां गुजारियां बेई ढोला।

घटना गीत

किसी विशेष घटना से ये गीत सम्बन्धित होते हैं। यथा :-

मैं जुलेआं नौकरी माड़ी अम्बड़िए
नूँह दा रक्खी ख्याल
भला मुख लपड़िए
नूँह दा रक्खीं ख्याल...।

धार्मिक गीत :-

बगदी ए रावी बिच रुढ़दा मनका
हिन्दुआं दी गंगा मुसलमानां दा मक्का।
बगदी ए रावी बिच रुढ़दा काणा
अग्गें गुरु नानक पिच्छे बाला ते मरदाना।

बार

पहाड़ी में लोक गाथा के लिए पंजाबी की ही भाँति केवल एक ही विधा बार प्रचलन में हैं जो वीर-रसात्मक शैली में लम्बी धुन के साथ सारंगी या ढोल के साथ गाई जाती है। पहाड़ी में कई बारें यथा नूरा चौधरी शमस राज बल्ली आदि प्रचलन में है। शमस की बार की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :-

जितेया वे पुंछ वाला किला जम्मू गी दिती ताईआं
धन्न ओ जिनें दी माइयां, लुढ़कदियाँ ने कांगड़ियां
बे लो-लो मचदी आइयां, शावा वे शमस खां तेरी
ए बड़ी दुहाई वे।

सैल-उल-मलूक

सैफ-उल-मलूक इश्के-हकीकी से सम्बन्धित एक ऐसी गेय रचना है जिस का चलन पुंछ के गाँव-गाँव में है। प्रसिद्ध इतिहासकार के. डी. मैनी के अनुसार इसे पुंछ की सामाजिक जिंदगी में वही स्थान प्राप्त है जो उर्दू ज़वान में गालिब की शायरी को हासल है।

इस की कुछेक पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं :-

1. बागां दे बिच बुलबुल बोले
   कस्सियां बोलन पानी
   जिन्हां साढ़े सज्जन बिछड़े
   सबर उन्हां दी जानी

2. दिल मिले तां दोस्ती करिये
   मन मिले तां मेला
   संग मिले तां संगत करिये
   नेहीं तां भला अकेला।

इनके अतिरिक्त पहाड़ी में बालो, बैंत, बारांमाह् बोलियाँ, सिठनियाँ, सिपाही आदि और भी कई गेय विधाएँ हैं जिन को लोक गायक पर्व त्याहारों, विवाह शादियों तथा पशुचारण आदि करते समय गाते हैं। पहाड़ी में मृत्यु सम्बन्धी गीतों को वैण, कीरणे तथा अलाहुनीयाँ कहते हैं।

लोक वाद्य यंत्र

पहाड़ी लोक संगीत के लोक वाद्य यंत्र प्रायः गोजरी लोक वाद्य यंत्रों

से मिलते जुलते हैं। केवल कहीं-कहीं इन के नाम और उच्चारण में विभिन्नता है। प्रसिद्ध लोक वाद्य यंत्र निम्न हैं :-

1. बाँसुरी
2. अलगोज़ा
3. ढोलक
4. ढोल
5. सारंगी
6. जोड़
7. चिमटा
8. कैंसी
9. शंख
10. घंटी



दशम अध्याय

गादी लोक संगीत

गादी डुग्गर की जनजाति गद्दियों की बोली है। गद्दी डुग्गर के पर्वतीय क्षेत्र में रहते हैं। इन्हें आर्य जाति का अभिन्न अंग माना जाता है। डुग्गर में जिला कठुआ उधमपुर, डोडा, रामवन में इन की बस्तियां हैं।

लोक गीत

गादी बोली में जो गीत मिलते हैं, उन का सम्बन्ध पर्व त्योहार, मेला, उत्सव आदि से अधिक है। कई फुटकर गीत भी उपलब्ध हैं जिन में प्रेम, विरह, प्रकृति, चित्रण, नृत्य गीत आदि परिगणित किए जा सकते हैं।

गादी बोली में उपलब्ध लोक गीतों को निम्न वर्ग में विभाजित किया जा सकता है :-

शिवीण (अंचली)

नुआला उत्सव पर गद्दियों में शिवीण गाने की प्रथा है। इस में चार व्यक्तियों, कोटवाल, बटवाल, जोगी और पुरोहित की पूजा की जाती है और उन्हें नये वस्त्र पहनाकर अंचली गाई जाती है।

अंचली गीत में संगीत का प्रयोग होता है। जोगी ढोल आदि का प्रयोग भी कहीं-कहीं करता है। डुग्गर के गद्दियों में अंचली प्रायः एक ही धुन में गाई जाती है। इस का पद्य रूप इस प्रकार है :-

दक्खन देसेरा सिद्ध जोगी आया
औंदे जोगी अलख जगाया
बहुंदे जोगी धूणी धुखाई
लौंग लाइची दी धूणी धुखाई

बहुंदे जोगी मंदला लिखाया
लै सैंया अपने उधारा
आटे कूटे तेरा मंदला लिखाया
तिल्ले चौले तेरे कोठे भराये
लै सैयां अपने उधारा
बड़े बवरुए तेरे कोठे भराय
लै सैया अपने उधारा...

शिवीण (अंचली) उत्सव में चार गायक भी आमंत्रित किए जाते हैं और दर्शक ऊन से गूंथी माला को धूप देकर पैसे चढ़ाते हैं और नाचते हैं। महिलाएँ धुरैही गाती हैं। अंचलि में शिव की स्तुति की जाती है।

गसैन्तन

गसैन्तन अनुष्ठान में पुरोहित को बुलाया जाता है जो पूरी रात्रि देवी-देवताओं के स्तुति गीत गाता है। इन गीतों को 'गसैन्तन' नाम से अभिहित किया जाता है। गसैन्तन गद्दियों के अतिरिक्त अन्य कई प्रजातियों में भी आयोजित अनुष्ठान है। इसके आयोजन का लक्ष्य पशुओं परिवार तथा अच्छी फसल के लिए देवाराधना करना है।

धुरैही

यह गद्दियों का मन पसंद नृत्य गीत है। इस नृत्य में पुरुष और महिलाएँ सामूहिक रूप से या अलग-अलग नाचते हैं। इस में वाद्य यंत्रों का प्रयोग भी होता है। धुरैही गीतों में कई प्रासंगिक घटनाओं का विवरण भी मिलता है।

इस गीत का एक रूप इस प्रकार है :-

राम ते लक्ष्मण चौपड़ खेलै, सिया रानी कढदी कसीदा
इक बाजी बहियाँ, दूरी बाणे लाया, पाणी केरी लगदी प्यासा।
कुण होला सुणदा, कुण होला गुणदा, कुण प्याला ठंडा पाणी।
हार्ये सिआ होली सुणदी सिया होली गुणदी, सिया पिआली ठंडा पाणी...।

संस्कार गीत (विवाह गीत)

गंगा परी दा हो वियाह बो लग्गे गंगा परी दा हो।
परोहत पंडत सद्दे गंगा पारी दा हो
मंतर-तंतर बोले गंगा पारी दा हो
विपाह-बेतर लग्गे गंगा पारी दा हो
वियाहु नचने लग्गे गंगा पारी दा हो।
लाड़ी देखने सदाणी गंगा पारी दा हो

नृत्य गीत

गद्दी जन जाति के लोग नाचना, गाना और बजाना बहुत ही पसंद करते हैं। वे पर्वों, त्योहारों, शुभ-अवसरों पर अपना हर्ष नाच-गा-कर ही अभिव्यक्त करते हैं।

लोह्ड़ी पर्व पर इन में भी हिरण-नृत्य का आयोजन होता है तब ये सामूहिक रूप से नाचते और गाते हैं। यथा :-

हरन आया हरणोटा, राजे राम री प्रौली,
हरना दे सिंगडु सहोगे, जिहां मोती रे दाने।
इक बजदे डक डोऊ, राजे रामारी प्रौली,
हरन आया हरणोटा, मंगदा बकरोटा,
तुरत करे मजिहाणिये, असां जाणा दूरड़े
हरण आया हरणोटा, राजे रामरी प्रौली।

फाटेहड़

फुटकर गीतों को गादी बोली में फाटेहड़ कहते हैं। इन गीतों में विरह, मिलन, विछुड़ने का दर्द, प्राकृतिक चित्रण तथा मनोभावों की अभिव्यंजना होती है।

ये गीत संगीतमय होते हैं। गद्दी चरवाहे पशुचारण करते हुए भी इन को सुर और ताल के साथ गाते हैं :-

संगीतमय गीत

1. भेड़ा दिया पाल्हणुआ, घरा जो इच्छे हो।
   घरा जो किंहा इच्छु भेड़े सो लाया हो।
   सौ सुइयां भेड़ लियां, परासों सुइयां हो।
   धारा दी धूरी, मन संघड़ लग्या हो।
   सुंघड़ लग्गा हो सुंघडौणा, मन बुरी लग्गी हो।
   घरा जो किहा इच्छु, भेड़े सो लाया हो...।

2. चंबे दी आ धारा पैण फुहारा
   उडणू तां भिज्ज गिआ सारा
   लाडो दा चित्त लगदा चम्बे दीआ धारा
   घर-घर चकरु घर-घर बकरु
   घर-घर मौज बहारां
   गोरी दा चित्त लग्गा चम्बे दीआ धारा।

प्रेम गीत (भूंकू-सुन्नी)

ओ बाहर जाओ निक्केयो-छुक्केयो, कुतै कस जो लगे हो।
छोटड़ा गदेट्टा, मेरी भैन जी, काली-भौर दाढ़ी हो।
कठी बो तेरे घर मानुआं, कठी बो चलूरा हे।
भट्टी-टक्करी घर बो मानुआं, लाहुला जो चलूरा हे।
अन्दर जो आइयां बो मानुआं, मंजा बो डाह्न्नी हे।
मंजलू डाहल्ली बो मानुआं, हुक्का बो प्याली हे।
हुन्दे ते हुन्आन्दे भूकू छट्ठड़ा महीना हे।
छट्ठड़े महीने भूकू मेरा, जो बाहर आया हे।
कुण जिनी रिता सुन्नियें, कुन जिन महीना हे।
सैरकनी रित भूंकुआ, काती दा महीना हे।
ते छमें नैना भूको मेरा राजना जे लगदा हे।

ते भट्टी तेरी भेड़ा-वक्करी लाहुला कढी कुती हे।
हे डरे मत डरे मत बो भूंकूआ, जूता छडली ला धाटी हे।

लोक गीत

भला मीआं मंग लोटुआ हो
चौह दिना दा जीणा तेरी सौहं
दुःखी असी रहिणा हो
भला मेरी गद्देटड़ीए
दुखे नी कट्टणी जिंदड़ी तेरी-तेरी सौंह
सुक्खे असीं रहिणा हो
भला मीआं मंगलोटुआ हो
सिरा ना चकदा चड़ोलू तेरी सौंह्,
दूर-दूर पाणी हो।
भला मेरी गद्देटड़िए
सिरे नी चकिआ घडोलू, तेरी सौंह
गावा-गावा पाणी हो।
भला मीआं मंगलोटुआ हो
गावां दी बाटा औखीआं तेरी सौह
हौले-हौले चलणा हो।

लोकगीत

रुपणू-पुहाल घरे ईला हो।
कालका जो छतर चढ़ाली हो।
रुपणू-पुहाल घरे ईला हो।
सिव जी जो देली नवाली हो।
रेसो ते बदामी सकी भैणां हो।
जित-मन कुस कने लाणा हो।
जली गया रेसो ए चेता हो।

दिल मेरा जली-जली जांदा हो
सब तां पुहाल घरे ईला हो
रुपणू दा आया सुख सांदा हो
तेरी मेरी ढिकलु दी जोड़ी हो
कुनी जिदें बैरिए बछोड़ी हो।...।

लोक वाद्य यंत्र

1. बांसुरी
2. ढोल
3. ढोलक
4. नरसिंगा
5. कैंसी
6. चिमटा
7. घंटी



एकादश अध्याय

किश्तवाड़ी लोक संगीत

किश्तवाड़ में संगीत की परम्परा बहुत ही प्राचीन है। किश्तवाड़ के इतिहास में उल्लेख मिलता है कि दसवीं शताब्दी के लगभग किश्तवाड़ के राजा नरेन्द्रपाल के समय में श्री वाक् नामक एक विद्वान ने 'संगीत-संग्रह' शीर्षक से एक पुस्तक लिखी थी। इस के बाद भी पालवंशीय राजाओं ने संगीत कला को संरक्षण दिया। उन के दरबार में भाट प्रजाति के लोग गीत, नृत्य और संगीत की प्रस्तुतियां पेश करते थे। वे नगर और गांव के लोगों का भी मनोरंजन करते थे। इन के अतिरिक्त संगीत शास्त्री, लोक गायक भी संगीत कला में दक्ष थे और वे अपनी कला से नगर वासियों को अनुरंजित करते थे।

किन्तु मुगल काल में औरंगजेब ने जब किश्तवाड़ के राजा का धर्म परिवर्तन किया और उसे मुस्लिम परम्पराओं का पालन करने का आदेश दिया तो किश्तवाड़ की संगीत कला को बड़ा धक्का लगा। एक प्रकार से उसे दफन ही कर दिया गया।

किश्तवाड़ के संगीतकार, भाट तथा संगीत प्रेमी धीरे-धीरे किश्तवाड़ से पलायन करने लगे और कुछेक दशकों में ही किश्तवाड़ संगीतकारों से बंचित हो गया।

सन् 1821 में राजा तेग मुहम्मद के बाद डोगरा शासन किश्तवाड़ में स्थापित हुआ तो संगीत कला को पुनः पुर्नजीवन मिला। विवाह शादियों, पर्व त्योहारों पर ढोल की थाप के साथ-साथ लोक गीतों की धुनें भी सुनाई देने लगी जिस से किश्तवाड़ के वातावरण में भी मधुरता और सरसता का आभास होने लगा।

लोक गीत

किशतवाड़ी संगीत को जीवित रखने में लोकगीतों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ये गीत किसी न किसी रूप में समाज में प्रचलित रहे और आज भी ये किशतवाड़ी समाज और संस्कृति का एक अंग है।

किशतवाड़ी लोक गीतों को हम निम्न वर्गों में विभाजित कर सकते हैं :-

1. फागिञ-गीत

ये ऋतु सम्बन्धी गीत हैं। फाल्गुन मास में किशतवाड़ में प्रति वर्ष माघ पूर्णिमा को फागिञ का त्योहार बड़े उत्साह से मनाया जाता है। इस अवसर पर सामूहिक रूप से अग्नि की पूजा की जाती है और निम्न गीत गाया जाता है :-

फागिञ सस्सा होड़िस्सा
चित्रिञ सस्सा होड़िस्सा
यते वो गसय जूने
घड्ड भरि आनय उने
पैठः प्योव अबरा ना।
अमुकस ज़ाव घबुराना।

मान्जि गीत

सामूहिक कृषि कर्म करते समय जो गीत गाये जाते हैं। उन्हें किशतवाड़ी में मान्जि गीत कहते हैं। उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

युव रलि मोलि त करो असि कार
अय सोन्धि थू रेवन पा नवाज़ि प्यार।

(आओ हम सब मिलकर काम करें। इस से प्यार और भाई चारा बढ़ता है।)

गंगा वाञि

गंगा वाञि विवाह संस्कार पर बारातियों पर व्यंग्य कसने के लिए गाए जाते हैं। डोगरी में इन्हें सिठनियाँ कहते हैं। इन गीतों में महिलाएँ बारातियों को गालियां निकालती हैं और बाराती उन्हें धनराशि दे कर चुप करवाते हैं।

उदाहरण :-

आनुवाय कोढ़े व गंगा वाञि
महाराजस त महारेञे अमृत वाञि
वेयन यञल्येन जय-जय वाञि
महाराज सिञि भेहन पठ म्हाराजस लाञि...।

दिद्गोलि

किश्तवाड़ में विवाह के समापन पर परिवार की महिलाएँ सिर पर मटके या घाघर रख कर उन में जब जल भरने दूसरे स्थान पर जाती हैं, तो वे दिद्गोलि गीत गाती हैं। यथा :-

यज़मान बाइये डटिल डब्बे
त असि वाती पञे सबे पान
फवलवुन नेरिनोय डटिल डब्बे।

दुल्हा गीत

यह गीत महिलाएं विवाह मण्डप में सामूहिक रूप से दुल्हा की शोभा की प्रशंसा में गाती हैं :-

युवय युखव लागन त सुवय सुवय शुभन।
दिल भूय लुभन त वेयः गसेम।

दुल्हन गीत

सप्त पदी के पश्चात् महिलाएँ निम्न गीत दुल्हन की प्रंशसा में गाती है :-

म्हालि त म्हालु पूजः करन त
ब्रह्म त ईजे नींदरे
चाचेः चाची पूजः करन त
ब्रह्म ता ईजे नीन्दरे।

संगीतमय लोक गीत

आस्तान गच्छियो सलामें ते खिड्डियों हाले
चौगान मदनु मिंया न मदनु कुंगे पोये थे अस
नस मंडलस छुवान ते पाडर थे
नीलम कान मदन्ते
मियां न मदनो
जे ते रेठ रल्ली मिली पाया नैनी ताली,
हासी हिन्दी ते बसाया मुसलमान
मदनु मिंयां न मदनो।
आस्तान गच्छियो सलामें ते खिड्डियो हाले चौगान
मदनु मिंया न मदनो।

भजन

किश्तवाड़ में भगवान कृष्ण तथा अन्य देवी-देवताओं के भजन भी उपलब्ध हैं। एक रूप द्रष्टव्य है :-

गवाश आव कृष्ण जी दर्शन हाव
गवाश आव शाम जी दर्शन हाव
चेड़े करन चिड़-चिड़, काव टाव-टाव

सन्दर्भ :-

1. *किश्तवाड़ दर्पण-केवल कृष्ण शर्मा*
2. *किश्तवाड़ : संस्कृति और परम्परा*
3. *किश्तवाड़ी भाषा साहित्य और संस्कृति- केवल कृष्ण शर्मा सहयोग राम सेवक शर्मा, मनीषा, संजय शर्मा, जगदीश राणा*

गवाश आव श्याम जी दर्शन हाव।
चाने सतः सोन्धि सूरज द्राव।
गवाश आव कृष्ण जी दर्श हाय।
कूं दराब दान्द लागने, कूं चावन गाय
गवाश आव श्याम जी दर्शन हाय॥

किश्तवाड़ी पर कश्मीरी लोक संगीत का प्रभाव–किश्तवाड़ी लोक संगीत में कश्मीर-प्रभाव भी देखा जा सकता है। कश्मीर की भाँति किश्तवाड़ी में भी निम्न विधाओं का प्रचलन है :

(1) चलंत

यह किश्तवाड़ी और कश्मीरी लोक संगीत का प्रमुख आकर्षण है। डा. वीना बुदकी के शब्दों में चलन्त की ही तरह से शेषरंग नाम का लोकगीत भी प्रचलित है। ये छकरी की तरह से गाया जाता है। चलंत को जीवित करने का श्रेय किश्तवाड़ के गुलाम नवी डोलवाल् को प्राप्त है। इस का एक उदाहरण द्रष्टव्य है :

गटि मंज गाथ अनुन गय, नटि-नटि सारुन पोन्यं
नेराश रुज़िथ, आश-पाश, नाश छारुन
स्वयं गयि सूह्म ह्मसू ची ज़ान
वैराग प्राति सत्य राग गछि लोलुन,
फलि-फलि सोवरुन हेलि अम्वार

–स्वामी नन्द लाल

अर्थ : अंधकार में से प्रकाश लाना है। घट-घट जल ढोकर लाना है। निराश रह कर आशा की नई किरणें खोजनी हैं। स्वयं सोहं अहमं सो का ज्ञान प्राप्त करना है। वैराग्य दरांती से राग की कांट-छांट करके दाने-दाने करके राशि एकत्रित करनी है। अर्थात् कर्म करके ही फल प्राप्त किया जा सकता है।

(2) लीला

इस संगीत प्रणाली के अन्तर्गत देवताओं की स्तुति, भजन-अर्चना आदि से संबंधित राग-रागनियों का गायन होता है, यथा :

आय सय शरण कर तम क्षमा, ओं श्री गणेशाये नमः
गणपत गणेश्वर हे प्रभो, कलिराज राजन हुंद बिभो।

(3) वन वुन

ये महिलाओं के गीत हैं जिनका गायन शुभ-अवसर पर किया जाता है यथा :

शोकलं करिय वन वुन हयोतमय
शोब फल दितुय भवाने

अर्थात् : हमने भगवान् का नाम लेकर यह शुभ कार्य प्रारम्भ किया है। माँ भवानी इसे संपन्न करवायेंगी।

(4) रोफ़

यह कश्मीर का सब से लोक प्रिय संगीत है। इस का आंशिक प्रभाव किश्तवाड़ में भी देखा जा सकता है। यह सामूहिक नृत्य है जो मुसलमान घरों में प्रायः विवाह के अवसर पर महिलाओं द्वारा नाचा जाता है। इस अवसर पर जो गीत गाए जाते हैं। उस एक उदाहरण द्रष्टव्य है :

कुकिली रौव त्राववमंज पोश वन नय
महाराज आय मेहरु नये ले,

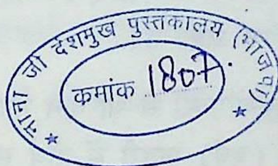
अर्थात् : हे कोयल सी दुल्हन तुम फूलों के बगीचे में नृत्य करो क्योंकि तुम्हारा दूल्हा तुम से ब्याह् रचाने आया है।

लोक वाद्य यंत्र

किश्तवाड़ी लोक संगीत में निम्न वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है :-

1. ढौंस (बड़ा ढोल)
2. बुछड़ (बाँसुरी)
3. घड़ा
4. नरसिंगी
5. शंख आदि





द्वादश अध्याय

पाडरी लोक संगीत

भाषा वैज्ञानिकों ने पाडरी की परिगणना भद्रवाही वर्ग की बोलियों के अन्तर्गत की है। भद्रवाही का सम्बन्ध पश्चिमी पहाड़ी बोलियों से है। अतः पाडरी भी पश्चिमी पहाड़ी बोलियों में एक है।

पाडरी में कुछ छोटी मात्रा वाले ह्रस्व स्वर हैं जिन्हें मात्रा स्वर कहा जा सकता है। इन का स्वर परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है। पाडरी के अ अन्त वाले तद्भव संज्ञा शब्द 'उ' और 'ओ' अन्त में भी उपलब्ध होते हैं यथा दिन-दीनु। इस बोली में शब्दान्त में आए स्वरों को छोड़ने की तीव्र प्रवृत्ति है।

पाडरी कई बातों में भद्रवाही का अनुसरण करती है। इन दोनों में ध्वन्यात्मक और शब्दात्मक समानताएँ हैं। भद्रवाही सम्बन्ध कारक का परसर्ग 'रू' पाडरी में 'र' रह जाता है।

इस बोली में ह्रस्व स्वरों से भी कम मात्रा वाले अ, इ, ए और ओ पाए जाते हैं, यथा बेरह (बर्ष) पाडरी में दीर्घ स्वर 'ऐ' नहीं है।

पाडरी लोक संगीत के क्षेत्र में लोक गीत, लोक वाद्य यंत्र और नृत्य गीत भद्रवाही से स्वतन्त्र हैं, अतः लोक संगीत की दृष्टि से पाडरी लोक संगीत की अपनी पहचान है।

लोक गीत

लोक परम्परा से पाडरी लोक गीतों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है और वे हैं :-

1. सुगली

2. घुरेई

सुगली

यह दो पंक्तियों का छन्द गीत है। इस में मन की पीड़ा, प्रियतम का विरह, मिलन की आशा, वेदना तथा निराशा की अभिव्यक्ति रहती है। पाडरी में सुगली लोकप्रिय गीत है। खेतों, खलियानों, उत्सवों, पर्वों, चरागाहों तथा पनघटों में ये गीत सुने जा सकते हैं, यथा :-

प्रेम

लड़ह् ढली हार ढललोरा काशी
त्यों हना बिजोगा हंड पांगी नरशी

(घर की छत पर गिरी बर्फ को तो कश से साफ कर दिया है किन्तु तुम्हारे वियोग के कारण तुम्हारी प्रिया पांगी भाग गई है।)

सन्देश

उडर कावा उडर टले इयां जेम्मे शारेरो बन्नो
हत्थे घिन्नोरू काकले, दइयां काकले कन्नो,

(हे काग उड़ो जम्मू शहर में मेरे प्रियतन को सन्देश दो कि मेरे हाथ में पत्र है उसे ध्यान से सुनो।)

घुरेई गीत

ये प्रायः नृत्य गीत हैं जो आनन्दोत्सव पर गाये जाते हैं। महिलाएँ ये गीत गाते समय नाचती हैं। युवकों में भी नाचने का प्रचलन है। एक उदाहरण प्रस्तुत है :-

खड़य भी ज़ालम सीआ ढपोरा हो।
पुगाअ की तुगी सीआ ढपोरा हो।
चौरी समागी ओ सीआ मामोरी ओ
खड़य भी ज़ालम सीआ मारोरी ओ।
खड़य भी हीरा सीआ ढपोरा ओ।

चौरी दाछी सी आ मारोरी ओ।
खड़य दाछी सी आ मरोरी ओ।
खड़य भी जालमा चौरी मारोरी ओ।

संस्कार गीत

पाडरी में संस्कारों से सम्बन्धित लोक गीत भी उपलब्ध हैं। विवाह एक मंगलमय संस्कार है। इस अवसर पर पाडर का लोक समाज हर्ष और उल्लास के साथ झूम उठता है। पाडर में विवाह की प्रथाएँ विशेष जटिल तो होती नहीं अतः नाच गा कर उत्सव मनाया जाता है।

बारात के विदा करते समय महिलाएँ जो गीत गाती हैं। उन में डोगरी के 'घोड़ियां' गीतों की झलक मिलती है, यथा :

नैकड़ी कन्या लाड़ा को पुघा लानां को आइ।
पुघा न लव़ाणा ब्राह्मड़ा लाड़ा अचल सजानां।
नैकड़ी कन्या लाड़ा को सेहरा लाणां को आइ।
सेहरा त लवाणा ब्राह्मड़ा, लाड़ा अवल सजाणा।

विदाई गीत (सुहाग)

लड़की को विदा करते समय उस की सहेलियाँ और परिवार की महिलाएँ जो विदाई गीत गाती हैं, उस का एक रूप इस प्रकार है :-

तुद साहोरे घरे जाना धिए
सस्सु अपणी दे पैइं पोणड़ा धिए
तुद साहोई घरे जाणा धिए
अपने सहोरे दे पैरां पौणा धिए।

सोहाड़ी गीत (कृषि गीत)

खेतों में काम करते समय कृषक सोहाड़ी गीत गाते हैं जिसके शब्द इस प्रकार हैं :-

सोहाड़ी लाई बो सो भला सोहिया।
तो भला सोहिया सो भला सोहिया।
तेरे चाबें अस्सेइं सोहाड़ी लाई हो।
सो भला सोहिया सो भला सोहिया।

श्रम गीत

लकड़ियों के शहतीर ढोते समय श्रम गीत गाने का भी प्रचलन है। यथा :-

एक	सब
भाई मेरे हो...	हे हो।
गेली भारी हो...	हे हो।
गेली चल्ली हो...	हे हो।
जोर तेरा हो...	हे हो।
जोर लाना हो...	हे हो।
आई पुज्जे हो...	हे हो आदि।

नृत्य गीत

विवाह, उत्सव, पर्व, मेला, आदि के अवसर पर नृत्य गीत प्रस्तुत करने का भी पाडर में प्रचलन है। यथा :

नया आया गोरनर साहबा ओ।
हत जौड़ी बुने अठत्याला हो।
हेड़ सरपंच प्रेम लाला हो।
कि हत जौड़ी बुने प्रेम लाला हो।
जनाबा हेण्ड रस्ता खराबा हो।
घड़ल घुड़ ओण्डी चनावा हो।

भोला जी तुसे गर मनजूरा हो।
हेण गल्त मण्डी जरूरा हो।
नया आया गोरनर साहबा हो।
बड़े-बड़े अफसर नाला हो।

(यह गीत गर्वनर जगमोहन के पाडर आने के उपलक्ष्य में गाया गया)

नृत्य गीत

मशहूर पाडर पराना ओ।
गुच्छी जीरा घने जंगलात
नीलम दी खाना ओ,
पाडर दी भूमी बड़ी न्यारी ओ
उच्ची धारा गौआ केह्ड़े गूठे
इशतारी ते गंधारी ओ।
पाडरा दी मिट्ठी-मिट्ठी बोल्ली ओ,
पाडरा दा मशहूर शैह्र अठोल्ली ओ।



सन्दर्भ :-

1. *देवभूमि पाडर : नौरत्न शटियाण*
2. *पाडर : लोक और संस्कृति-शिव निर्मोही*
3. *पांगी एण्ड पांगियाल : भारती*

त्रयोदश अध्याय

भद्रवाही लोक संगीत

लोक संगीत की दृष्टि से भद्रवाह डुग्गर प्रदेश का वह आँचल है जिस का कण-कण संगीतमय लगता है। यह क्षेत्र वैदिक, नाग, आर्य आदि संस्कृतियों का शताब्दियों पुराना एक सांस्कृतिक केन्द्र है।

भद्रवाही लोक संगीत लोक गीतों, लोक नृत्यों तथा लोक वाद्य यंत्रों पर आधारित है। हमें भद्रवाही बोली में लोक गीतों की निम्न विधाएँ मिलती हैं :-

एंजलि

भद्रवाह में भक्ति सम्बन्धी गीतों को 'एंजलि' कहा जाता है। एंजलि में देवी-देवताओं का स्तुति गान होता है। भद्रवाही में अधिकाँश एंजलियाँ भगवान शिव से सम्बन्धित हैं। पौराणिक और नाग देवताओं की एंजलियाँ भी उपलब्ध हैं।

एंजलि का एक रूप द्रष्टव्य है :-

तोए भोले-भोले तइयां जग रचया जी,
एते गाते अपनी नशानी, अपनी ठेरी पिशेनी जी।
घटे त बिश्शेलो अप्पू महादेवा मट्ठे बिश्शेलो कलाबी जी।
दया तेरी सरब साखी, टुलण्टे लगगेगी छपला माला जी।
चाकारो बन्दो शिव-शिव करेलो सोडारो बन्दो हत्थ दारे जी।
भंग भष्टरी बण्टने लागे, दुनिया उछलनी लाई जी।

टिप्पणी :-

बड़थल किश्तवाड़ के अन्तर्गत मड़वा-दच्चन क्षेत्र का एक प्रसिद्ध देवस्थान है। यह एक लम्बी गुफा है। गुफा के अन्त में एक बड़ा कक्ष है जिस की छत रंगीन है और उस में एक प्राचीन अभिलेख अंकित है।

हाड़े म्हीने शुदी दा मेल, शुदी तमाशे जो आए जी।
शुद्ध महादेव गुरु स्थान बो तेरा, बड़थल अन्दर बासे जी।

सोहाड़ी (कृषि गीत)

यह एक सामूहिक लोक गीत है। कृषक धान आरोपित करते समय, कृषि कर्म करते समय यह गीत गाते हैं, यथा :-

सब : सोहाड़ी सेहिएं रामां सोहाड़ी सेहिए ना (टेक)

एक : रामां केरे बेले जुआ : सोन्नडू हल्ल जुए नां।
रामां केरे बेले जुआ : रोपड़ी हल्ले नां।
रामा केरे बेले जुआ सीधी भार भुए नां।
रामा केरे बेले जुआं इतबे खार निम्ही नां।...

नास्हेड़ी

यह भी श्रम परिहरण सम्बन्धी लोक गीत है। ये गीत सामूहिक रूप से खेती सम्बन्धी कार्य करते समय और भारी बोझ उठाते समय गाये जाते हैं। एक रूप देखिए :-

से बोलो हो, हे ओए, हो होए।
शाबा मड़दाव होए, हे होए।
ओ तकड़े मुंडे ओए, हे होए।
खड़ी मुछां होए, हे होए।
तुस्सी गब्रेटे होए, हे होए।
छिन्नी भज्जी होए, हे होए।
ढोल बज्जे होए, हे होए।
भाइ मेरे होए, हे होए।
शावा मड़दाव होए, हे होए।
दो बग्गी होए। हे होए।

(आओ हम सब मिलकर खेतों की बुहाई करें। किस से करें। सोने की हल से करें, चाँदी की हल से करें। पहली बार हल चलाएँ कई बार हल चलाएं।...)

मर्दो तुम्हें शाबाश : तकड़े लड़को तुम्हें शाबाश। खड़ी मूछों बाले युवको जोर लगाओ। छिन्नी टूट गई है तो कोई बात नहीं, ढोल बज रहे हैं, मर्दो शाबाश।

घुरेई

ये नृत्य गीत हैं। प्रायः महिलाएँ और पुरुष मिलकर या अलग-अलग गोल दायरे में या खुले में ये नाच नाचते हैं। युवा और महिलाओं का यह प्रिय नृत्य गीत है। एक उदाहरण देखिए :-

मरी गेया ढुग्गरे दा राना ए।
राना तेरी रेइत् रेई निमानी ए।
सत रानी रेह गेइ निमानी ए।
हाथी खाने हाथी रे निमाने ओ
तबेले तेरे घोड़े रे निमाने हो।
माड़ी दाती मण्डी निं निमानी हो।

(ढुग्गर का राणा मर गया, उस की प्रजा अनाथ हो गई। चारों और उदासी छा गई। सातों रानियां विधवा हो गई। अतः उदासी है। हाथी खाने में हाथी देखें, वे भी अनाथ हो गए, सब उदास हैं। तवेले के घोड़े भी उदास हैं। राणा की मण्डी में भी उदासी है।)

सुकली

यह दो पंक्तियों का छन्द है। इन में मन की पीड़ा, आशा, निराशा, मिलन, प्रेम, विरह आदि की अभिव्यक्ति होती है, यथा :

1. ओठडु केरी हट्टी-दंतडु केरू बजारे
   छेतडु केरी तोल बट्टे, नैन खेड्डेले बपारे।

(प्रियतम के ओठों की दुकान पर दान्तों का बाज़ार सजा है। बालों के तोल-माप हो रहे हैं और नयनों का मोल-भाव हो रहा है।)

2. जा तर अम्मा त बाजी, कुइ पेउ केरी रानी
   अम्मां त बाजी न भोइल, कुइ खुए खोदलू पानी।

(जब तक माँ-बाप जीवित हैं, लड़की मायके में निर्मल पानी का सा आदर पाती है, जब माँ बाप नहीं रहते तो उसे कुएं के गन्दले पानी की भाँति निरादर मिलता है।)

पर्व गीत

पर्व त्योहारों से सम्बन्धित लोक गीत भी भद्रवाही में उपलब्ध हैं। 'वसन्त' से सम्बन्धित एक लोक गीत देखिए :-

हींदा ते गया घर आपने
ऋतु आई ए बसन्ती बहारे,
पहला ते फुल्ल फुल्लेया नाहे दा,
दूआ फुल्लुया न कोए।
निकल दांदुआ, टिकुआ, मनालुआ,
आया बाहने दा बेला।
आया चैतर महीना सुनदे धर्म कमाए
जुग्ग जुग जीवो लखे ब'रेह,
अस त बेरहे रे माँगते।

लोहड़ी

एक : घेरनी मठाव घेरनी

सब : घेरनी मठाव घेरनी
घेरनी अग्गर लाल खड़ामां : घेरनी
इस गली में आवा डावां : घेरनी

चम्पा फुल्ल प्रकारया : घेरनी
इल्लड़ मेहता धार दा : घेरनी
हल्लड़ मेहते घड़ी घड़्जी : घेरनी
निस्सी आइ फातम गंजी : घेरनी
फातम गंजी घड़े नकारे : घेरनी
निस्सी आए सत सुनारे : घेरनी
सत सुनार ओमां : घेरनी
निस्सी काली डोमां : घेरनी
काली डोमा धोती फग : घेरनी
निस्सी आए सुनार ठग : घेरनी
ठग सुनार मारया हथोड़ा : घेरनी
मल्लू असन काङ्ङू रा घोड़ा : घेरनी

नृत्य गीत (ढेकू नृत्य)

भद्रवाही में नृत्य गीत विवाहोत्सव, पर्व, त्योहारों पर आयोजित होते हैं। इस में प्रायः युवा और युवतियाँ सामूहिक रूप से भाग लेते हैं। एक उदाहरण देखिए :-

होरे त पुहाल सेब्भ एवरे हो।
रूप नेरी एवरी तस्वीरा ए।
धारी पुड़ लिशकोरा तारा हो।
आया मेरा रुपनु पुहाला ए।
धारी पुड़ डलाघे मारा घेरा ए।
आया मेरा रुपनू रा डेरा ए।
ठण्डे डुग्गे नाले तेरी भेड़ा हो।
गल्ला गप्पां कुस कने लानी ए।
भेड्डा तेरी चितरे त मारी हो।
इक संजा घरे चली एवना ए।...

(अन्य संभी गडरिए आ गए हैं किन्तु रुपनु ने केवल अपना चित्र भेजा है। पहाड़ियों पर तारा लिछका, मुझे लगा मेरा रुपनू आ गया है। पहाड़ियों पर बादल घिर आए हैं मेरे रुपनु का डेरा आया लगता है। ठंडी और गहरी घाटियों में तेरी भेड़े हैं, अब गप्प-छप्प किस के साथ हो तेरी भेड़ रंग-बिरंगी हैं। तू घर कब आएगा।)

संस्कार गीत

भद्रवाही में विवाह संस्कार से सम्बन्धित कई गीत उपलब्ध हैं। इन गीतों में सब से मार्मिक गीत लड़की की वदाई से सम्बन्धित हैं। एक गीत द्रष्टव्य हैं :-

आलिए तु कलिए सून्ने दी डलिए, देस बगाने की चलिए।
अम्मां जी मेरे अंब धरमें हारी, शरमेरी मारी अंब तां चलिए।
अलिए तु कलिए, सोन्ने दी डलिए, देस बगाने की चलिए।
बावे मेरे धरमें हारी, देस बगाने ता चलिए।
अलिए तू कलिए, रुप्पे दी डलिए, देस बागने की चलिए।
भाइए मेरे धरमे हारी, देस बगाने ता चलिए

(बेटी तू सोने की डालिया के समान है, तू दूसरे देश क्यों जा रही है। मेरे बाप ने मेरे भाई ने जो धर्म वचन दिए उन्हें निभाने में दूर जा रही हूँ।)

लोक वाद्य यंत्र

भद्रवाह में लोक वाद्य यंत्रों का प्रयोग लोक गीतों में तो कम किन्तु लोक नृत्यों में अधिक होता है। पुरुष जब ढेकू नृत्य में भाग लेते हैं तो वे एक घेरा सा बना लेते हैं। इस घेरे के मध्य में एक वाद्य यंत्रकार (डोह्ली) ढोल बजाता है।

भद्रवाह में नर्तक ढोंस (ढोल) नरसिंहा घंटी तथा बांसुरी इत्यादि के ताल पर एक ही हाव-भाव में नाचते हैं। और फिर धीरे-धीरे जब संगीत में तेजी आती है तो वे नाच भी तेजी से नाचते हैं। वे नाचते समय अपने मुँह से सी!

सी! सी! होई! होई! का शब्द भी निकालते हैं। वे इतने भावुक होकर नाचते हैं कि उन के हाव-भाव तथा अंगों का चलन लगभग एक जैसा हो जाता है। अन्त में नृत्य संगीत की धुन जब चरम पर पहुँचती है तब नृत्य और संगीत रुक जाता है।

आकाशवाणी केन्द्र भद्रवाह भद्रवाही लोक संगीत को सराहनीय सहयोग दे रहा है।



---

1. सन्दर्भ

11. साढ़ा साहित्य –1980

12. भद्रवाही लोक साहित्य–प्रियतम कृष्ण 'कौल'

13. पर्वतों के उस पार–प्रियतम कृष्ण 'कौल'

चतुर्दश अध्याय

सिराजी लोक संगीत

सिराजी सिराज क्षेत्र की बोली है। इस बोली पर पहाड़ी, डोगरी और लहंदा का प्रभाव है। सिराज 60-70 मील लम्बा और 15-20 मील चौड़ा क्षेत्र है जो मध्यवर्गी हिमालय की बाहरी शाखाओं से बनी तेज ढलवान पहाड़ियों से घिरा है। इस का अधिकांश भाग जिला डोडा के अंतर्गत और कुछ भाग जिला रामवन के अन्तर्गत है। इस पूरे क्षेत्र में 77 गाँव है।

सिराजी के लोक संगीत की अपनी विशेषताएँ हैं। इस संगीत में गेयता, वाद्य और नृत्य का अपना विशेष महत्व है। सिराजी में लोक गीतों का अपूर्व भंडार है। स्थानीय लोग पर्व और त्योहारों पर गाते नाचते और वाद्ययंत्रों के तालों पर थिरकते हैं। सिराजी में गीतों और लोक गीतों को लिपिबद्ध करने का प्रयास भी हुआ है। मास्टर हरिचन्द केसर ने जो लोकगीत संकलित किए हैं, उन में एक उदाहरण प्रस्तुत हैं :-

(1)

सितरा सकरुआ बुद्दनी प्रैमी हाल शुनाओ।
शुद्दे काकला लिखे, कोई जुवाब न आओ।
तेहले बी अछी जिन्दे इवी जिनी मोसम बहार।
भाँति-भाँति ते फुल्ल सगूछे फुल्लने।
बागा तुस आया सज्जना, रंग बिरंगे पैंछी लगूछे उड्डने।
सजने तूनि दिनी नीलो सूढ सियाऊ।
सितरा सकरुआ बुद्दनी प्रैमी हाल शुनाओ।
शोहदे तुसां ने अन्ने बाला, बू तो एक सितरो-सकरूं
तुसा वे देशो महानू सज्जना, मेनिया कांशाति तिया गोरू।

भई-की संगी मैनों तिनें पिजरे तो पैंछी बनाओ।
सितरा सकरुआ बुद्दनी प्रैमी हाल शुआ ओ...।

हरिचन्द केसर

(2)

हाय वे मेनिये बज़ारनी दे देसा हो,
घडी केमरी कटा परदेसा हो।

छा छा नाग मंदर पुरानो हो,
लोकों सारे मिली झुली रानो हो।
हाय वे मेनिये...

डक्की चढ़ी त अजनु छो सज़ाना हो,
लोक बड़े बहादर जवाना हो।
हाय वे मेनिये...

मुल्क छो अपनों प्यारों हो,
परमेश्र तो छो सहारा हो।
हाय वे मेनिये...

जातरा ते कुड छो होरा हो-लोक अजा छे दूरा दूरा हो।
याद अज़े ओखी रूपड़ी ठारा हो-मीठी धूप ठड़ी-ठड़ी बहारा हो।
हाय वे मेनिये बज़ारनी दे देसा हो।

(3)

धन-धन तूनी रूपड़ी चाल रूप सुहाना हो,
एतरी मस्तानी छी चाल डलाको केतरो मज़ेदार
रूप सुहाना हो,
परमेश्रे दीतों केतरो रूप, घडीया बिजली घडीया धुप्प
रूप सुहाना हो-धन धन तूनी रूपड़ी चाल

एगं छी कुदरती मेहरबानी जीनियाँ दी तोरी एनड़ी जबानी,
धन धन...

धुप्प ज्यादा हवा चले तुएं चलनो बल्ले-बल्ले,
खेरकी ना घानड़ो हो-धन धन...

परमेश्रे दितोरी रोटी खाली-मता थाली गाये जी डूली,
सम्भाली ता रानो हो-धन धन तूनी...

जवानी तो न करनों अभिमान-इंग छी चार ध्याड़ी
दी मेहमान-सम्भाली दा रानो
धन धन तूनी...

(4)

इंग बागवो बजारनी इक ब्लाक छो,
एलेती छी शोभा निराली।

ऐंग छी-एंग छी-एग छी बड़ी ठार प्यारी,
इत हिन्दू ओतरे पूज़ा करा छो-
मुस्लमान पढ़ा छो निमाज़ हो।
मुल्क मैनों बड़ो सीधों साधों
ज़ेलो तो नाम सराज़े हो,
हिन्दू मुस्लमान इकट्ठे रांछें,
सब करां छे ज़मीदारी।
एग छी...

इत हिन्दू ओतरे गीता पढ़ा छो-
मुस्लमान पढ़ा छो कुरान,
इत अपनों अपनों मज़हब छों-
इत एनड़ी एनड़ी ज़बान।

मस्जिद म मोलवीरा छों-
मंदरें म पुज़ारी-एंग छी-एंग-छी...

रोग सराज़ मैनी बड़ी गरीबी एंग कथ कैंसती
न धरा नी,
वक्त निकारो लगों जो लोक कैंछी न छु आ छु
मा पाई।

पढ़ोरे मट्ठे घर छे बिछेरों, छी जी बड़ी बेकारी।
एंग छी-एंग छी-एम दी बड़ी ठार पुरानी।

लोक वाद्य यंत्र

सिराज के लोक नाच 'ढेकू' में डोल, बाँसुरी तथा नरसिंही आदि का प्रयोग होता है। नृत्य मै गति बढ़ाने और चढ़ाने के लिए वाद्य यंत्रों की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण है।



पंचदश अध्याय

स्वर लिपि

डुग्गर के अधिकांश लोक गीत ताल और मात्राओं से मुक्त है। किन्तु फिर भी कुछ ऐसे लोक गीत भी हैं तो ताल बद्ध हैं। जो लोकगीत ताल बद्ध उपलब्ध हैं वे प्रायः ताल दादरा, कहरवा, रुपक, खेमटा, दीपचन्दी, चाँजर तथा राग मांड (तीन ताल, मध्य लय) में हैं।

उदाहरण

कुंजू चैंचलो

कपड़े धोआं कन्ने रोआं कुंजुआ
मुँहा बोल जबानी दा
छाती कन्ने छाती नेई मंलाया कुजुआ
मेरे टुट्टी जन्दे बीड़े ओ
बीड़े दा वसोस नीं कर चैंचलो
चम्बै मिलदे बथेरे ओ
अद्धी-अद्धी राती मत औनदा कुंजुआं
बैरी भरियां बन्दूकां ओ
अद्धी-अद्धी रात असैं औना चैंचलो
केह् करना ई लोकां ओ
ओ मेरिये जिन्दे केह करना ई लोकां ओ

ताल चाँचर

×			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
-स्थाई-													
सा	रे	–	रे	–	ग	–	ग	सा	–	सा	–	सा	–
क	प़	ऽ	ड़े	ऽ	धो	ऽ	आं	ऽ	ऽ	क	ऽ	न्नै	ऽ
रे	म	–	म	–	ध	–	प	–	–	ध	–	धप	–
रो	आं	ऽ	कुं	ऽ	जु	ऽ	आ	ऽ	ऽ	मुँ	ऽ	हा	ऽ
म	रे	–	म	–	–	मप	ध	–	–प	ध	म	प	
बो	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ज	बा	ऽ	ऽ	नी	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	–	–	–	ऽग	रे	–	–	म	ग	रे	सा
दा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
-अन्तरा-													
सां	ऽसां	–	सां	–	सां	–	नी	–	ऽरे	सां	सां	ध	–
छा	ती	ऽ	क	ऽ	न्नै	ऽ	छा	ऽ	ती	ने	ई	म	ऽ
म	–	ध	म	–	ध	–	प	–	–	ध	–	ध	प
ला	ऽ	यां	कुं	ऽ	जु	ऽ	आ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	रें	ऽ
म	रे	–	म	–	म	प	ध	–	–	प	ध	म	प
टु	ट्टी	ऽ	जं	ऽ	दे	ऽ	बी	ऽ	ऽ	ड़े	ऽ	ऽ	ऽ
म	–	–	–	–	–	ग	रे	–	–	म	ग	रे	सा
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

गन्धार स्वर का प्रयोग/राग दुर्गा का कुछ प्रकाशन

1. साभार – जम्मू प्रान्त का लोक साहित्य डॉ. भारत भूषण

गीत

पल भर बेई जाना बेई जाना ओ चन्दा
राती रेई जाना रेई जाना ओ

हरिपुर नूरपुर ठंडियां जो छावां
हेठ बड़ूटे दी छावां छावां
पल भर बेई जाना बेई जाना ओ जिन्दे

चिट्टे चिट्टे चावल ए दुद्ध मांजा
इयै कटोचें दा खाना खाना
पल भर बेई जाना बेई जाना ओ चन्दा

लट्टे दा पजामा ते रेशमी कुरता
इयै कटोचें दा लाना लाना
पल भर बेई जाना बेई जाना ओ चन्दा

मंडिया सकेता दे सोहने सोहने राजे
देखी करीं दिल ललचाना कैन्ता
पल भर बेई जाना बेई जाना ओ चन्दा

ढक्किया जो चढ़दिया त्रै बल पौन्दे
गोदिया बालक न्याना न्याना
पल भर बेई जाना बेई जाना ओ चन्दा

ताल चाँचर

×			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
-स्थाई-													
										प	प	म	म
										प	ल	भ	र

ग	ग	–	सा	–	रे	–	ध़	ध़	–	सा	–	रे	–
बे	ई	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ	बे	ई	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ
म	–	–	–	–	प	–	म	रे	–	प	–	म	–
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	चं	ऽ	दा	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ती	ऽ
ग	ग	–	सा	–	रे	–	ध़	ध़	–	सा	–	रे	–
रे	ई	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ	रे	ई	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
-अन्तरा-													
सा	–	ध़	सा	–	सा	–	रे	–	म	प	–	ध	–
ह	ऽ	री	पु	ऽ	र	ऽ	नू	ऽ	र	पु	ऽ	र	ऽ
प	–	प	ध	–	–	ऽपु	म	–	–	रे	–	–	–
ठं	ऽ	डि	यां	ऽ	ऽ	जो	छां	ऽ	ऽ	वां	ऽ	ऽ	ऽ
रे	–	–	प	–	–	ऽप	ध	म	ऽ	प	ऽ	ध	ऽ
हे	ऽ	ऽ		ठ	ऽ	ऽ	ब	डू	ऽ	ऽ	टे	ऽ	दी
ऽ													
ध	–	–	प	–	म	–	रे	–	–प	प	म	म	
छां	ऽ	ऽ	वां	ऽ	छां	ऽ	वां	ऽ	ऽ	प	ल	भ	र
ग	ग	–	सा	–	रे	–	ध़	ध़	–	सा	–	रे	–
बे	ई	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ	बे	ई	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ
म	–	–	–	–	–	ऽग	रे	–	–	–	–	–	–
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ			

गन्धार स्वर को छोड़कर दुर्गा राग की छाया का प्रकाशन

साभार – जम्मू प्रान्त का लोक साहित्य –डॉ. भारत भूषण

गीत (मैलियां अक्खियां)

नेई कर गोरिये मैलियां अक्खियां
कल परदेसियैं टुरी वो जाना
जिन्दे टुरी बो जाना

शाहूकार करदे शहूकारियां
आशकी मानुयै मंगी वो खाना
जिन्दे मंगी वो खाना

खाई लैना लाई लैना हस्सी ऐ बोलना
इक्क बारी गले कन्नै लाई वो लैना
जिन्दे लाई वो लैना।

तार चाँचर

×			2				0			3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
-स्थाई-													
सा	धृ	–	सा	–	सा	–	रे	–	–	सा	–	सा	–
न	ई	ऽ	क	ऽ	र	ऽ	गो	ऽ	ऽ	रि	ऽ	ए	ऽ
रे	–	–	म	–	प	–	प	–	–	ध	–	–	–
मै	ऽ	ऽ	लि	ऽ	यां	अ	क्खी	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	ऽ
प	प	–	प	–	ध	प	म	रे	–	म	–	प	ध
क	ल	ऽ	प	ऽ	र	ऽ	दे	ऽ	ऽ	सि	ऽ	ऐं	ऽ
प	प	–	ध	–	प	म	रे	–	–	म	–	ध	–
टु	री	ऽ	वो	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	जिं	ऽ	दे	ऽ
प	प	–	ध	–	म	–	म	–	–	ग	–	रे	–
टु	री	ऽ	वो	ऽ	जा	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

-अन्तरा-

सां सां –	सां – – ऽसां	नी रें –	सां – – –
श हू ऽ	का ऽ ऽ र	क र ऽ	दे ऽ ऽ ऽ
ध ध –	प – – म	प – –	ध – – –
श हू ऽ	का ऽ ऽ रि	यां ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – –	प – प –	ध म –	प – ध –
आ ऽ ऽ	श ऽ की ऽ	मा ऽ ऽ	नु ऽ यैं ऽ
प – ऽप	ध – म –	रे – –	म – ध –
मं ऽ गी	वो ऽ खा ऽ	ना ऽ ऽ	जिं ऽ दे ऽ
प – ऽप	ध – म –	म – –	ग – रे –
मं ऽ गी	वो ऽ खा ऽ	ना ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

निषाद स्वर को छोड़कर राग दुर्गा की छाया।

डोगरी लोक गीत

आई जायां आई जायां आई जायां ओ
मिट्ठे मिट्ठे गीतड़ू सुनाई जायां ओ
इस्सै सामनै सुरबंधन च स्थाई इस चाल्ली ऐ।

(ताल कहरवा)

सा	धा	सा	सा	र	म	रे	सा	रे	म	म	ध
आ	ई	जा	यां	अ	ई	जा	यां	आ	ई	जा	यां
प	–	–	ध	प	ध	प	म	रे	म	प	
ओ	ऽ	ऽ	ऽ	मि	ट्ठे	मि	ट्ठे	गी	त	डू	सु
द्य	–	प	प	म	–	–	–				

साभार – जम्मू प्रान्त का लोक संगीत – डॉ. भारत भूषण

ना ई जा यां ओ ऽ ऽ ऽ

तेरे मिट्ठे गीतड़ूएं मोही लेआ ओ।
मेरा तन मन तेरा होई गेआ ओ।

अन्तरा–

ध	ध	ध	ध	प	ध	ध	ध	प	ध	म	ध
ते	रे	मि	ट्ठे	गी	त	डु	यैं	मो	ही	ले	या
प	–	–	ध								
ओ	ऽ	ऽ	ऽ								
प	ध	प	म	रे	रे	म	प	सं	ध	प	प
मे	रा	त	न	म	न	ते	रा	हो	ई	गे	या
म	–	–	–								
ओ	ऽ	ऽ	ऽ								
सा	ध	सा	सा	रे	रे	सा	सा	रे	म	म	ध
आ	ई	जा	यां	म	न	स	म	झा	ई	जा	यां
प	–	–	–								
ओ	ऽ	ऽ	ऽ								

एक और गीत ताल चंचल में देखिए–
ओ मेरे कैंता गल्ल सुन छन्दा।
किल्लिया गी छोड़ी मिकी दूर मत जंदा॥

स्थाई–

सा	–	–	म	–	म	–	मं	–	–	रे	–	सा	–
ओ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	रे	ऽ	कैं	ऽ	ऽ	ता	ऽ	ऽ	ऽ
सा	सा	–	म	–	म	–	म	–	–	र	–	सा	–

ग ल ऽ सु ऽ न ऽ छं ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ

ध ध – ध – ध – ध – ध ध – ध –

कि लि ल या ऽ गी ऽ छो ऽ ड़ी मि ऽ की ऽ

म – म ध – प – म – – रे – – –

दू ऽ र म ऽ त ऽ जं ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ

दूर जागे तुन्दा कैसे मन भरमाई लैना।
जादू कुसै पाई लैना, अपना बनाई लैना।
असें सुक्का रोना जेलै लगना ऐ मन्दा॥

अन्तरा :-

ध – ध – ध – ध – प प – ध – ध –

दू ऽ र जा ऽ गै ऽ तुं दा ऽ कु ऽ सै ऽ

म म – म– म – प म – रे – रे –

म नऽ भ ऽ र ऽ मा ई ऽ लै ऽ ना ऽ

ध ध – ध – ध – प प – ध – ध –

जा दू ऽ कु ऽ सै ऽ पा ई ऽ लै ऽ ना ऽ

प प – म – रे – म म – म – म –

अ प ऽ ना ऽ ब ऽ ना ई ऽ लै ऽ ना ऽ

ध सां – सां – रें – नि – नि ध – प –

अ सैं ऽ सु क् का ऽ रो ऽ ना जे ऽ लै ऽ

म रे – म – पध – म – – म – – –

ल ग ऽ ना ऽ ऐं ऽ मं ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ

सन्दर्भ
साढ़ा साहित्य 2014 में प्रकाशित सुनीता भड़वाल का लेख–भाख गायक प्रद्युमन सिंह जिन्द्राहिया व्यक्तित्व ते कृतित्व।

राग माँड (तीन ताल, मध्य लय)

स्थायी – ठाकुर तुम शरणाई आयो
उतर गयो मेरे मन का संशय
जब तेरा दरशन पाओ

अंतरा – अनबोलत मेरी व्यथा जानी के
अपना नाम जपायो

स्थायी–

म	–	ग	म	प	ध	ध	नि	सं	सं	नि	सं	रेंसुं	निध		
ठा	ऽ	कु	र	तु	म	श	र	णा	ऽ	ई	ऽ	आऽ	ऽऽ		
×				2				0				3			
सं	सं	सं	सं	सरें	निसं	ध	प	नि	ध	प	म	ग	पम		
उ	त	र	ग	योऽ	ऽऽ	मे	रे	म	न	का	ऽ	सं	ऽऽ		
×				2				0				3			
स	रे	ग	म	प	प	ध	ध	सं	–	पध	सरें	गं	रेंसं	नि	ध
ज	ब	ते	रो	द	र	श	न	पा	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	यो	ऽऽ	ऽ	ऽ
×				2				0				3			

अन्तरा–

प	प	ध	–	सं	सं	सं	सं	सं	रें	–	सरें	गमं	गरें	सं	ऽ
अ	न	बो	ऽ	ल	त	मे	री	नव्य	था	ऽ	जाऽ	ऽऽ	नीऽ	के	ऽ
×				2				0				3			
नि	रेंस	निध	प	ग	म	प	ध	नि	रेंसं	निध	प	सरें	गरें	सांने	
अ	पऽ	ना	ऽ	ना	ऽ	म	ज	पा	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	योऽ	ऽऽ	ऽऽ	

सन्दर्भ :
सोमसी संयुक्त अंक 111165–66
लेख–हिमाचल प्रदेश व जम्मू के लोकसंगीत में राग–आसा–मांड – डॉ. मनोरमा शर्मा

ooo

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डुग्गर का लोक साहित्य : शिव निर्मोही
2. डुग्गर की लोक गाथाएं : शिव निर्मोही
3. डुग्गर के लोक गीत : शिव निर्मोही
4. पाडर : लोक और संस्कृति : शिव निर्मोही
5. पंचैरी : समाज और संस्कृति : शिव निर्मोही
6. किश्तवाड़ : संस्कृति और परम्परा : शिव निर्मोही
7. डुग्गर की संस्कृति : शिव निर्मोही
8. जम्मू प्रान्त का लोक संगीत : भारत भूषण
9. डोगरी लोक साहित्य में भाख तथा श्रम गीत-लेख (हमारा साहित्य 2003) : देशबन्धु डोगरा नूतन
10. डुग्गर के नृत्यगीत गीतड़ू एक सर्वेक्षण : लेख (हमारा साहित्य : 2003) : प्रकाश प्रेमी
11. लोक परम्परा का अद्भुत स्वरूप है 'ढोलरु' (लेख) (हमारा साहित्य : 2003) : सौरभ
12. हमारा-साहित्य 2008-09 (लेख) : कपिल अनिरुद्ध
13. डुग्गर का लोक-संगीत लेख (डुग्गर दा सांस्कृतिक इतिहास) : सुरेन्द्र पाल गंडलगाल

14. डुग्गर प्रदेश दे लोक वाद्य यंत्र लेख (शीराजा डोगरी) : ब्रह्म स्वरूप सच्चर

15. डुग्गर दे तारें आले वाद्य यंत्र लेख (शीराजा डोगरी अंक 112) : ब्रह्म स्वरूप सच्चर

16. डुग्गर दे लोक ताल लेख (शीराजा डोगरी अंक 139) : टी.आर. मगोत्रा सागर

17. हिमाचल प्रदेश व जम्मू के लोक संगीत में राग आसा-माँड (सोमसी अंक 165) : डॉ. अनुपमा शर्मा

18. गुर्जरों का रिवायती संगीत लेख (हमारा-साहित्य 2015) : डॉ. जावेद 'राही'

19. किश्तवाड़ दर्पण : केवल कृष्ण शर्मा

20. किश्तवाड़ी भाषा साहित्य और संस्कृति : केवल कृष्ण शर्मा

21. देवभूमि पाडर : नौरत्न शटियाण

22. पांगी एण्ड पाडर : भारती

23. भद्रवाही लोक साहित्य : डॉ. प्रियतम कृष्ण कौल

24. पर्वतों के उस पार : डॉ. प्रियतम कृष्ण कौल

25. सिराजी लोक गीत : मास्टर हरिचन्द केसर

26. अनसुने नगमें (सिराजी-गीत) : जयपाल सिंह कटोच

27. हिमाचल प्रदेश : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन : डॉ. पद्म चन्द्र कश्यप

28. हिमाचल के गद्दी : शशि

29. पुंछ : खुश देव मैनी

30. हिमाचली लोक साहित्य : अमरसिंह रणपतिया

31. डुग्गर की विशिष्ट गायन शैली–भाख : साढ़ा साहित्य–1985 : नीलाम्बर देव शर्मा

32. जम्मू की लोकसंगीत माधुरी साढ़ा साहित्य–1987 : सुरेन्द्र गंढलगाल

33. डुग्गर के लोकवाद्य ब्रह्मस्वरूप सच्चर : साढ़ा साहित्य 1987

34. डुग्गर के लोक नृत्य विश्वानाथ खजूरिया : साढ़ा साहित्य 1987

35. डुग्गर के लोकगीत डा. वीणा गुप्ता : साढ़ा साहित्य 1987

36. जम्मू का लोक नाट्य आशा अरोड़ा : साढ़ा साहित्य 1987

37. डुग्गर के लोकमंत्र : खजूर सिंह ठाकुर

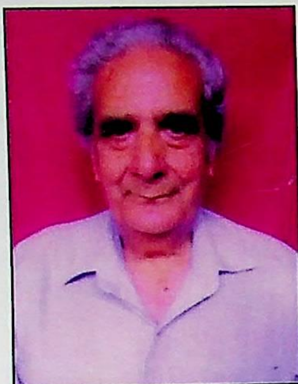
38. भाख गायक प्रद्युमन सिंह जिन्द्राहिया व्यक्तित्व ते कृतित्व : साढ़ा साहित्य 2012

39. डोगरी भाख : इक अवलोकन सुनीता भड़वाल : साढ़ा साहित्य 2012

40. डोगरी बारां : इक झांक रणधीर सिंह रायपुरिया : साढ़ा साहित्य 2012

41. डोगरी कारक : इक झांक डॉ. ज्ञान सिंह : साढ़ा साहित्य 2012

लेखक परिचय



पूरा नाम : शिवदत्त उपाध्याय
लेखकीय नाम : शिव निर्मोही
जन्म स्थान : पैंथल (कटड़ा वैष्णो देवी, रियासी जनपद)
जन्म तिथि : 19.04.1937
व्यवसाय : अध्यापन

प्रकाशित पुस्तकें

1. डुग्गर की लोक गाथाएँ (पुरस्कृत)
2. डोगरा गाँव-पैंथल
3. डुग्गर का लोक साहित्य (पुरस्कृत)
4. डुग्गर के देव स्थान
5. डुग्गर की संस्कृति (पुरस्कृत)
6. डुग्गर का भाषायी परिचय
7. डुग्गर के अमर सेनानी
8. डुग्गर के लोक देवता
9. डुग्गर की दन्त कथाएँ
10. डुग्गर का इतिहास
11. दाता रणपत की अमर कथा
12. पाडर : लोक और संस्कृति (पुरस्कृत)
13. डुग्गर के दुर्ग
14. डुग्गर के गुफा मंदिर
15. डुग्गर के लोकगीत
16. डुग्गर के मंदिर
17. डुग्गर की ऐतिहासिक नारियाँ
18. डुग्गर के दरवेश
19. डुग्गर में बुद्धमत
20. डुग्गर के निम्बार्क संत
21. डुग्गर के नगर
22. डुग्गर की नदियाँ
23. जीवन चक्र (आत्मकथा)
24. डुग्गर के पाधे
25. स्वामी नित्यानंद
26. किश्तवाड़ : संस्कृति और परम्परा (पुरस्कृत)
27. यातराचक्र (डोगरी)
28. पंचैरी : समाज और संस्कृति
29. डुग्गर के राज महल
30. डुग्गर के शहीदी स्मारक
31. डुग्गर की ऐतिहासिक समाधियाँ
32. डुग्गर के सर
33. डुग्गर के तालाब
34. डुग्गर की बावलियाँ
35. डुग्गर की जातियाँ : एक अध्ययन
36. डुग्गर की परा-विद्या
37. कश्मीर की कहानी (पुरस्कृत)
38. आलोचना सिद्धान्त (सह लेखक)
39. डुग्गर के संत
40. डुग्गर के संगीत साधक
41. डुग्गर का लोक संगीत

ISBN 978-93-92612-68-8





Highbrow Publications
78/11, Bari Brahamana, Jammu